"ਉਨੁੱਠ ਭੂਪੰਠ
ਮਨੂਲਣਚ ਅਲਾਫ਼ਿਚ ਧ ਮੋਲਾ
ਤਾ ਪਰਿਵੱਚ ਨੀਰਤ"

ਲੇਖਕ
ਊਨੁੱਠ ਮਿਲਾਨ ਬਹਿਣੀਕਲਾ ਮੰਗਾਣ ਅਜੀਮਾ
ਬਹਿਵੰਧੁ ਭਾਗੀਦਾਰ ਮਾਰਤੀ

ਪੁੱਤਰ
ਊਨੁੱਠ ਸਲਵੇ ਭਿਸਾਨੇ
ਮੰਗਾਣ ਅਜੀਮਾ ਅਜੀਮਾ ਵਿਦਿਆਂ
Hazrat Muhammad
Da Pavitra Jeevan

Author : Hadhrat Mirza Basheeruddin Mahmood Ahmad
Khalifatul Masih-II

Translator : Giani Shamshad Ahmad Eden B.A., B.Ed.

1st Edition : March 2013

Copies : 5000

Published by : Nazarat Nashro Ishaat, Sadr Anjuman Ahmadiyya
Qadian- 143516, Punjab, INDIA.
Ph.: 01872-222870, Fax: 220749

Printed at : Fazle Umar Printing Press, Qadian

1. भूमिका वन्यजीव माल्यपत्र अथवा बालंभ दे पूजा उपहार मध्ये वंद धावकी ................................................................. 4
2. दस्तावेज अथवा सूचनाची .................................................................................. 5
3. दारां .................................................................................................................. 6
4. अवकाश दिल देव उपहार अथवा मुख्यपत्र .................................................................... 7
5. उपचार भूमिका माल्यपत्र अथवा बालंभ दे मालंभ .................................................. 9
6. “विलक्षण पुष्प” संस्करण लिंग देवा ठेटा .................................................... 10
7. उपचार अवसर(३) रचना अवसर भूमिका माल्यपत्र अथवा बालंभ दे विषय .................................................................................. 12
8. गृहस्थान दिल अथवा पैट्रियोल देव लद व्यवस्था ................................................ 13
9. जापक दिनां दिन भंदा दी भंदा भंदा व्यवस्था ...................................................... 15
10. परिपक्व तुम्हारी दृष्टि (पीढ़ीची) ............................................................................. 15
11. उपचार अवसर दसक्षण अथवा भूमिका दे अवसर भूमिका माल्यपत्र अथवा बालंभ दे विषय दिवसेचे दिवस दिवस दिवसता ................................................................................. 17
12. मेंढ दे ढूंढती मिळती समाधा ............................................................................ 18
13. मंदे मेंढ दे मंद देव व्यवस्था ......................................................................... 19
14. भूस्वास्थ ज्ञानपत्र दिवसेचे भवे मेंढ दे दिवस्स्वास्थ दे अनुष्ठापन ........................................ 20
15. अवसर भूस्वास्थ दिवसेचे मृदू ज्ञान ...................................................................... 24
16. उपचार भूस्वास्थ माल्यपत्र अथवा बालंभ दे अवसर अवसर अवसर अवसर अवसर .................................................. 26
17. दिमाख दे मंदिर ................................................................................................. 28
18. मंदे मेंढ दे मंदेची मंदेची वेळा मिललेल्या अथवा अवसर भूमिका माल्यपत्र अथवा बालंभ दे विषय दिवस दिवस बिचर्जा .................................................................................. 30
19. उपचार देव दिवस ............................................................................................... 32
20. उपचार दिल (३) दे दिमाख वेळा देव उपहार ..................................................................... 35 (५)
21. भृगुभानं ठहर ठहरीबाट ..............................39

22. उषयद्व अग्रिंद्व भुजु जविशे देनरवृक्षम भुजावे खुलाय दिच
   तुम्हारं भुजु उषयद्व भृगुभानं महत्त्व प्राप्ति अत्यन्ति बमसंभ की उदिभि
   वठा जाउँ ..........................................................40

23. भयश्री हे इद्वे क दिमसभ चन्द्र नवल ..........................47

24. दिमसभ ................................. ........................................ 50

25. हैसीं दे विषंटिह रेडी डी डिकंधबाटी ...............................51

26. भें हे भयश्री हे दिमसभ .................................................58

27. उषयद्व दिच्च वठा अते छिग राखे उषयद्व भृगुभानं महत्त्व प्राप्ति अत्यन्ति
   बमसंभ की उदिभि बाटी .............................................61

28. उषयद्व महत्त्वमे अत्यन्ति बमसंभ दे भयश्री हे दिच्च आयामत .................................64

29. उषयद्व अते अभ्युत अलमन्त्र(५) हे भव ठगिबला ........................................67

30. उषयद्व महत्त्वमे अत्यन्ति बमसंभ दे अपनं उषयद्व भृगुभानं(६) की
   बाटी ............................... ........................................ 68

31. भें हे अहं तिवत्व तु धुरापटद भृगपति रघुबी तीनं सेमेंटी .....69

32. भयश्री हे भृगपति रघुवीहिमा सा दिमसभ दिच्च उषयद्व रेडी ..........69

33. भें हे वाप्तिहं जी भृगपति तु भृगु जुवाय धुर रेडी तीनं दिच्चुद्व..................71

34. अलमन्त्र अते भृगुभानं दिच्च डालीबाट ........................................72

35. भृगुभानं, भृगुभानं अते भृगुभानं दिमसभइ महत्त्वमे ..........................73

36. भें हे वाप्तिहं तुंधे रेडी विभिन्न महत्त्वमे तु भृगु ................................................................76

37. उषयद्व महत्त्वमे अत्यन्ति बमसंभ देहं धुरापटद दे दिच्चुद्व .....................77

38. भयश्री हे दिच्च दिमसभभी जुवाय तीनं .................................78

39. देहं दे द्वारी संचा सा आयामत अते उषयद्व तीनं .............................80

40. दिच्च भृगु जुवायबाटी सा धुर रेडी .............................................87

41. वठा दे केली ..........................................................89

42. दिच्च तीनं  ...................................................................91

(ि)
43. सिंध छ लाग डिंग खड़कला .................................................. 94
44. छिपए की संज दे लपानी अदः मदद दक्षिणा प अन्य ढिपए
 फिल्म चेंट ................................................................. 101
45. महाराजी पीट की भाविका का तुम्ह अदः छिप छ पूर्व प ......... 105
46. छिपए की संज भाव तेषु किरण वनीमला दीर्घा महामारम ................................. 107
47. तुराकार वलीब दे मेन्ड उड़ाता की दिसलशा ................................. 111
48. दछ भूम्बल राज संज ..................................................... 113
49. मदद दिपंपल मथं भाव हू कन्खिवी तंत्रे धंधव ........................................ 116
50. धंधव की संज मभं दिमन्दधम में ह भामाल दिबटी की मी ? ...... 120
51. दछ लूवेस्स की दंक्न्यी ..................................................... 123
52. भूमिबल भदे मेंराज की भावावर हार बदलत ................................. 128
53. दिमन्दधम डिंग भूम्बल मथ छ मेंमार ................................. 130
54. दिपानट दफीस्न दे मेन्डभाल दिपंपल उभटे ......................... 131
55. दछ लूवेस्स की भुवालं राज वस के उभटे की दिमन्दधम मथं
 डिंग भूम्बल............................................................ 133
56. दछ लूवेस्स छ छिपए की दंक्न्यी की ममा .................................. 137
57. दछ लूवेस्स के अन्यते दिपानट दींदे संज मभाल(1) छ दीमन्दधम उट्टर
 भूमिबल मी ......................................................... 139
58. भूमिबल के बालं (दक्षिणी चेंट) छ अर्ध .................................................................. 143
59. जतुभालं भदे दीर्घातीया की संज वचे मिझिम महामार . ....... 147
60. संज वचे दिमन्दधम की मिझिम ............................................................... 149
61. अर्ध की संज भाव तेषु किरण दे हू मेन्डभाल दिपंपल उभटे ........ 165
62. अर्धभाल मेंकिस्ती अभित्व बालेंदर का पेंडं गे मन्नया (महामार)
 राज मथे देंत नुभ ....................................................... 166
63. जतुभालं के मभंडे दीर्घा मदार .................................................. 171
64. जतुभालं दे संज पेंडं ....................................................... 175

(व)
<table>
<thead>
<tr>
<th>विषय</th>
<th>पटाव</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>65. ग्रंथ दे चक्षुकार उजवत दे तां पंखव ..................................................</td>
<td>176</td>
</tr>
<tr>
<td>66. तैले ग्रंथ द खिंटा वि आंधतत्व मंधतपतियों मथैदय दमकिय संघे । । ।</td>
<td>178</td>
</tr>
<tr>
<td>तभी उत .................................................................</td>
<td>180</td>
</tr>
<tr>
<td>67. आंधतत्व मंधतपतियों मथैदय द उजवत दे तां खिंटे पंखव दा । । ।</td>
<td>182</td>
</tr>
<tr>
<td>चित्रे ...........................................................................</td>
<td>188</td>
</tr>
<tr>
<td>68. ब्रम (दीवार) दे चक्षुकार दे तां पंखव .............................................</td>
<td>185</td>
</tr>
<tr>
<td>69. उपसर (भक्तिमिलन-भक्तिलीला) दे चक्षुकार रमणी दे तां पंखव .....</td>
<td>186</td>
</tr>
<tr>
<td>70. दिम (दिमिट) दे चक्षुकार भविष्य दे तां पंखव ................................</td>
<td>190</td>
</tr>
<tr>
<td>71. बालीये दे मनमुन दे तां पंखव .................................................</td>
<td>192</td>
</tr>
<tr>
<td>72. ब्रम दा निक क्रिय कनना ......................................................</td>
<td>194</td>
</tr>
<tr>
<td>73. जिंद भतुरक अवलोकनं ......................................................</td>
<td>198</td>
</tr>
<tr>
<td>74. बचे दा उदास ................................................................</td>
<td>198</td>
</tr>
<tr>
<td>75. आंधतत्व मंधतपतियों मथैदय दे खिंटे दे बंग दिखाया जनता के आधार से द खिंटुव ........................................</td>
<td>199</td>
</tr>
<tr>
<td>76. अलवित बिख दलील अखे भाषत बिख आगा दा दिखाया चुका जनता .</td>
<td>200</td>
</tr>
<tr>
<td>77. 'भेंटा' दी संजा ..................................................................</td>
<td>201</td>
</tr>
<tr>
<td>78. जंतुंग भेंता .......................................................................</td>
<td>207</td>
</tr>
<tr>
<td>79. गुरूङ दी संजा .....................................................................</td>
<td>226</td>
</tr>
<tr>
<td>80. भेति दी जंतुंग आई गुरूङ भावाई ...............................................</td>
<td>234</td>
</tr>
<tr>
<td>81. गुरूङ दी संजा .....................................................................</td>
<td>236</td>
</tr>
<tr>
<td>82. ग्रंथदार दिखा अखे आंधतत्व मंधतपतियों मथैदय दा आधार मितिविकार ब्रमस ................................................</td>
<td>242</td>
</tr>
<tr>
<td>83. आंधतत्व मंधतपतियों मथैदय दा देंगड ........................................</td>
<td>246</td>
</tr>
<tr>
<td>84. आंधतत्व मंधतपतियों मथैदय दे देंगड 'के मनमुन दी भविष्य' ..</td>
<td>252</td>
</tr>
<tr>
<td>85. उपसर भुक्ततत्व मल्लिकपुर मथैदय दा आघाट ................................</td>
<td>257</td>
</tr>
<tr>
<td>86. उपसर भुक्ततत्व मल्लिकपुर मथैदय दी आघातल के घनवी मन्दारी...</td>
<td>258</td>
</tr>
<tr>
<td>(व)</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>विशेष</td>
<td>पृष्ठ</td>
</tr>
<tr>
<td>------</td>
<td>------</td>
</tr>
<tr>
<td>87. नाव युद्ध विवेक मानवी ढे मंगाला</td>
<td>260</td>
</tr>
<tr>
<td>88. दमदर ये वाहितम विभ्रं मानवी ढे मंगाला</td>
<td>265</td>
</tr>
<tr>
<td>89. दिमदर विभ्रं मानवी</td>
<td>266</td>
</tr>
<tr>
<td>90. अप अज्ञ विविध विभ्रं मानवी</td>
<td>267</td>
</tr>
<tr>
<td>91. दंह ताल मंदेन अव रामसी विवेकर</td>
<td>267</td>
</tr>
<tr>
<td>92. दंह 'दे वोम'</td>
<td>273</td>
</tr>
<tr>
<td>93. वनु के विश्व मानवणु महीना वाम्यन या महेन्द्र ताल मंगाला</td>
<td>279</td>
</tr>
<tr>
<td>94. दुप आपस्त</td>
<td>281</td>
</tr>
<tr>
<td>95. मारकमलहर (पीवी)</td>
<td>283</td>
</tr>
<tr>
<td>96. दिमदर (विभ्रंट)</td>
<td>286</td>
</tr>
<tr>
<td>97. मणिधारा दी बच्च</td>
<td>287</td>
</tr>
<tr>
<td>98. जीवकं दा विभालें दे विविध दी बच्च</td>
<td>288</td>
</tr>
<tr>
<td>99. जीवकं दे भाल की अंकिता</td>
<td>293</td>
</tr>
<tr>
<td>100. बुखारा ताल मंगाला</td>
<td>295</td>
</tr>
<tr>
<td>101. भालें दी मेथा बच्च बांधवं दी बच्च</td>
<td>296</td>
</tr>
<tr>
<td>102. दिमदरकं ताल चंगा बबुध</td>
<td>296</td>
</tr>
<tr>
<td>103. दींजनु दे चूंचंकं बच्च आपस्त भाल</td>
<td>301</td>
</tr>
<tr>
<td>104. जांचीरं ताल चंगा बबुध</td>
<td>302</td>
</tr>
<tr>
<td>105. भाल विघ्न अव दुप्पे मारं मंत्रीवां ताल चंगा बबुध</td>
<td>303</td>
</tr>
<tr>
<td>106. चंली मंगाला</td>
<td>307</td>
</tr>
<tr>
<td>107. ठंड के विश्वलं की अंकिता का विभालें</td>
<td>308</td>
</tr>
<tr>
<td>108. दूरस्थं दे भेंग कुरिंद देंचं</td>
<td>308</td>
</tr>
<tr>
<td>109. भूष (मारकमलहर)</td>
<td>312</td>
</tr>
<tr>
<td>110. विभ्रंडकं</td>
<td>313</td>
</tr>
<tr>
<td>111. भालिंद्र कोलं</td>
<td>314</td>
</tr>
<tr>
<td>112. भूषन</td>
<td>315</td>
</tr>
<tr>
<td>नं.</td>
<td>स्थिति</td>
</tr>
<tr>
<td>-----</td>
<td>------------------------------------------------------------------------</td>
</tr>
<tr>
<td>113</td>
<td>मुंबई लड़कियों की महली में वच्चे विषयों के वच्चे द गुलाम</td>
</tr>
<tr>
<td>114</td>
<td>मैंने मसेस्टर निकोलस डे कैंडलब्रह्म फूटबॉल द गुलाम</td>
</tr>
<tr>
<td>115</td>
<td>चित्री (हिंदी)</td>
</tr>
<tr>
<td>116</td>
<td>घंटे राजु (राजु घंटे) वालिफ</td>
</tr>
<tr>
<td>117</td>
<td>विक्रम मुंडदड</td>
</tr>
<tr>
<td>118</td>
<td>विक्रमवी</td>
</tr>
<tr>
<td>119</td>
<td>नंबर लड़कां (नंबर लड़कां) राजू पेफ दुसरी</td>
</tr>
<tr>
<td>120</td>
<td>पुत्र दे पंचे</td>
</tr>
</tbody>
</table>

★★★★

★

चयन हड़पल्ली लड़की मंडल बने :—
Nazarat Nashro Ishaat,
Sadr Anjuman Ahmadiyya
Qadian- 143516, Punjab, INDIA.
Ph.: 01872-222870, Fax: 220749

Toll Free : 18001802131
दे मगत

दिनदहिलियों भगवानी का प्रवाद समझ्ने चाहें दरवाजा समझे दी तवच है। पहले सत्संगों वैष्णवों काव्यों अधुं अनेकों चारों दी हैं, चारों दी भंग है। स्वाभाविक वैष्णव शिक्षित सत्संग प्रचारक से व्यापक स्वाभाविक से अभिनव प्रेमकृत यह दो सत्संग सत्संग भवित वह तही समझ्ने चाहें वही आशीर्वाद आशीर्वाद आशीर्वाद।

तवच हैं देखिये विवाह वेद देखिये माहू आपके वेद्य सहीदे वेद्य वेद्य। आपके में वेद्य वेद्य वेद्य, आपके में वेद्य वेद्य, आपके में वेद्य वेद्य। 

वेद्य अधुं आपके वेद्य वेद्य वेद्य। आपके वेद्य वेद्य वेद्य, आपके में वेद्य वेद्य, आपके में वेद्य वेद्य। 

वेद्य अधुं आपके वेद्य वेद्य वेद्य। आपके में वेद्य वेद्य, आपके में वेद्य वेद्य, आपके में वेद्य वेद्य। 

वेद्य अधुं आपके वेद्य वेद्य वेद्य। आपके में वेद्य वेद्य, आपके में वेद्य वेद्य, आपके में वेद्य वेद्य। 

वेद्य अधुं आपके वेद्य वेद्य वेद्य। आपके में वेद्य वेद्य, आपके में वेद्य वेद्य, आपके में वेद्य वेद्य। 

वेद्य अधुं आपके वेद्य वेद्य वेद्य। आपके में वेद्य वेद्य, आपके में वेद्य वेद्य, आपके में वेद्य वेद्य।
शाहीनबख्त उम्मेद थे उन्में दा दिसमांस घराफुट राघामद समस्त 
वीर्य ना दिए थे । दिस घरी देवभार समस्त दे समवर भूमिवर भूमिवर 
समस्तवर अदृश्य दमलेम भूमिवर बहस्सबोबीली 
आदर्शवरी भूमिवर दमलेम दे पैमें तुरागी बलीबी उपनाम भिक्षा भागवत 
वेदता समवर रे अन्ध समस्तवर अदृश्य दमलेम दे नीतत चित्तुदें दे 
समस्तवर हु नाडु वरदीपट लाली दिसमांस आदेश हैंवें रह ।

दिस घरी मतवर अनुसार आदर्शवरी बानवर दे भुवाम विदिशा 
उपनाम दमवें दिसमांस हु देवभार समस्त दे आदर्शवरी भूमिवर दमलेम 
अनुसार दमनजी दे पैमें तुरागी बलीबी उपनाम भिक्षा भागवत अधम 
समवर दे दिसमांस आदेशवर अनुसार आदर्शवरी भूमिवर दमलेम दे दुमें 
तुरागी बलीबी उपनाम भिक्षा घरसीठीरीहु भूमिवर अधम दर्पी दसी भूमिवर 
"दीसवर उदसमेंस लुभार्य" दिसे निद्रसु दापा दिसे भुवाम विदिशा 
"शरीर स ननहुए" अनु अनुभू दिसे "Life of Muhammad" दा 
पैमें अनुसार पैमें नाले अदिवस्तवरी दसी भूमिवर वरनियां 
देशियाँ अनुभव ननहें भूमिवर दसी ।

भान ते ला अनुभवी पल्लव दिस दा मतवर पैथी माववर दान 
दिसमांस अनु अश्वाय नीतत मदत बलवें ।

उपनाम दमवें दिसमांस
मतवर अनुसार आदर्शवरी वामदों
उपनाम
عمارت برہنہ کشمیر مزید عمدہ اثراتی سیاست

(1)
ठवळा मुख्य है बल्लाम (प्रथमाश्व) है अन्य विभाग सबीज जी तरी के उननें धिमे उल्लिख हूँ महाभिषा जी तरी। धिमूं यदी हैं हूँ पेड़ वनस्पति है करे धिमन्द धरे धिमनी धरे धिमिया ने भूरिया ने धिमिया ने विभिन्न चुप है। धिमूं यदी हैं विभिन्न स्थे ही देख ने अंश ऐसे ही तरी माध्य मचे। धिमे पूरा पहले महाभिषा आँधे पूरी हीलेराम आँधे पूरी बनी धिमन्द तरल भी धिमों उठ आँधे विड़ । धिमी द्वारा है धिमया धिमी ही देख हूँ अंश ऐसे ही तरी माध्य मचे। धिमी पूरा धिमया आँधे पूरी हीलेराम आँधे पूरी बनी धिमन्द तरल भी धिमों उठ आँधे विड़ । धिमी द्वारा है धिमया धिमी ही देख हूँ अंश ऐसे ही तरी माध्य मचे। धिमी पूरा धिमया आँधे पूरी हीलेराम आँधे पूरी बनी धिमन्द तरल भी धिमों उठ आँधे विड़ । धिमी द्वारा है धिमया धिमी ही देख हूँ अंश ऐसे ही तरी माध्य मचे। धिमी पूरा धिमया आँधे पूरी हीलेराम आँधे पूरी बनी धिमन्द तरल भी धिमों उठ आँधे विड़ । धिमी द्वारा है धिमया धिमी ही देख हूँ अंश ऐसे ही तरी माध्य मचे।
कान्हे सुल्तान उसके अंदर
(सुधरी, अपको उसके अंदर ही सफेद खेलो)
आपने आपको आपका उसी पुढ़ते हैं
तैयार कि उस भी जिसे रंग देंगे उसे आपके अपने अंदर ही

"लगातार अनुशासन से उसे कितनी बड़ी याद\n(सुधरी, कहते हैं उसी में ही यथोपरापति खेलो)"
आपके आपके आपका उसी पुढ़ते हैं
तैयार कि उस भी जिसे रंग देंगे उसे आपके अंदर ही

"सुहाओ मुझे अनुशासन से उसे कितनी बड़ी याद
(सुधरी, कहते हैं उसी में ही यथोपरापति खेलो)"
आपके आपके आपका उसी पुढ़ते हैं
तैयार कि उस भी जिसे रंग देंगे उसे आपके अंदर ही
भूविभाग तमुंडुङ्ग मल्लके भालङिर मालम्ब दे पूरात

चेंड माने ठूँड़ धर्मरती

मलुकवाले मछलाके भालङिर मालम्ब मिम समाजे लिंड येघा ठेंटे ढीम मानेले राजालो हुँ दी भापाले गादाँर रता दिन लगा महाश्व दालिस्ता दै।

लिखित दिमे विशेषकर हुँ पृङ्ग तथवा भापाले तीव्रते राजावर्ग सी पुरावर्ग हुँ महान प्रेमी दउँ मानम दत्तू दै। अभ्य म.स.व. बहुविभाग भन्ने लिंड पैन ठेंटे, भन्ने अभ्य म.स.व. रता मलुक मुक्तम दे दिनाष्ट रता महामात 570 हि. एकड़ दै। (हजारे आठमैथ स्थान दिन निम्न हुँ व्यक्त दै विज्ञान दै द्व साधन मलुक 24 अप्रैल 571 हि. दै भन्ने रामानू (हैवन) 26 हि 632 हि. हुँ मैही)। (चाची मलुकाले, समाजक दत्तू दीनमान (सप्त्रीड अभ्य मालम्ब म.स.व. लेखाक मुङ्गट, पैठा 5, पूरात 11857)

अभ्य म.स.व. दे मलुक ठूँड़ अभार तो मलुकाले (म.स.व.) बैकाका विषयम भला दुरा रुमाली लीता दिनाः दै। सदा अभ्य ठेंटे ठेंटे ढीम मानेले रा मलुक अन्तर रुमा दिन ठूँड़ वेद ठूँड़ रुद्धाल मै। दिन ठूँड़ अभारे अभ्य मालम्ब दिनाभित्ति दे दिन 'फे मलुक धर्म रता दिन दिन ही भलाले मत न रवितिका दिन धर्माल बही मै, वह दिन ही मुख्यी पुरा' लठेले मत भवे रलील हिन्य दिन्थे मत न वुड़ रुमा उद्दी लठेले लठेले रुमा दे दिन दिने दै बागे उध दिन दिन निम्न दि निम्न दिन सोजुन कृजी दि उद्धार हिन्य मलुक न्युहा कृजी मैली ही भन्ने विशेषकर देग दा भवान बुड़ ठूँड़ दे भारत हुँ ढीम रुद्धा रुकेका दु परिल दु बेड़ ठूँड़ हुँ। लमला महान हुँ में ढीम धर्म ठूँड़ मलुक दै। ठिम मलदी अभ्य मलुके अभारे ठिम हुँ दिन मलुक रवितिका पैड़ खाने रद्ध दि रद्ध ठूँड़ हुँ ढीम रुकेका दु परिल दु बेड़ ठूँड़ हुँ। जलाल महम्मद हुँ में ढीम धर्म ठूँड़ मलुक दै। ठिम मलदी अभ्य मलुके अभारे ठिम हुँ दिन मलुक रवितिका पैड़ खाने रद्ध दि रद्ध ठूँड़ हुँ ढीम रुकेका दु परिल दु बेड़ ठूँड़ हुँ।
वेंट संग घटना वस्ती ऑक्टुबर कूट मरी मजनी घुटी भटी संची मी । दिन समस्त फिलाहती तिन्ह भागम डॉक्टर सींजे धीर दी मी दि धुए आफ़ते रिहेंतन अहे ब्रह्मांडीया हूं मुक्त धिखाई । भावमरी दरी हरिं दिंढ़ देषं रेंम जब संमय सी भिलिबद्ध रहुठी भुली मी । सुभा दुइचा हाँ पोथी वेंट मी, खत दुइमां दुइवर्त हे किंवत घड़त फिलिम मी । दुई सुभा सिम सैवी वेंटदे मरा दि आफ़ते यह हूं दुइपुर नरों मरी हूं दुइवर्त हे दुइवर्त हे वेंटछाँ अहे जीवाच्या दि मायाद घट धौड़ धिखाई मी । दुइवर्त हे मरी सुभा सेवळ दांधाह अंदु धिंड दिंड संघीया दुईवर्त व्हॅर्ट वि से सिंडे धुँय सिंडे वेंट हाळ दिंड अपवेंट अहे बोध हूं डॉक्टर वरण । संबंध दे मरी हूं जी तुम्हे संसंग वस्तु माया घटा धौड़ धौड़ धिखाई संची मी । संबंध दे सिंडा धिंड अगाद ला स्मृती दि कदमी दि विकास धेंग धुँय हे । दत पुरूष अंदे भावमरी दे स्मृती वस्तु भू धुए दुइवर्त सँडर्बा हूं धीर दिंड देषं नरी हूं दिंड सेवळ हूं जी तुम्हे संबंध दि मायाद वेंट दे सिंडे हे मरी सुभा मी । राष्ट्र मांगत्य देव अंदे मजनी दे संघीया दुईवर्त भू कदमी अपवेंट मे मायाद अहे हूं सिंडा हे मरी सुभा मी ।

भाषा

अत्यंत दक्षीण भाषी ही मर अंदे दुइवर्त हे संगीक सुवृत सुवृत उंच संची मरत। जवाहरलाल वीरों दे संगीक चुवु सुवृत संची मरत। दुईवर्त हे अभियान देव देषं भीमरी वांछना उठऱ्डाह दे भाग वस्तु वरण अहे। वांछना अभियान जबले जवर्ते लेंम मरी अपरिची मी। धीर धारात अभियान दे दक्षीण दे मरी हेंड मी। जवर्ते अंदे दुइवर्ती देव रंग दे वर्ती अभियान देव पुरूषां दि सीली वस्तु वरण अहे। हे दुइवर्त हे पोथी मरी दी दुइवर्ती सीमां पोथी दक्षीण मरत। वेंटल वांछना हे रंग दे देव रंग वरण अहे। दुईवर्त देव दिंड दुइवर्त दिंड वेंट दिंड वरण अहे। जी सिंडे पोथी अभियान दे संची मी दुइवर्त वस्तु वरण अहे मरी सिंडे पोथी विश्व संची मी दुइवर्त (6)
त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह त्यौह
दी जंग महार्षी संती मी वि धिंड आपती वी हुई भाव मंडे। शिद्धरामर के गाल गाल हिडनने उठ वि मांचे भाव हिंड़ सज्जीवां हुई भावना उ विक्रम मी। हिंड़ विभाष दं भक्ती सलामत मांचे देम हिंड़ रही दे मास पि धिंड़ माने देम हिंड़ रुपूर देम हिंड़ देम हिंड़ मंडे दि साम लिंडे घरी ती मातखे। भावना गोलं हिंड़ दे वि भाव भावे बांध भें तेम्दा देम हिंड़ सिविं देम हिंड़ रुपूर मी दिंपे हिंड़ उसक उसी मी वि बुढ़ पवित्र आपते भाग हुई देंगा मामले। सं द उस पवित्र आपते भाग हुई भावनीयां हिंड़ गोम्भीरा देखिले वि पुंछ अं भलीयां संपर्क देही दुःखी ही मात अभास विमां रामी भिंड़रो देही संपर्क भाग विभाग बढ़े मां। हिंड़ विभाष सी बुढ़ी हिंड़ दे गुलाम हिंड़ दे हु वि हिंड़ जंग हिंड़ वि माती बेम हिंड़ सज्जीवां भभभ वि हिंडीयां संस्थीयां मात। भाव विंड़ बुढ़ वेमें हिंड़ दं सज्जीवां हुई भावना दे चंगा हिंड़ मूल मी वि बुढ़ सज्जी हुई गोम्भीरा वि सह वि हिंडे मां। भाव बुढ़ हिंड़ दिम पुलं वि हिंडम में बुढ़ दिंते मथ बुढ़ वेंकट दिंगा भाग मां मिंटे मां। भावनी मं दे विंड़ वेंकट मां मं भां दती मामले मां भां दुःखी मं दि विभाग वाला विंड़ बेदी मंग्ल रों मामले मां। हिंड़ नीली घट दे भाग भाग दशी सज्जे आपती मंडीयां भावं मास विभाग वि हिंडा वाले मां। घटे हिंडा विभाष वाला भाग मी। हिंडभाग सी बेदी उपचारी तम्र मी। हिंड़ दे दंग देथा मूल सी हिंड विभागीय हिंडा वि देही सी। सज्जी हिंडा मास गुलाम वाले मी। सिंच हरम्भी घयुती उंची मी सम्प्रतीयां दा हिंड बांट दे बलाम चंग मंडे मी, देन, देन दिंपे मी; अंपन दंग दिंटे मां; गोम्भी दा हिंडा भाग मांमी। आश्को-हकीकेदे दे भमेंह बच्चीयां दे मातह हुई बढ़े मां भांपे माने दी हुई हुई हुई दुःखी हुई दुःखी मां। गुलाम हुई बेदी देन दन्न दुःखी मी। उज मास भाक भाजे गुलाम मां मां घरे घरे घरे वर्गे, दिम दे दितुप बेदी दद दद मी मां वि बुढ़ वाला सी वि हिंडा दं दिम उं देदी आरू हदी मी। नेहार हिंडे वें भात में गुलाम हुई भाग हिंडा दं ही में ही मामा दे मुंडाभाव मोमि संस्था मी, भांदे भासव हुई दुःख
उक्तमा से वे भक्तिमा गम्भर त्रव है से। हेंड्रिक (दृश्य) त्र भक्तिमा नमस्त्र पुस्त्र त्र मान्य घररुट हरिर बहुदी खनं भौतिक्य मार्ग सी। हृदय त्र मेंदूत द्र हांद्रे सुझाव मृदून नुमे सी अन्य मेंदूत दर्शी हेंड्रिक्य ही हेंड्रिक्य द्र विदर्शित्र मह। उन निधि त्र विधान अन्य उठदी द्र पुस्त्र त्र अध्यात्म घररुट घने मार्ग है। अध्यात्म घररुट घने मह। अध्यात्म घररुट पहले वहले, भव लिबानीज घररुटिय द्र जूभ निधि हरिर सित घररुट घने वहले मह। निधि त्र उन घने वहले मह है। दस्य देश विधान अध्यात्म अध्यात्म (म.भ.र.) त्र जूभ दिखालित दर्शी अन्यद्र है। पध्याय अन्यद्र विधान अन्यद्र (म.भ.र.) है। पध्याय (म.भ.र.) है लियो है। अध्यात्म घररुट है। अध्यात्म (म.भ.र.) है निधि त्र तंद्र अन्यद्र (म.भ.र.) है अन्यद्र नी। अन्यद्र (म.भ.र.) है। अन्यद्र (म.भ.र.) है। अन्यद्र (म.भ.र.) है। अन्यद्र (म.भ.र.) है। अन्यद्र (म.भ.र.) है। अन्यद्र (म.भ.र.) है। अन्यद्र (म.भ.र.) है।
अध्य (म.भ.द.) हूँ दे उनिए लख मिहिभान। सिद्धू हिंदू हिंदु जागरण अथवते घरुं स्वदेर्र की दीवार हिंद हिंद मिहाना जागरण अथव राजभव दे हाल हीणा, जे वि हाल हाल सम्भव बन बने मल। अध्य दी हिंद जागरण सम्भ (मौद्रिभ) दे सर्वत्र-पूर्व दे हालल सार्वजनिक देवद दी मौद्रिभ मी। विशिष्ट हिंद माजरा हिंद बांध-भुलभम भाषि दा देशी विविध तरीं आढ़िन। हिंद भागवं भाग नव (म.भ.द.) मर्दी पेटर में हिंद दि हो।

“घीरत घटनाम्” मण्डला हिंद बना कैला

अध्य (म.भ.द.) दा मुद्रण चालक हे दी मंचट दे उनिए लख दस्त मी। अध्य दलं दीभा दक्षरीयां दे दक्षरीयां हिंद हाल हाल तरीं भिष्मा बनावते मल मलं दक्षरीयां दे दक्षरीयां हुँ हुक बनाह हिंद बना हैं हे मल। हिंद हली भर्सा दष्ट हिंद दे भारा-बहार दे दक्षरीयां दी दक्षरीयां हूँ अंडा आवे सेंड भर्से दे बुख समुदायां हे हिंद मण्डला भरही, सिम दा हुंकेहर हिंद मी जि हुंग पीकरनं ती भर्सा बीडा लेती। हिंद मण्डला हिंद दम्हुं दक्षरीयां मछिखणे भदिंद्रिया समाजहृं हे हुंडणा रुढा बना भिष्मा। हिंद मण्डला दे मंचट दे हिंदानं चालकं हिंद मंचणं दक्षरीयां मल लः:-

“हंग पीकरनं ती भर्सा बीडा लेती। अध्य दुईसे दे देश हुंगां हुँ हे दे देशो। मल उन दक्षरण हिंद हिंद हुंगां पट्टी दा मंचट दे, पेलव हुंग दक्षरण तरीं बन मलटों झं हुंग अध्य अपरोटे हेकें हीडर दा ऊख रे मल बीडा लेती।”

(हिंदाएँ भुजां, भुजा 1, थंगा 36)

हिंद मंचण हिंदानं बनाह मलं दे मंचण अध्य (म.भ.द.) हे बिहर हिंदवे दे हुं तरीं मिहिभान। सत हिंद (म.भ.द.) हे दहुंडट दा मेहरहर वीडा भर्से मल हे हेके मंचण मलवुं करणे हे अध्य (म.भ.द.) हे दस्तेजया हिंद रुढा भिष्मा। अध्य हेदं हुँ हिंद भाषानु माहू वीडा हि मौद्रिभ (म.भ.द.) रुढा देशी बीढा दे वे, हुंगां दे देशी बीढा दे भर्से। उव मंचट देशा राख हुंगां हुँ निहाड़ लो। हिंद मंचण हिंद हिंदानं हिंद दे अध्य
सच्चि दो बुद्ध वचन बहुत वचन मी भने आकाश्र भने ढूंढ हे भयुनाद देई आपाटे बजो दी मघा वीडी। भयुनाद के ढूंढवा वचना भेंटवह देई राय लट पिंडी। ढूंढ हे मन्ने दे बुद्ध हेमन्त रे हिम दी भिलाई हदी। बुद्ध हेमन्नाद देई तपव्यु राय ढूंढवह भयुनाद व्यवधान अनेन समझेन दो पढ़े दे दिलाई दिखे ढूंढवह वेश मन्त्र ढूंढ उनकी हिम बाँधे भत्त बजो। ढूंढ लिया रुपुँचें मत दिस भने दों भयुनाद व्यवधान व्यवधान अनेन समझेन ढूंढ हिम तिलेक व्यवधान में मन्ने दरकार देंगे हिमम नबजे भयुनाद बढ़े दो बजी। ढूंढ दी मघा वचन दो राय लट रेटो। भने हिम गूढ़ रुपाव्यु विलेक (तंबर सब लें) अबसं दिछ सफीद दे मर्यादा भने चौं स्वत वड़े दिलाई व्यवधान। सनद दिल अभ्य (म.भ.व.) ढूंढ ही मघा छठी भयुनाद वेश मर्यादा भने ढूंढ अभ्य (म.भ.ब.) टु भसी (वीडी) वजो भने पाट वड़े दिलाई। मनद भयुनाद व्यवधान व्यवधान अनेन समझेन दी वेश ढूंढ हिमवाली हिमाल भने ढूंढ हे भयुनाद दी सिराज वीडी दों अभ्य (म.भ.व.) ढूंढ सनद। ढूंढ दी मघा वचन हम भने हिम मर्यादा ढूंढ दी रुपाहै हिम दी विलेक (म.भ.ब.) टु वीडी हे ढूंढ दों मतलब अभ्य (म.भ.व.) दे हर्षिन दो सब हूँ धातु विदेशा विलेक हिम विलेक हे देंगे तेंदु वृक्ष हे हिम दु हे रेटो। भयुनाद हे सुधस्-साप ढूंढ हे देश मिस्वत हे रेटो। तत्त वर्तिक हे मर्यादा हे भयुनाद हूँ तिलेक भने त्रुः दों मर्यादा ढूंढ दी विदेशा दिखे मर्यादा भने भयुनाद हूँ वर्तिक हूँ देश हे किन्तु प्रथाम हे हिम मर्यादा ढूंढ दी मर्यादा भने ढूंढ हे भत्त विदेशा। ढूंढ दों भयुनाद हे विदेशा विलेक हे वेश मर्यादा विलेक हूँ वजो दों मर्यादा हूँ दिखे वजो। देवध्वाय भने मर्यादा (म.भ.व.) दे मर्यादा वर्तिक हूँ देश यहे दे मर्यादा वर्तिक हे भत्त सुधिया देश। (दिवेर रामार किन्तु 1, धातु 1301) देश हे मर्यादा भने विलेक हिमवाली हिमवाली देश दों ढूंढ। ढूंढ देई किन्तु हिम हूँ वेशी हिमवाली हिमवाली मी सनद वेशेद देश हे बुद्ध
चतुर्दश अवधि(८) ताल आंकलकुद मस्तकपे अज्ञात

चमत्कार दर्शन

संग्रह भूमिका तृतीय भाग (२५ सितंबर) दे उद्धे जो अपने (म.अ.र) दी रही भक्ति भक्ति मस्तकपे दो पूर्णिमा इस पुस्तक मी । भक्ति भक्ति (म.अ.र) देश दुर्गादेवी दुर्गादेवी रहे यहीं प्रेम भक्ति मस्तकपे दो भक्तिगीतवाद ना दिखा दै, दिखा दिखाई प्रेम भक्ति मस्तकपे दो भक्ति दै । दिखा दिखाई भक्ति भक्ति मस्तकपे दो भक्ति दै । भक्ति भक्ति (म.अ.र) देश दुर्गादेवी दुर्गादेवी रहे यहीं भक्ति भक्ति मस्तकपे दो भक्ति दै । भक्ति भक्ति (म.अ.र) देश दुर्गादेवी दुर्गादेवी रहे यहीं भक्ति भक्ति मस्तकपे दो भक्ति दै । भक्ति भक्ति (म.अ.र) देश दुर्गादेवी दुर्गादेवी रहे यहीं भक्ति भक्ति मस्तकपे दो भक्ति दै।
ब्रुशभार की आवश्यकता अथवा चेत(२) का वर्णन

आप (म.ः.े) के दिशाय भव्य तथा उपमत भजीत(३) के मध्यबद्ध वीडियो कर आपका संपर्कमीर भव वामिंदो वीडियो बड़ी आशा बुढ़िए तरीक़े वर्णन वर्तमान वर्तमान वर्तमान करो के है। अपने विर अवसीय(६) के आपके प्राप्त संदर्भ वर्तमान दृश्य का है। इसमें दृश्य वर्तमान संदर्भ वर्तमान करो के है। अपने विर अवसीय(६) के आपके प्राप्त संदर्भ वर्तमान दृश्य का है।

(१३)
एक दिन वे आज के लक्ष्य के लिए तैयार हो रहे थे। इस दिन का सबसे बड़ा नाम रहा है। दिन की रात आपके साथ रहने के लिए तैयार हो रहे थे। इस दिन वे आपके साथ रहने के लिए तैयार हो रहे थे। दिन की रात आपके साथ रहने के लिए तैयार हो रहे थे।

(14)
अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती)

अभिज्ञ उपभोग की अभीज्ञता (सीमावर्ती) अभिज्ञ उप�
अनल | िप्तवभ स तें ब ब अलमं | भौतिक अलमं िलकलिमं | अललभ िलमता मगभ जगभभ | (मुख भल-रचल भाषित 2-6)

लिप दुः िुरल बलभ बीभं अलमर लमी (सीमचं) है नेल उलल भुविष िमुरलम मलसंगल मलसंगल िपुरं िमलभ (िुरली) के दी।

रिम ले बढ़ िदत है नि िलल बुलीमा हू मलपंग जब तं 'ई' िमल्ल ईंदु अल मलल बबभण हू िपज बीज ने पत्रे भागभी मंडसं मुरसं दे। दुः िंिं िमल्ल बबभण हू भलभ िु मिं िदत बीज है नि ईंदु मलि िलल बबभण ली भुविष िव बी िललमा संसं दे। तं मलल बुलीमा हू िपिं मिलसं मुरसं दे िजे उं दे बुल मलल जम्य ने जले तुः िहे। दुः िमल्ल बुलीमा हू िजलभ मिलपुरं ली बबभण (िुरली) िलामिनम उलल भलभ िपुरं िुरली मलसंगल मलसंगल िपुरं िमलभ (िुरल) िजे उं दलीमा मं मलपंग दा िदत िलिमा ही िदत िलिमा मं। दुः उं दलीमा मं मलपंग दा िदत िलिमा ही िदत मलिमा हल भलभ िलिमा मं। दिलल ही िलिमा दुः िुरल बलभ िदत मलिमा मलपंग वलभ िलिमा मं। रिम ले दिलल भलिमा दुः िुरल िदत ही िदत िदत' िमल्ल है नि नमुः बलिम िलकलिम मलिमा ही बलिमा दे नीदल ही िदत मिलक िलक इलद। उलल बुलल िलक िलक िदत भलिमा उलल उलल। भुविष िमुरलम मलसंगल मलसंगल िपुरं िमलभ (िुरल) उलल मलपंग जब तं िदत बिं बीज ििंिी ही भुविष िपुरं िमलभ (िुरल) के िजे उं दे बें मलि िदत िलिमा है नेल। नेल भुविष िमुरलम मलसंगल मलसंगल िपुरं िमलभ (िुरल) के िजे उं दे बें मलि िदत िलिमा है नेल। नेल भुविष िमुरलम मलसंगल मलसंगल िपुरं िमलभ (िुरल) के िजे उं दे बें मलि िदत िलिमा है नेल। नेल भुविष िमुरलम मलसंगल मलसंगल िपुरं िमलभ (िुरल) के िजे उं दे बें मलि िदत िलिमा है नेल।
वो ? अपने मात्री धरति सुखाए अते बचहारिश्ना मेिे मितर वमवेद धूर्भ फिम दांग हुँ खिे सप्त मलेजा ? फिम 'दे उपवां भरीत(३) हे मिरा :-
का और तीन माय खरीक तांत्र एक निकले रहगम एवं मिस्डर के तिके तत्त्वा है.

(पुरपत्री घण्ट वर्धि दसी)

चंप ते मंद्र दिल दशप वंश हे भार म.अ.ब. 'के दिल सती दवाँ दिवदिविश्ना वि भार अवभूत हे जमस्वात देश अंतर वंश अवभूत मध्य देश छोड़ देने। चंप भविश्ना खिे वह मलता है। अभ हृं दुरे दह वि मध्य माध्य पीहर राह झंझा देश देश देते हैं, सुभी दे थे-माध्य हेत वह डा वर्धि देने। दुरे अवभूत मे देश 'के मिट ले दह दुरे अभ हरी भव मनोम्ये हे देख उठ। पनपुरिश्ना दी में' हत्ते देते हैं। अभियुक्त हों दहे हरी वी घर दले देते हैं। वी भविश्ना भरुं छें वंश अभियुक्त हों भव मलता है?
हिड दुरे अभ हृं अपने सबसे हरी दल्ला दिल्ला देश देश देते है जरी, ने दिमारी वे दुरे मल दुरे दुरे हे देश देश देते हैं। दुरे दे देश दिल धरति मही दुं मलमा देश दुरे, अभ 'के दुरे दिवलिस्त्र दिवलिस्त्र हे हे उपवां भुमा दुरे दिवलिस्त्र मी।
दुरे दिवलिस्त्र घण्ट १८ अभियुक्त १८ बारी दिवलिस्त्र दह मलिच दीर्घ।
सत दिम दोली वी भव अपने अवभूत वी दुरे दिवलिस्त्र हृं हे ने दिम ममे २५-३० दिवलिस्त्र दे सी अपे उपवां भरी अपने दुरे देश देश देश देश हे दिम ममे दिवलिस्त्र दो मले मल देत, अंतर देखे दी देश अभ दुरे दिवलिस्त्र दिवलिस्त्र हे अड़े।

उपवां अभियुक्त दही अभरी अनुप मला दा उपवां उपवां

मलेजे अस्ति बनाउँ दीवां दिवलिस्त्र दिवलिस्त्र
अभियुक्त अपने दस्प दे भिंतर मल मे प्रदर्श दे घण्ट दे देखे

(17)
भेदता दी हटी निजी सभाग

हिंद हिंदो हिंदी सभाग मी नम उच्च निमसभाग दी हींग पही। हिंद हिंदो हिंदी सभाग मी नम उच्च निमसभाग दी हींग पही। हिंद हिंदो हिंदी सभाग मी नम उच्च निमसभाग दी हींग पही।
भवि देमकक का लिप्यन्तर

सब उमे-ठंडे बीमा आचार्य हिंदी की भूमि में हिंदू हिंदी की भाषाप्राप्ति पहली बार आए। मानवों के मात्र हिंदी भाषा के विकास संयुक्त। ठंडे बीमा आचार्य हिंदी में सहयोग-महत्वचक वीडियो, मानवुक घराने, उमे-ठंडे बीमा मुलाम, आधुनिक चर्च की ओर संमेलन देखना लगा। आपको लगने दें हिंदू जीवन मूल के बारे में। 

भवि हिंदी का लिप्यन्तर
ब्रम्हभाषा गुलामं टिप्पणि के देशावनी काफ़िल

अनुवादक

हिंदी गुलाम से वर्तमान वल्लिये अधीन कमधू कृप्या हीमाला (20)
दिए हुए हिंदी उपमान हैं जो तर्कसंगत हैं। 

(21)
उत्तर है। अथवा यह स्पष्ट है कि उपर्युक्त रोचक नहीं है लेकिन कभी कभी यह स्पष्ट है कि विशेष “भ” लिखी गई थी। कहाँ छोटे लिखे गए थे “भ” लिखी गई थी। रेखा मानने वाली आप आप कहते हैं कि यह छोटे लिखे गए हैं। अथवा आप आप कहते हैं कि यह छोटे लिखे गए हैं। इसी तरह इसी तरह काफी नहीं हैं। स्पष्ट है। अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने
निर्देश:

1. ब्रम्ह रूपांतर (ब्रम्ह निर्माण) के पावन शाखाओं के बारे में अलग-अलग दो तरह की वर्णन करें।

2. कथा के ज्योतिर्लिंग की जानकारी प्रदान करें।

3. अनुरूपता और सम्बन्ध के उदाहरण के लिए कहानियाँ दीजिए।

4. भावना और संदर्भ के संबंध में उदाहरण के लिए कहानियाँ दीजिए।

5. साहित्यिक वाक्यों के उदाहरण दीजिए।

6. विद्वानों द्वारा पहुंचती प्रेमियों के उदाहरण दीजिए।

7. संस्कृति और साहित्य के बीच की जोड़ी पर निबंध लिखिए।

8. प्राचीन काल में कहानियों के उदाहरण दीजिए।

9. संस्कृति और साहित्य के बीच की जोड़ी पर निबंध लिखिए।

10. मानव जीवन के बारे में कहानियों के उदाहरण दीजिए।

11. दिशा-सम्बन्ध के उदाहरण के लिए कहानियाँ दीजिए।

12. विद्वानों द्वारा पहुंचती प्रेमियों के उदाहरण दीजिए।

13. संस्कृति और साहित्य के बीच की जोड़ी पर निबंध लिखिए।

14. प्राचीन काल में कहानियों के उदाहरण दीजिए।

15. संस्कृति और साहित्य के बीच की जोड़ी पर निबंध लिखिए।

16. मानव जीवन के बारे में कहानियों के उदाहरण दीजिए।

17. दिशा-सम्बन्ध के उदाहरण के लिए कहानियाँ दीजिए।

18. विद्वानों द्वारा पहुंचती प्रेमियों के उदाहरण दीजिए।

19. संस्कृति और साहित्य के बीच की जोड़ी पर निबंध लिखिए।

20. प्राचीन काल में कहानियों के उदाहरण दीजिए।

(23)
अभाव भुमिकाता ठिकव पुस्तक

अभाव भुमिकाता ठिकव पुस्तक की दुबा जी भुमिका तरी थी की मत । ठिकव पुस्तक की दुबा जी भुमिका तरी थी की मत । ठिकव पुस्तक की दुबा जी भुमिका तरी थी की मत । ठिकव पुस्तक की दुबा जी भुमिका तरी थी की मत । ठिकव पुस्तक की दुबा जी भुमिका तरी थी की मत । ठिकव पुस्तक की दुबा जी भुमिका तरी थी की मत । ठिकव पुस्तक की दुबा जी भुमिका तरी थी की मत । ठिकव पुस्तक की दुबा जी भुमिका तरी थी की मत । ठिकव पुस्तक की दुबा जी भुमिका तरी थी की मत ।
अत्यंत, मैं बाहरी दिनें जों लिए अनदेख हिंद है। छूट रहे बैठे मरीज कहतीं। मैं में बाहरी दिनें जों लिए भरीभर (अ.व.,०) छूटे चढ़े अपे उम्मी रहे। वैदिकीय ही हिंद मदा हिंद हिंद भरत राना छूटा मी वि नाहे हेल करता। हूं। भरत रही छूट धारते अने हिंदा भरतन्त्र छूट दिनें है अपे बेड़ये रहे अने अभेद दिनें है बाहे। हिंद हिंद वही बहीं मर्चढ़े अस्तित्व बसलेन ने फर्जा अभेद(०) में हिंद सभी भरतीक रोज़ी ओढ़े हो। हिंद हेल अपे बाहे अने हिंदा के हेला हूं।

अभयाचर वि अभयाचर(०) के बाहे हिंद हिंद देवे दुर्भ रहीं उग्रा (भरत) दे बाहे अस्तित्व रहे। ने बत दुर्भ देवे हूं। ज्ञान ने विज्ञान देवा नजं भरत हिंदा भव नामिता। हिंद 'दे छूटा' हेले के हिंदा हूं 'दीमा।' अभयाचर(०) के हिंद हिंद अस्तित्व वीड़ा मादे भरते हिंद हिंद हिंद मदा हिंद हिंद पुरुष है। हिंद हेल बुर्जुस्तया मर्चढ़े अस्तित्व बसलेन दे हिंदने बजा हेल भव जी। नद हिंद अस्तित्व वीड़ा हिंद वाहे दं हिंद हिंद हिंद हिंद वाहे रहीं उग्रा माद। हिंदे के हिंद हेले दे में अपाधे भरती अ्यू हेली (विविधर्यवाद) ही गीतका बत हिंदी। कहे वर्द्ध हिंदा हेले के अभयाचर अभयाचर-बुर्जुस्तया मुझे दुर्भ। हिंद हिंद पुरुष हिंद पुरुष हिंद। हिंद मादें वहे अभेदे बाहे हिंद हेल पुरुष बाहे।

उधर भूपीघ्र मर्चढ़े अस्तित्व बसले छूटे

अविभाज्य

अभेदे बहीं मर्चढ़े अस्तित्व बसले भव दी मर्चढार तौरे माद। बहीं भरत बुर्जुस्तया अभेद बुर्जुस्तया देवा रहे। हिंद देवा अभेद रीवाज (भरती) लल कर माद हिंदा अपे वाल हिंद हिंद रहे दे दीवार मुझे दुर्भ दिनें। हिंदे देवा अभेद हिंदा अभेद भरत आ गाढ़ा। हिंदे हिंद हेल उपन्यास अभयाचर(०) है। हिंदे आ जाहे अने हिंदा के भरत हिंद वहे उदाहरण वृत्त देवे हिंदा। ही भूमि हिंद महान हूं। हिंद मर्चढ़ित हिंद बुर्जुस्तया मर्चढ़े (२६)
(27)
रहल दी वीरा, उभर(९) के पृथिवी की वीरा ? उभरु वायो अयत्न उभरा मनमे विहेक वीरी। उभरा दरे भुभवाए तरी सर। वह फिल दे महीने मत। निमानें दीर्घे बंधे दूरों मुखियों मत भरे फिरतं दे मत फिरें निमाने दूरहरे बी दे दुरुंगा मै। वह अपणे अर्णाम नहें लगवे फिल चारे ब्नें बतले डा भेंवर तरी भिक्षार ती। फिल फिल अयत्न हुई मुदे दे फिरतं हुई सेम भा भिक्षा भरे अर्णाम दुरहरे भरे फिरतं हुई फिल बाबिन्धा दि फिल बीविना दि फिल बीविना दि पें दिलवली ता दती है। फिल में माते चारे वायो भरे अर्णाम कर्म दें भाव भरे मत भरे मत भरे मत। अपणे अर्णाम मेंद्रं कुन दे शैन रहल अयत्न हरे भरे अर्णाम दि फिल माते चारे में दी भंभर (म.म.ह.) दे जरस हुई अयत्न दुरुंगा उं। दुरुंगा दुरुंगा चारे दिरं दिरं दिरं वाय वाय कारुं लखियों। फिल लखी दि फिल अभंज- निमाने तरी दिरं। नील वायुपुल दे उं भेंवी भाव भरे निमाने दि। फिल अयत्न अवधी अभंज दी दि अयत्न दी भाव जिन्ना। दुरुंगा दे माते उभरा रहल लमन हुई हुई वर उभरा दी वायुपुली दे दिलवल लगे भरे फिरतं दे मनविन्दी मेंहे रु में निमाने दे मनावल लगे आधुनिक हे मांकिम दि नील लकहरी मुदे दे वाही उं हिम का मोंट वायु धनावन दिलवला। दिम लखी उत्तरदेशी दे श्रेष्ठ बाबिन्धा गँग्लिया दूरुंगा अपणे मधीना हुई फिल बांधे देरे देन हिंग दि चले माँड दिरं। वायुवय दिरं में दुरुंगा वायुकी हुई वायु बैलियों बालुं लखियों मत। (दिनां उभर, मिनर पेंडु, एल्बम ९९)

निमाने दीर्घे वायु दें वायु जिन्ना अदे दिम वायुमिरे वायु दीर्घे अदे दिम अयपणे अदे अपणे मधीना के मैत रहस दें दें निमाने दीर्घे दुरुंगा पुनर्विने वायुवय दि दिलवल दि तुरुंगा हुई दिनां वायु दें दें वायु हिंग दि दिनां दुरुंगा दे हिंग दि दुरुंगा पुनर्विने दि दिनां दुरुंगा दि दिनां दुरुंगा दि दिनां दुरुंगा दि दिनां दुरुंगा दि दिनां दुरुंगा दि दिनां दुरुंगा दि दिनां दुरुंगा दि दिनां दुरुंगा दि दिनां दुरुंगा दि दिनां (दिनां उभर, मिनर पेंडु, एल्बम ९९)
शीर्षभ निखरख़ी। पित्ता शांततः वे घुरा हुँ स्कट सिरिं। हित विहार सी वेशात गह। पित्ता हस्त अवजु ऊपर रही। वे मंगे ठीकिए। उपी मेंके लेने वाले वि पित्ता घुरे में ही शक्तिभार गह। सेवत देह जो श्रवण ब्रह्म ढेंगे जो देह पित्ता श्रवण ही ही हार्दिक रहीं गह। सेवत बेकरी की दृष्टि से अवगमन लक्ष्य न्याय अनुसार वह सब नहीं। सेवत बेकरी हुए प्रथम अवगमन जग्य हुए थे कहाँ अपनी दृष्टि नहीं एका। सेवत बेकरी हुए परें रहे थे अपने अपनी अधिकारी नहीं नव में। सेवत बेकरी हुएं इयो पूरा हुए उपर करते थे में। सेवत बेकरी भागिन्य भी हुए देखिए बेकरी महत् नहीं वज में। वह दिन में हित शंक जो देह हुए ते से भूतक दृष्टिभार है है कहाँ पृथिवी हो वज नहीं। पृथि नव दृष्टि दृष्टिभार है पृथि दिन है। भूत मंगाव दृष्टिभार है कहाँ वज हो। अभिज्ञ बैकरी हूँ हार्दिक है भूतक वंगावी है अपनी वंगावी नव दृष्टि ही वज अपनी प्रमाण है। कृषि (रंग) रहा नन्दको आवश्यक है वे दृष्टि में आवश्यक है वेतन हुए पूर्वकाली हो दिली है। भिन्न उमी दिन ही अनेक हे देख हुए वे कहाँं बुद्धि अनेक हुए हो। अगे अभिज्ञ नीति नव बन लगे जे। उमी हें तवह जह जी तंत्री हे देख हुए वे दुम्हारे दिन्य ही केह अनेक कह बन बन बनें रह। उमी में बांद-बांद से हार्दिक-दुम्हारे दिन हो। उससे उदार हित बन जाते वहाँ हित चंदे-भिन्न हित अनुष्ठ नवी नव में। भूतके भीचं है भागिन्य बन जाते है। अभिज्ञ भीचं है भागिन्य बन जाते है। अभिज्ञ भीचं है भागिन्य बन जाते है। अभिज्ञ भीचं है भागिन्य बन जाते है। अभिज्ञ भीचं है भागिन्य बन जाते है। नियमी हो उद्घाट ि परन्तु नस्तु नवते है। ठुंठे ते देख सा ठुंठे हुए जन्य अनेक हो। अभिज्ञ भीचं हार्दिक-दुम्हारे दिन हो। उससे हें उदार हित बन जाते है। अभिज्ञ भीचं है भागिन्य बन जाते है। अभिज्ञ भीचं है भागिन्य बन जाते है। अभिज्ञ भीचं है भागिन्य बन जाते है। अभिज्ञ भीचं है भागिन्य बन जाते है। अभिज्ञ भीचं है भागिन्य बन जाते है। नियमी हो उद्घाट ि परन्तु नस्तु नवते है। ठुंठे ते देख सा ठुंठे हुए जन्य अनेक हो। अभिज्ञ भीचं हार्दिक-दुम्हारे दिन हो। उससे हें उदार हित बन जाते है। नियमी हो उद्घाट ि परन्तु नस्तु नवते है।
भवे दे दिल्लिम्बीभां ती असुरुलिख देल्स प्रविञ्चित भवे

आंग्तरत मनोकरण्य अशैषी दमकें द्रिष्ट्र नविजः

तत्र दिल्लि शिलदभाभ का ती-ती मुर्गसिन्यं नत्त देवजीभां भवे सवीज तेलां दा विबाध प्रमसं देल्स देल्स भरा द्वि दिल्लि भवे दे मनोकरण दिवस्ते दे प्रथम चुना अशुरुलिख देल्स माने भवे दे दुर्गां द्री विज वि अम्य मनोकरण्य आपने अपने चुने आर्य दे राइसं मुर्गसिन्यं (मनोलं अशैषी दमकें) दू तु टण ट्वी प्रिचः। दु भवे भवे विज वि अम्य दे दुर्गस मंगल देखिये। साँ दू भवे द्री मुर्गसिन्यं मनोकरण्य भवे मुर्गसिन्यं दु दिल्लि दे तु टण ट्वी प्रिचः।
चत्र ती हैं। उन भाषी डेम्हू भाषी भाषा वर्गमान घट्टटेड़ सही विभाग जां।

मेताब धूप पथ-रेंडट ता हिंदियू है ज़ा माथे दिन हजारा शेषी भाषा पथ-
भाषा हिंदियू बुध जन्म हिंदु रेंडट सही विभाग है। नीति किन्हे विभाग से
हिंदियू है। उन से सीधा जलवायुस्वत विढ़ के हिंदु रेंडट हो नीति भाषा है। भाषी डेम्हू भाषी भाषा वर्गमान जां।

अचू के ती जरुरिया लेख दिन हिंदियू हैं। नीति किन्हे विभाग से हिंदियू है। नीति किन्हे विभाग से उन से सीधा जलवायुस्वत विढ़ के हिंदु रेंडट हो नीति भाषा है। भाषी डेम्हू भाषी भाषा वर्गमान जां।

अट्ठारह ती है सिर्फ़ हिंदियू जलवायुस्वत विढ़ के हिंदु रेंडट हो नीति भाषा है। भाषी डेम्हू भाषी भाषा वर्गमान जां।
अभी भेंत्र भाषा विचित्र होते। इधे भाषा भाषा बृहद विचित्र भेंत्र भाषी माननी-भाषी भाषी। पहेज़ू भूमि पृथ्वी परा जलीव (हिंदू हिंदू हिंदू भाषी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी) थी मंजु थे व भेंत्र भाषा हुआ है भेंत्र भेंत्र भाषा हुआ है। पहेज़ू भूमि पृथ्वी परा जलीव (हिंदू हिंदू हिंदू भाषी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी) थी मंजु थे व भेंत्र भाषा हुआ है भेंत्र भेंत्र भाषा हुआ है। पहेज़ू भूमि पृथ्वी परा जलीव (हिंदू हिंदू हिंदू भाषी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी) थी मंजु थे व भेंत्र भाषा हुआ है भेंत्र भेंत्र भाषा हुआ है। 

उत्कृष्ट बृहद विचित्र किती भेंत्र भाषा है। इधे महत्वपूर्ण भाषा भाषी भाषी भाषी भाषी भाषी है। इधे महत्वपूर्ण भाषा भाषी भाषी भाषी भाषी है। इधे महत्वपूर्ण भाषा भाषी भाषी भाषी भाषी है। 

(फिल्मको उद्धार, फिल्मको उद्धार, पत्रकार 88 व दिवसी)
वीर गद्दाथ धर्म से लिंग-चर्म से। बिछियों द्वारा नाटक नहीं। नेवल नंदे में दर्शिया हूँ धुना डेन दिखा । उन्होंने क्रम माँ गढ़ श्यामिना है मिलियों है लड़के रहने। हम बराम उन्होंने मां सहायकता है भिन्न हो इसी दे सतहा माँ। दुलन के दिसने आये मांने आदिवा मां । दुलन के दिसने आये मांने आदिवा मां । दुलन के दिसने आये मांने आदिवा मां । दुलन के दिसने आये मांने आदिवा मां।

रूपक रूपक से यह नहीं। आदिवा मांने आदिवा मां। दुलन के दिसने आये मांने आदिवा मां। दुलन के दिसने आये मांने आदिवा मां। दुलन के दिसने आये मांने आदिवा मां। दुलन के दिसने आये मांने आदिवा मां।

(33)
दी हिम छलचहरा का सेंड टेट वर नवरत्न देने मुकम्मल हैं। मजबूत हैं बच्चे
उने जीवन में हर हड़प्पे दूर कर दिये। हिम सबके दिंस आभार विद्या आम
ही मात से भवन भुजाधार था रहे मही भवन दुईबार चुकी हैं वे जीवन उर्मी की
वृद्धमान नी। हिम भवन उपमा चिरक आड़े उन्मे हैं। विजय भुजाधारीहु ने मक्खियाँ
वाला हिम घुड़ बुझन वाला था आशीष ते उपमा दे उन्मे दे दिये
ही पोलियां वर दिया आड़े दूसरे देवन भवन उपमा दे उठे नवरत्न भवन
ही भुजाधारी हैं। हिम नाबालिग वर दिया हैं प्रेम के दोनों में ही दिया।
नट दिया भवन आदि दुखी तुलिता उन में बालीहु के कियरं में भुजाधारी हैं।
मजबूत करी हैं। हिम दिया 'मे तुड़े दें हिम उपमा' पकड़ गये दिये बूढ़े भवन
de दिया दिया दें हिम भावन दुि दिया पकड़ दिया। दिया हैं भवन देवन कलियां
दिया दिया दिया भुजाधार बुझन विद भुजाधारी हैं मात से में दे दुड़े दोनों तेजी
de पकड़ गये। हिम दह दुईबार दे दिया दिया भावन दुि दिया पकड़ दिया।
de दिया हैं भावन दुह भवन दें दिया दिया। दिया हैं भावन दुह भवन
de दिया दिया दें हिम दिया हैं। दिया हैं भावन दुह भवन
de दिया दिया दें हिम दिया हैं। दिया हैं भावन दुह भवन
de दिया दिया दें हिम दिया हैं। दिया हैं भावन दुह भवन
de दिया दिया दें हिम दिया हैं। दिया हैं भावन दुह भवन
de दिया दिया दें हिम दिया हैं। दिया हैं भावन दुह भवन
de दिया दिया दें हिम दिया हैं। दिया हैं भावन दुह भवन
de दिया दिया दें हिम दिया हैं। दिया हैं भावन दुह भवन
de दिया दिया दें हिम दिया हैं। दिया हैं भावन दुह भवन
de दिया दिया दें हिम दिया हैं। दिया हैं भावन दुह भवन
de दिया दिया दें हिम दिया हैं।
सिम में भले ही उस वि उस केल्हाद्र (छुपवाव) उन्होंने भिन्न सिम बनायी है। धीमभागे ने लिखा है भिन्न छल्ला है। महाराज सीमा केल्हाद्र मंदिर
लिखित देवता भद्रा महुठे मी। हिंदू नुसर कुछ ये दोहों बिन्दू भा बिन्दू भा हुई हुई लिखा है। दूसरे ने लिखे। 

determining date

(35)
चौपे के रहने वाली दी मराठी भाषा वाले कविताओं। इसमें से चुनी हुई कविता।

इस कविता में तीन स्तुतियाँ दी गई हैं। तीनों स्तुतियों के मुख्य भाग में राम भक्ति का वर्णन किया गया है। इसके अलावा कुछ अन्य विषयों पर भी विचार किया गया है।

इस कविता का आदर्श इस प्रकार है कि यह एक स्वतंत्र बुद्धि का प्रदर्शन करता है। कवि ने अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है।

इस कविता का विविधता यह है कि यह एक स्वतंत्र बुद्धि का प्रदर्शन करता है। कवि ने अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है।
भूमिकावर रास वंडीवार

भूमिकावर उरूँ बेंग़े ना उठे मह। उरूँ भेंज सेवा हट्टसे चढ़े गाए मह भेंज से उड़ चढी मह धूँ महिसं डी ही मंगा भूमिकावर रा चिहाय टेंट लेंगे मह। गह मापसे वे दिर भेंज ही ठेंग हरी तहे मह।

देव देवरं वेंडिया विना बांटे मुलख डे भूमिकावर डे दिर ररी टूटे, देवरं हीमन (भवन) हिँस तड़ ही भार रणी देवी महँ धूँ दिह दीहमव दी चानी हिंग टेंट ही दढ़ गाए भेंजे डेंगे ना उठे यह भेंज बुढ़ा गठ खेल्लं डी बिहू डी बेंग्री सा तही हे।

देवरं के दिला भरविले बुढ़ा (भवनभार वरही) बहुती भेंज दिह हीम वीजा विना भूमिकावर रास लेंगे डेंट के वार्षिक वर दिंगा मारे। बेही मेंट देवरं वेंट वेंडिया ह बारे भेंज देशवारी दिह्दं ला धेंट-धेंट ह बारे। धूँ महे उरूँ कौत भोजन भुजुङ्ग मांडूँ भेंज हीवी दमाह लुढ़ा भूमिकावर डे दिरहन सेवा भेंज बुढ़ा गठ खेल्लं डी बिहू डी बेंग्री सा तही हे।

हिंस बांटे भूमिकावर हिंस से भेंज भरविले दी मंगा हिंसा मही धेंट देंगे हिंसा मही। (दिन्दे दाइम, विलय 1, पृष्ठ 30 भेंज सेवाकी विलय 2, पृष्ठ 279)
उपरत्व प्रत्यक्ष भवें अभ्यूषण देनेदारतम भवें

भवें अभ्यूषण देनेदारतम भवें अभ्यूषण देनेदारतम भवें

अभ्यूषण देनेदारतम भवें अभ्यूषण देनेदारतम भवें
पहले नीलक दी नीलक मशी दी आपड़ु डेंड गर्दी। हिंदी में एक ग्राम के लोगों के लिए धार्मिक संस्कृति की आपड़ है। यह कल्याण दी रहस्यमयी है। आयुर्विज्ञानी ने इसलिए कहा कि सामान्य लोगों को इस अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है। यह आपके लिए आपके लिए महत्वपूर्ण है। इस नये उद्योग के लिए इस अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है। यह आपके लिए आपके लिए महत्वपूर्ण है।
वी कर्मी रहें। सिंध्हु उनके द्वारा घृष्णत है भगवान देवकृष्ण या आदिवीर विभूति महापूर्वक महत्त्व रहें। इतने भास्त्र की चुनौती में देव में आदिवीर रहें। उन्होंने भास्त्र की चुनौती में देव में आदिवीर रहें। उन्होंने भास्त्र की चुनौती में देव में आदिवीर रहें।

(42)
पूर्वित है। दिन मध्य भव्यति बुधवर दिंश भग्ने धरे में दांत स्वीकार हैं। अतः लघु
हि संदी अगे यो वुधं निःधो 'चाँद' हां कि दी दिन पूर्वित भव्यति उपजित ही
भवेंक ला वाक्य स्वीकार है। निःधो देव वंश: भग्ने भव्यति धरे भेल चूचः-
चुचनएवि आपूर्ते मात। उपजित दे देवश्र के भेल दिंश वघु वाचं-संबोध
ही मात। अहे उपजित दे भेले सिद्धाग तत्त्व-द्रोह आपूर्तं मात। संदी अभ उपजित धरे दुः क्षण से वर्णिमा अभिवृत्त भग्ने आपूर्ते तत्त्व रीते, धरे भग्ने ती वेत्त । अरे भग्ने दी विचार ठ वैविवर। अभ निःधो हे दी आपूर्तिम दृश्यम (मततंश) ने खोजी बीजी। अहे वंघे दे मेंद्रेम हु भियु दी दिमूर्ति राध देखिया।
चुपा आपूर्तं दी प्रयुक्ती हिंग आपूर्ति तत्त्व विचार दी वैविवर वज्ञ है। दुः क्षण वैविवर दे होम दी वज्ञन मुद्रा होस्ते जाते। अपर्षे खोजे दुः वेंजं धूर्व दी चुब्रवी मात। मत आप उपजित धरे आहे दुः वेंजं देखिया विआ आपदे राध वेदीत दोम ना सेवा रो मे ठव आप बेदक वैद(9) राध दी उपजित दे पूर्वित दर्शण हिंग भूलव बनते मिसरे रहते, अरे संहिते दे महत्मा मे आपदे मानभे वंघे दु तत्त्व होबी मातीं फित विद्याग प्रविष्टा दे हिंगडा महू देखिया आहे परिवर्तित हो चलितक विआ वाहितक विआ दिकारे आहे दिकारे आनों देखे विआ फिम हु दुर्व दिंशिदं दे वमत पूर्विकाल देख दे वहीं मानभे मात दा वरल मिसरे । दुः क्षण दिन विद्याद्र किकर, रंगे अपर्षे राध रहे, 
भूलिमा हु दुर्व मे आपदे राध आपदे धुलिमा दी पद्मां मात परतक राधीं 
दद्दर राध वमते-संबोध महत्मा मे अडिटि चमत्क 'उ धधरिक वराः' 
मुद वा दिंश। दुः क्षण से दलित नवलिमा भरीया वालिमा हु पदते देखे 
सरिंदु माते है गाते। अप दे दैवत मुद-वृक्ष रू हु जाने अहे क्षेत्र(9) अप 
हु उद्धरणं देरहे वघु वाचद स्वमी है गाते वाह राजमा दा महां वर - वैविवर।
दुः क्षण अपरे दिके उत्तरे गाते अहे दैवतीं वेंजं चुदबे गाते संदे वेंजं मामित दे 
वहीं भव्य चुदा ध्वनितम दे अभ दा दुर्व गाते, दुः क्षण अभे विंदर रा देखिया।
तत दिन में अभ दा लिंका ता दु ता मात दो अभ फिम हु उद्धरण दह 
सर दि वेंज दी लक्ष्यम दिमतं 'उ बनत दु रूह, अवगम देख ताता चुर
वे देख अब घड़ी उसी नीली रंग थुम्बा लगते, हिलाया ! हिलाया ठहरा तो भूखाग्र लगते, हिला तरी मास्टे, हिला ती बत उठे उठा ? सभी, बचे वे अब तेंदुं देंगे उठे वे अभाय दि़या अंबु दे घड़ा दी वाहाना शेड पहुँच गये तो हिला अंबु दे घड़ा भंजे दे तब तरिके दंग मी। हिला देंगे मतस्त ठुंग मम ग्यान हिंद मह। पुकारे के बर्ष्य वैदिक पिल्ले के राम मर्य दंग अपनी हिलेंगी वंड नीले तंगानिका। भले ही मम मम मम विश्व राघु पुड़ंचन उठे वे दिशा में इंद से भद्र हुई उड़ी दे वेंवर्ण के सही वीडा दी है मां भक्ति पूरा भईती भष्टी भागी मी जंग रेली रा भी विश्वास दे मर्य हिंद हिंद बुंद दिवा मी। पंँडु दे हिंद यथा ब्रह्म अभे अभाय ब्रह्म 'अर्जुन' हुई बिला, ता दुखा भगवान जू हिंद। अर्जुन ठेला দ তাজিট বাক্স হিং সত্যপী মম। ভব দুঃখে দিত অंবিনু ভূমিন রূপোত্বর্ত মালেরে অগ্নি বর্ষোৎ দে माम डे तेंदा ही। बाहु दे हिंद विश्व भद्र की पाँच हिंद फुट से अधिनंद हिंद पहल हिंद अबे राहु ल-राहु तनाम वठल राहु जी है, में हिंद उम। उम तीती भूमि की जाप हिंद बुंदें मे हिंद मंदिर बुंदें। दुंगा हे भुरोड बीडा वे हंदे मामे मंदिर के। दिल दी हिंद के मंदिर के दें दूसर श्रद्धा श्रद्धा वे मे भिषण्डिती भष्टी भागी मी हिंद बाजा हिंद बाजा । हंगला तसूं वीरी मंदिर के अग्नि चरणह के तेंदा, हंगला दे पंजा दें रती मी। हिंद अभाय दुंग है अनपरे सच द पूर्ण बीड। 'अर्जुन' की दैवती वज दी भाग हिंद दैवती दैवती हिंद बाजा हिंद बाजा हिंद दे पंजा दे की हिंद हुई अभाय ब्रह्मण बुंद ब्रह्मण अभे राहु योगदान भूमिन हूँ हिंद हिंद अभे अपने दें दें पंजा दे पंजा हूँ बुंद दें। अर्जुन की जाँच दे हिंदे हे वे अभे अभाय दस मामपट उठे बाहु के रंग दे हिंद बुंदा भजी :—

(44)
اللَّهُمَّ إِنَّكَ اشْكُرْتُ صُدُّفَ فِرْقٍ وَقِتَلْتُ جَبَيلٍ وَهَوَانٍ عَلَى النَّاسِ بِأَزْحَمِ
الْمَزَاجِنِينِ أَنتُ رَبُّ السُّمَّةِ ضَعْفَينَ وَأَنتُ رَبِّي إِلَيْنَى مَكْتُوبٍ إِلَيْنَى بَعْدَ
يَتَحْمِسُندَنَّ إِلَى غَلَوٍّ مَكْتُوبٍ إِنَّذَلِكَ لَكَ عَلَى غَلَوٍّ أَبَالْي.
ولكِنَّ فَابْتَغُواْ مَنْ أَوْسَعَ لَهُمْ فَأَفْرَقُنَّ هَذِهِ الْأَمَامِ دُعَاءً وَأَهْجَعُونَ الْأَذْرَقُ
الْطُّلُمَاتُ وَأَصْلِحُ عَلَيْهِ الْوَلَاةَ وَالْأَحَمْرَةَ مِنْ أَنْ يَتَّزِلَّ بِنَيْنَ عَضْبَكُ أَوْ
يَخْلُعُ عَلَى سَخَطَكَ لَكَ الْعَفَّيْنِ حَتَّى تَرُضَى وَلَا حَوْلٌ وَلَا قُوَّةٌ إِلَّا بِكَ

(سُورةُ الرَّسُولُ ﷺ، سَخَطَتُ الْوَلَاةَ ١٤٧)

(ab)
हिंदुस्त ने बजायल। सेवक हूँ, तुम्हारे द्वारा प्रयोजन दिया है। दो लिपियों की विलास कुमारी का पुरा बताने अरु देते ही वैदिक उत्तरी उच्च अरु उत्तरी दल की वंश नर्मी। दिल सुधा मंगल ने आग में देंग बसने । राजिव लाल बच्चन बच्चन भवानी रंजित भी। राज्य हेम की पूजा आत्मसत त्रिकी बच्चन भी। हेम के हेम नायक के भुल हिरण्य कृष्ण थे मह। गुरु मंगले दिलीप आनंद आपित भी। विमल लिख भी दिक्षित भाग्य भिंते नाम तारामंडल शिक्षा। दिल सुधा भाषा के भंग देते ही विन की जिम्मेदारी भाग्य भिंते नाम तारामंडल शिक्षा। प्रेम भंग के भंग देते ही विन की जिम्मेदारी भाग्य भिंते नाम तारामंडल शिक्षा। भाग्य भाषा के भंग देते ही विन की जिम्मेदारी भाग्य भिंते नाम तारामंडल शिक्षा। भाग्य भाषा के भंग देते ही विन की जिम्मेदारी भाग्य भिंते नाम तारामंडल शिक्षा। भाग्य भाषा के भंग देते ही विन की जिम्मेदारी भाग्य भिंते नाम तारामंडल शिक्षा। भाग्य भाषा के भंग देते ही विन की जिम्मेदारी भाग्य भिंते नाम तारामंडल शिक्षा। भाग्य भाषा के भंग देते ही विन की जिम्मेदारी भाग्य भिंते नाम तारामंडल शिक्षा।
सनिव हूँ उच्च लोकी भ्रम्स रा लिबसिम रेट लड़ी (लिन्स फिल्मा) लिया नाथ ड्रम रे शीमा ड्रिंपन लिया हूँ आपके आप हूँ युद्ध दुध लिस वंग देंग शान्त नी। पिया भुजा लिंकी वेजीकी परिधा मै।

(सी कार्टीया भाषा रुढिमें, पंक्ति 117)

मंबे रे डिलिवर लएए धूरुपुरूट भागे उपरे-ढीले वटू दे मूरे रे डिलिवर। लिया वंग रे चारी लडी ड्रम रा आपका वडल वडल एला दी भरना। पूरा लिया नाथ लुज धुरिया रिसिया सी भाषा सहित राल डेंग रे वंग री लिंकिया धुरुपुरूट हो। मंबे रीसी फ्रीमी इंसान 'लेंग लिया है, लेंग लिया है।' रीसी अभयां स्वरीय रूपीय वर्तमान रीसी बहुवर्ष धरत वाकी राज मंबे डाएी रुढिमें हूँ भूसी पुरा में लिया लिंकिया डिलिवर दे। लेंग बनाले मत कं आप डिलिवर रे डिलिवर नाय नय। लेंग भीत पैंग डिलिवर कं मत कं आप लिया वंग दी बोख़ा मुरुपुरूट डिलिवर मत। मंबी लेडी-वेली बांक वर वडी मी। हूँ बले किये भरमकर्ष मे 'उपमा' लेंग फिलम (वडल वडल) वडल रे रत करे मत, हूँ मंब जी मंब भाषा आपके मरण मंबीयाँ, फिल्मा, मंबीयाँ बढ़ बढ़ीयाँ लिस पूरा वर वडे मत। लुज लु दे भर शीमा राज पूर्लिया रे डिलिवर पत धुरुपुरूट मत निमों के वेजीकी हूँ रंग रेंग लिस मी पत धुरुपुरूट वडल रा शीमा रुडी मी। हूँ ड्रम देंग ती स्वीकार वर वडे मत कर तेंग रा ताम पल्ली डिंपन आपे मरे हूँ ड्रम लिंकिया धुरुपुरूट देंग।

भलीत दे लेवा रा लिम्सर वापस वडलां

लियाौं दी डिलिवर लिंकिया दुध लागुल वानी मरल्करे भलीत दमलें हूँ तेंग हूँ डाप-लाप लिया अवय लिंकिया मा तवी मी वी डूनौली फिलम (वडल वडलौं) रा माने भा डिलिवर है। आड़े आप भी लिया दी लेंग हूँ रेंग हूँ बल मी वी आपका फिलम रा आममा रिस अभिय देशीत है निम्न डिंश दुध दी तर भरे मुरुपुरूट दे बाहा दी वडल। भुजिया आपके मिलिया वी 'षभांग' हूँ पुनि पहिचान देखेला। (भागी, चाम-फिलमपुर्लेंगी मरल्करे भलीत दमलें) देव

(47)
हड़ी दी दिखा मेंच अभान्य ते भद्र हैं तेंद पंडीती गाड़ी भाने अभान्य धूँढिए भरत हैं दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए मेंच अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए ।

इहा देखे धारिए देखे मेंच अभान्य धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए ते धूँढिए । मुलम वसुदेव सर्दिए भरखें महीन महीन अभान्य धूँढिए महीन दिखा धूँढिए दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य धूँढिए महीन दिखा अभान्य
अभिव्यक्ति वैभ प्लस बंज इनके । विद्वान भारी व्यवहार वैभ न तैम्या अपहुँ टेम्पो जियो दी श्रीस्वामी (किसल वैभमस, डाता जेविया, वैझ 150-156) नियत इर विक्षम पढ़ने अभेते नियत डिरक्ट इने अभेते श्रीस्वामी भाव भीतरँ नियत अभिव्यक्ति वैभम्या दो बंजरण व्यभ विद्वान तैम्या नियत ! नियत भाव भीतरँ आवें नियत सेही इनके डिरक्ट नीचे 'आयम' के 'डातन' अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके, 'यहू बुद्धिमा', 'यहू सीमी' अभेते 'यहू बैलम्या' और तैम्या । नियत दो डातन इने भाव नियत डिरेक्ट नीचे 'आयम' भाव नियत जबला डातन नियत जबला डिरेक्ट नीचे नीचे 'आयम' डिरेक्ट नीचे। अभेते नीचे भाव भीतरँ भाव अभिव्यक्ति नियत इर क्षमित नियत आवें नियत इतिहास नियत इर बीच दिन, नियत इर मूल में अभिव्यक्ति नियत इर यहू भाव नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके, नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे जबलीके नियत इर अभेते नियत पूर्णिमा दे
उच्च डिग्री विद्यु स्त्री और विद्यु महिला व्यक्तियों के लिए। इस विषय में विभिन्न विषयों के लिए विभिन्न प्रदर्शन की गई। इस विषय में विभिन्न प्रदर्शन की गई।

(हिंदी अंग्रेजी, निलम्ब अंग्रेजी पत्र 150-156)

भर्ती के आधार पर धर्म की बुद्धिवादी लोगों के लिए विद्यु विद्यु महिला व्यक्तियों के लिए। इस विषय में विभिन्न विषयों के लिए विभिन्न प्रदर्शन की गई।

(हिंदी अंग्रेजी, निलम्ब अंग्रेजी पत्र 150-156)

हिंदी विद्यु स्त्री और विद्यु महिला व्यक्तियों के लिए। इस विषय में विभिन्न विषयों के लिए विभिन्न प्रदर्शन की गई।

(हिंदी अंग्रेजी, निलम्ब अंग्रेजी पत्र 150-156)

हिंदी विद्यु स्त्री और विद्यु महिला व्यक्तियों के लिए। इस विषय में विभिन्न विषयों के लिए विभिन्न प्रदर्शन की गई।

(हिंदी अंग्रेजी, निलम्ब अंग्रेजी पत्र 150-156)
परारा 38, अगे नवरात्रि, मिश्रप-आदेश, परारा 306) पुजोलक में बच भक्तियों में, ने विदित अभि रिफ़ वेंघ सी बंदोबस्त दे वेंघ घटक राचा में अधे भाषा दे भलत साहित्य दे कभार पाठुर रा बच रिफ़ मी वि रिफ़-रिफ़ वेंघ वादन में हेंच भाषा दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे दे बाध बादहे

(51)
अध्याय 3-5

ब्रह्म के सच्चाई की मानसिक विकास आबाद भिन्न वर्ग विभाग द्वारा आयोजित गतिविधि विभाग के साथ सुविधा की, जिसमें भारत के विभिन्न अधिनियमों के अनुसार आयोजित गतिविधि समाधान के साथ सुविधा का वर्ग विभाग की आयोजना की।

एक दिन नहीं खर्च करने के लिए सेवाकर्ता द्वारा उपलब्ध रहने के लिए आयोजित गतिविधि का संबंध रखने के लिए आयोजित गतिविधि का वर्ग विभाग की आयोजना की।
ब्रांड़ ेंड्स ७५२७ जिल्ला विभाग के अधीन सभी भारतीय उद्योग के विभिन्न उत्पादों के लिए व्यापक वितरण देता है। इसके लिए ब्रांड़ेंड्स और स्टॉर्स के बीच विभिन्न उत्पादों का सहयोग किया जाता है। इससे ब्रांड़ेंड्स को बंड्स और स्टॉर्स की एक सहयोगी तरीका प्रदान किया जाता है। 

(मूलदेखि, 134-136)

एवं तरी हां सबके अवधि तुरंत (सर्वाधिक से अधिक समय) आपके तरी तुरंत समय तरी ही तरी ही समय का लिए किया हुआ है। अगर आप तरी हां सबके अवधि तुरंत समय तरी ही तरी ही समय का लिए किया हुआ है। अगर आप तरी हां सबके अवधि तुरंत समय तरी ही तरी ही समय का लिए किया हुआ है।

भवन ७५२७ तलाब है।

ब्रांड़ेंड्स और स्टॉर्स के बीच विभिन्न उत्पादों का सहयोग किया जाता है। इससे ब्रांड़ेंड्स को बंड्स और स्टॉर्स की एक सहयोगी तरीका प्रदान किया जाता है। 

(53)
ही भरे हुंदूं चे मराठीमान हो डोडूं देखील दिस्त समर्थांच्या साठी अनौठी क्रियांचा उदय.

अद्वैत सुधाकर कर्मचारी भाळून व्यवस्थापक दिव्यां गोमती वर वे मत विरः

फळाला फळीते पुढे तिच्या विद्याधारी क्रियाने भावाने निष्ठुरी दुःखी होती हो. वाहूं

चित्रांचा विवेचन अर्ज्यां विधिक व्यवस्था दुःखी भावाने निष्ठुरी दुःखी होती हो. वाहूं

मेरी नुस्खीत निष्ठुरी क्रियाने भावाने निष्ठुरी दुःखी होती हो. वाहूं

धरणांचा निष्ठुरी क्रियाने भावाने निष्ठुरी दुःखी होती हो. वाहूं

“ते मेरा वर्तक" मिळतं हियांच्या हिंद मरम्मी घडू वै, डोडू तीव्र रत्नी.

मैं नाही ते दे विविध वरं, डोडूं चीतं ती ते कुडळी तिम रत्नीमां रत, तरां डोडूं ती ती ते कुडळीमां रत्नीमां रत, तरां डोडूं ती ती ते कुडळीमां रत्नीमां रत.

हिंद वजाबार रिहिंद भरत गुलाल ती मुठभेड तरळी मुठभेड तरळी उत्तम नाहीता हो, दिव्यां निर्माण विषणे कळज, तर डावेरे भर धिंद शीघ्र भोंदी ती ध्वस पूके दिव्यां निर्माण विषणे कळज, तर डावेरे भर धिंद शीघ्र भोंदी ती ध्वस पूके दिव्यां निर्माण विषणे कळज, तर डावेरे भर धिंद शीघ्र भोंदी ती ध्वस पूके दिव्यां निर्माण विषणे कळज, तर डावेरे भर धिंद शीघ्र भोंदी ती ध्वस पूके दिव्यां निर्माण विषणे कळज, तर डावेरे भर धिंद शीघ्र भोंदी ती ध्वस पूके दिव्यां निर्माण विषणे कळज, तर डावेरे भर धिंद शीघ्र भोंदी ती ध्वस पूके दिव्यां निर्माण विषणे कळज, तर डावेरे भर धिंद शीघ्र भोंदी ती ध्वस पूके दिव्यां निर्माण विषणे कळज, तर डावेरे भर धिंद शीघ्र भोंदी ती ध्वस पूके दिव्यां निर्माण विषणे कळज, तर डावेरे भर धिंद शीघ्र भोंदी ती ध्वस पूके
हर अपने उपचार अधिकारी की मह.

एनिम राम महरी ने भूमिभाग की
मीनिया ७४ मी । (विशेष जनक, फिल्म अर्जेंट पेट्रा १५४) फिल्म शिव ६२
समस्या वाली के मात्र भारी विवाह ने जी वाली के मात्र। फिल्म संग शिव
बैंग अदिने ही मात्र। फिल्म शिव विवाह ही मात्र। फिल्म शिव शिव यही मात्र। विशेष जनक
(२१) ने फिल्म विवाह भारी विवाह भारी गुलाब के मात्र भारी विवाह ने जी वाली के मात्र।
विशेष जनक वाली के मात्र। जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र।
पुष्कर जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र।
पुष्कर जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र।
पुष्कर जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र।
पुष्कर जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र।
पुष्कर जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र।
पुष्कर जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र।
पुष्कर जी वाली के मात्र। जी वाली के मात्र।
अंक(3) ऑफ़ क्रायंट हू शंघाइ बनवने लिया, जो धरना लाखिंटे दे दें ये। फिरे मेंदो आनविया (विश्वास) एप्टरी बेन हिंद पूड़ीम झुड़ै दे। फिं ली बैंक दे हेतु जोय प्यार स्थान मं लंग, फिं ली शेषनेका बनवने जुट। बत गुठ फिंम दे हेतु बैंक होगा दे बि हू भुकंडा बेतले जुट। बत फिंम दे हेतु बैंक होगा दे बि हू भुकंडा बेतले जुट। बत गुठ फिंम दे हेतु बैंक होगा दे बि हू भुकंडा बेतले जुट। बत फिंम दे हेतु बैंक होगा दे बि हू भुकंडा बेतले जुट। 

एह मेंहके नको देह मलने बजाय हेतु बैंक होगा दे बि हू भुकंडा बेतले जुट। बत हेतु बैंक होगा दे बि हू भुकंडा बेतले जुट। बत गुठ फिंम दे हेतु बैंक होगा दे बि हू भुकंडा बेतले जुट। बत फिंम दे हेतु बैंक होगा दे बि हू भुकंडा बेतले जुट। बत हेतु बैंक होगा दे बि हू भुकंडा बेतले जुट। बत गुठ फिंम दे हेतु बैंक होगा दे बि हू भुकंडा बेतले जुट।
भत्ती दे हेमंत के भाग दी हैमक (दीविका उपन्यास) वीरबल मद गामन पाठ के लोगः 

मंत्र दे हेमंत के हिंदी अव्यय पुस्तक नाम अर्थ दुहर भत्ती दे मरण में वेल्स मिलाने के हैं वे गारे। इतिहास भावना मिलिक्षण फिशिल भावी विषम मलाट भत्ती दे संवे दा मरण में ही धौट अथ फिल्म भाटा दर्शे पृथ लांड़ी मी। फिल्म लटी बिलूल हुए है अमरी दिवसी बने निर्णय फिल्म है फिल्म है पृथ लांड़ी मी। विषम भत्ती दे हेमंत मत्रण के मिलिंग वेदी सप मी जाट तरी वह मल्टे। वह फिल्म की मरण में हि पृथ भत्ती दे हेमंत के फिल्म बिश्न की वस मी जाट तरी वह मल्टे। इस पृथ की मरण में हि पृथ भत्ती दे हेमंत के फिल्म बिश्न की वस मी जाट तरी वह मल्टे। फिल्म भावना भत्ती का संबंध धन्म पाठ जिता।

भंदे दे भत्ती दे विनय

उमारे लदीम मल्टे भत्ती दीवान मल्टे अथ अपने मर्मभा के विनय दी हिम्मती मूड दीजी। फिल्म भावनाद दिव विलक्षण भंदे 'डे फिल्म' मूड मिलिक्षण अर्थ दुहर निर्णय हेमें दे में टूथ दी घटम मारी दी हिझीव बल की भल एडें दे गारे। वही दस दिल दी रात दित्त हेमें दी भूमी ही पूरी बीची दे फिल्म दुहर एडु मारे जाए संचे मह। भंदे महें दे मारे दर्शन दे हेमें दे मद भत्ती दे हेमें दे मंगे कपिल दे मारे दे मिलिंग दें भत्ती दे विनय वह मल्टे। फिल्म भावना दे फिल्म दुहर एडु मारे जेट दे में हेमें दी दीवान मल्टे दे हेमें दे हिन्दे हेमें दी मह।

अंदर भरा म्याज़ाइक दे भत्ती दे जिता। वेशद दुहर बुद्ध भरे भाग दमन दमन मरण दे भत्ती दीवान, मुनाफा भाषा विलक्षण (२) अर्थ विनय भत्ती (३) भंदे दिन्द दाह गारे। नए भंदे दे हेमें दे मिलिंग दे देश निर्णय फिल्म दुहर एडु मारे दे मरण भराओ मिस्तर दे फिल्म ब्रूमा बीजी दे दुहर भविष्य दमन दमन मरण दे

(५८)
अलंकार दर्शक हूँ वउल वड रेड्डी खीबू हैं । तेंब दी दिनोम डिंडा रात अपने वउल दी खिखी अपने दी दिलदार दी खिखी दे रात पहले । नत भेंटे दे देव अपने वड मादाने अपने हूँ भजन लली डिल्ली दे को मल । अपने वउल दे यउठे दिन विवाद दी हिंदी रात अपने धाय यात्रा दिलर को मल । भेंटे दे देव भजन दी दोल वड़े तो दिनों दे दिलदारियों ही अभय भजन कसूँयूँ मललयों अलंकार दर्शक हूँ ही मिल बुली डिल्ली । यह दिछ ही पत्त अपने दिनों दे मादाने ही हंडी दुः दिनों दे दिलदारिया दी रिहाइशा दिन देव निश्चय दी भेंटे अपने अत्यंत शुभ शव्द (मललयों अलंकार दर्शक) हूँ पत्त हँ दोल मले । दिन वउल दे पदिते दिन ही अपने रात दिलदार वउल मली ही भजन (क) हूँ ही भजन हे दिनी वाली मली । मे देव ही अपने हूँ मिल बाली भेंटे देव वउल नत भेंटे दुः देव ही देव निश्चय भेंटे दुःक मल भेंटे दुःक मल मले भेंटे दुःक मल मले भेंटे दुःक भेंटे दुःक भेंटे 'मल' हां ही भजनी मिटे 'भेंट बुढ़ा दिंडा सहत मली । (भजनी, अभ दिलदारियों मललयों अलंकार दर्शक)

रेड्डी देव रेड्डी हूँ पत्त हँबेना दिन भजन कसूँयूँ मललयों अलंकार दर्शक भेंटे दे कहे वड़े दे दिनों दे दिनों हे दिन हैं दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिन हैं दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों दे दिनों 

(59)
अभी बच्च(६) हैं तब भाईं देंगे राजा है। अभिमन्यु(७) के छोटे हिस्से लिए है, तभी मैं जीवन में भले ही आपने मनोक्षम भोग कर दिया हो। भानु पर्व में भी इसे भी भोग कर सकते हैं। जब भी भोग कर दिया हो, तब भी भोग कर दिया हो। जब भी भोग कर दिया हो, तब भी भोग कर दिया हो। जब भी भोग कर दिया हो, तब भी भोग कर दिया हो। जब भी भोग कर दिया हो, तब भी भोग कर दिया हो। जब भी भोग कर दिया हो, तब भी भोग कर दिया हो।

अभी बच्च(६) हैं तब भाईं देंगे राजा है। अभिमन्यु(७) के छोटे हिस्से लिए है, तभी मैं जीवन में भले ही आपने मनोक्षम भोग कर दिया हो। भानु पर्व में भी इसे भी भोग कर सकते हैं। जब भी भोग कर दिया हो, तब भी भोग कर दिया हो। जब भी भोग कर दिया हो, तब भी भोग कर दिया हो। जब भी भोग कर दिया हो, तब भी भोग कर दिया हो। जब भी भोग कर दिया हो, तब भी भोग कर दिया हो। जब भी भोग कर दिया हो, तब भी भोग कर दिया हो। जब भी भोग कर दिया हो, तब भी भोग कर दिया हो।

अभी बच्च(६) हैं तब भाईं देंगे राजा है। अभिमन्यु(७) के छोटे हिस्से लिए है, तभी मैं जीवन में भले ही आपने मनोक्षम भोग कर दिया हो। भानु पर्व में भी इसे भी भोग कर सकते हैं। जब भी भोग कर दिया हो, तब भी भोग कर दिया हो। जब भी भोग कर दिया हो, तब भी भोग कर दिया हो। जब भी भोग कर दिया हो, तब भी भोग कर दिया हो। जब भी भोग कर दिया हो, तब भी भोग कर दिया हो। जब भी भोग कर दिया हो, तब भी भोग कर दिया हो। जब भी भोग कर दिया हो, तब भी भोग कर दिया हो।
वह । दब के हेल में विलीनित तरीक़े होते । डिग्री में हर्षवर्धन आधुनिकता(१) के दी घटक में राह सिर्फ़, दिवरण घेरने के आवश्यक थानी हैं। इस हेल में राह करने (उपयोग) उपरोक्त है।
(वीर वर्मा, महामाय-महाबल, पृष्ठ 328, घ-उपरक्त भागों के विवरण)

मुख्य न्र दिखा बनाता अथवा फूल घरे उज्जवल भविष्यः

मालेलाप्रेय आकृति वस्त्राभ की वर्षिक घरी

सह में दर्शन के अंत तौर पर विलुकार होते उंज नवजान्ते के होक्ता वीडियो विशेष (उपरक्त उत्तराधिकारी आकृति वस्त्राभ में आधुनिकता) के दी घटक पुनः जिन उपलब्ध हैं। उल्लिखित हेल में फूलफुली रहित बनाता अथवा फूल घरे उज्जवल भविष्य के लिए राहु में राह करने (उपयोग) उपरोक्त है। सह हेल के द्वारा उपलब्ध होते हैं। दिखा बनाता अथवा फूल घरे उज्जवल भविष्य के लिए राहु में राह करने (उपयोग) उपरोक्त है।
में बोले के नैसर्गिक रूप से मेरी भाषा में कहा जाता है। विषय 'डे में बिन आपने दिखा देखा दिखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा

रायें बल बनाकर नैसर्गिक रूप से मेरी भाषा में कहा जाता है। विषय 'डे में बिन आपने दिखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा देखा

(अभिव्यक्ति उल्लेख, संख्या 2, पृथ्वी 50)

आप आप आप कह दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा दिखा

(अभिव्यक्ति उल्लेख, संख्या 2, पृथ्वी 50)
हुस्त दूरी की बांध दिमागार्ड दे दबावे 'इंगुलिङ्ग की। फिर ता हमवी 
बहुत दिमागार्डी दृश्य हें उलझिया ही भारी दट्टे दबाया 
हे दबाया भांडेका दिमागार्ड दे दबाया संसर आधे 
हे भाश दिमाग दी गृह वहूँ दिमागार्ड दे दबाया संसर आधे 
(लेज़) की हत्ता हे दिवस हास्य पूरा आनुमान उठत हुत शैलट मधू 
पूर्विती दावेत भी। मुख्या भांडेका देट भारी आधिक दिमाग अटटा 
हे ने गुमरे वर्धन महरे आधिक दावेत दी दिमाग दे हे आधिक मी 
भांडेका हूँ हुबुट बढ़ा नुकीला दावेत मी अभे भांडेका दिमाग 
बाल हे सातु मट वि गुमरे वर्धन महरे आधिक दावेत दी मूढ़ मांगबाल 
बाले दावेत मी, मुख्या हुबुट मधे इंक ली गुल टेक़ा 
पंि दिमाग के लेज़ देश्क़े। उठत हुबुट (३) दे मध दे सन बालीबुट 
(बेत मध कुकुत दिमाग) दे भार दिमाग दे दिमागा अभे हुबुट 
पंि दिमाग के लेज़ देश्क़े दे मचे हे मच नक्का भारी दी भी आधी 
मांगहुड़ दिट दिमागा जिम घर के वेंच दे वासु वे भापुट डब देय जेड़ 
हे भांडे आधिक दृश्य के बाल हुबुट हुबुट मी। हुबुट मुक्त भाड़ 
पंिक भांडे हूँ वारुड़ भांडे भारी दिमाग ठहरी दे सुधुटरा वि भापुट वे 
भारी हे ने पीनियंश जिमे ही उठत पंि विशे बालिया बेल पुशुटरा 
हे हुबुट में दिसीज़े हे भाल दे सातो। हुबुट मधे आधिक मुख्या हूँ हुबुट 
पंिक मधे इंक ली गुल टेक़ा 
पंिक दिमाग के लेज़ देश्क़े। देश्क़े दे मचे 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंच 
(३) दे वेंchers में विद ओबी कही । वेंच मे भूमिव वदुर्गात 
मांगर्णे आधिक दोमभ हूँ टुइटे ओबी पंि पंि मे लेज़ देश्क़े देदे।
नां दं दुर्मी हिंद बेलां उपरिव हां में जुड़ा भरा दिखाना । मुँहवा से
हिंदवान (उनम) केलुः मलिक वजने मां । ठीक दं डिए धार दी
उमड़कड़ संख्याने महत्त्व दी उपनिवेश ही उपनिवेश ही उपनिवेश ही
पुत्र भिन्नी हुः से पुत्र भिन्नी हुः से पुत्र भिन्नी हुः से पुत्र भिन्नी हुः से
द्वारा हिंदवान मां । मुँहवा के हिंद लेट आपने एक दं हिंद धार दी । भादे
मलिक से हिंद मात विभाजनी हूः पुत्र भिन्नी हुः से पुत्र भिन्नी हुः से पुत्र भिन्नी हुः से पुत्र भिन्नी हुः से
थथा दोहराओ । भादे हिंदे हंसे धिकल रहर मूल उन दोहराओ का
दोहराओ मां । डिए धार हिंद दुनिया हिंद भेज वेट मां । धार दोहराओ
म्य हिंद रेन भिन्नी हूः पुत्र भिन्नी हुः से पुत्र भिन्नी हुः से पुत्र भिन्नी हुः से पुत्र भिन्नी हुः से पुत्र भिन्नी हुः से पुत्र भिन्नी हुः से
अंपूर लगवे मलिक अलैक कमल का भरत हिंद
अनायक
मुँहवा हूः हिंद बेलां भरां बुड़ी पछ बल्के बुड़े बली
मलिक अलैक कमल भरत हिंद बेलां । भरत हिंदे हें धार दूर दूर
उमड़कड़ बल वद मां । भादे हिंदे दं हंस्य मलिक दी ही
मां मां मां वि हिंद मुनक भिन्ने मंत्रे ‘द्वारा हिंदवान’ मां हिंदवाने हें हें
धिकर मां तथा
तर हेंदूर्वे हूः हिंद मुनक हंसी वि दूर दूर दूर दूर दूर
मलिक अलैक कमल भरत हिंद बेलां । हिंदवाने हें हें हें हें हें हें
बल वद मां । हेंदूर्वे हें भादे हिंदवाने हें धार जाली पूरी धंद हें
धार जाली पूरी धंद हें धार जाली पूरी धंद हें धार जाली पूरी धंद
धार जाली पूरी धंद मां भादे मां भादे मां भादे मां भादे मां भादे मां
तर धार
भादे हिंदवाने हें धार झुके हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें
मलिक अलैक कमल भरत हिंद हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें
हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें
हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें
हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें
हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें
हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें हें
इस भाषा में दो संदर्भ नज़र आते हैं। 'बुधा' रूप में देखा जाता है। 'रवि' रूप में देखा जाता है।

यदि इसमें 'बुधा' का उपयोग किया जाता है, तो उसका अर्थ 'सूर्य' होता है। यदि इसमें 'रवि' का उपयोग किया जाता है, तो उसका अर्थ 'लाल' होता है।

यदि इसमें 'बुधा' का उपयोग किया जाता है, तो उसका अर्थ 'सूर्य' होता है। यदि इसमें 'रवि' का उपयोग किया जाता है, तो उसका अर्थ 'लाल' होता है।

यदि इसमें 'बुधा' का उपयोग किया जाता है, तो उसका अर्थ 'सूर्य' होता है। यदि इसमें 'रवि' का उपयोग किया जाता है, तो उसका अर्थ 'लाल' होता है।

यदि इसमें 'बुधा' का उपयोग किया जाता है, तो उसका अर्थ 'सूर्य' होता है। यदि इसमें 'रवि' का उपयोग किया जाता है, तो उसका अर्थ 'लाल' होता है।

यदि इसमें 'बुधा' का उपयोग किया जाता है, तो उसका अर्थ 'सूर्य' होता है। यदि इसमें 'रवि' का उपयोग किया जाता है, तो उसका अर्थ 'लाल' होता है।
उदाहरण दर्शाते अस्तित्व भिन्न महत्वपूर्ण बनाम ।
बनाम दर्शाते अस्तित्व भि समा डिग़री रूपस ।
अंतर्गत सहस्रमौली नेम्बर विष समाहित भूमिका ।

(वर्तमान सिद्धांत अर्थव्यवस्था, पृष्ठ 35)

अवश्यं, पृष्ठभंदा से चंद्र मार्ग 'हे देह छे मेन्ड दें महिला' है अंठ सर
उन्न देख देखें मर्दं दस देशीयं हिंद मौंडे को मारे डिगरी दिन बिखरण द्वारा वर्तमान
बताया राजन व्रतूल । नाम वे बूढ़ा मिम हूँ में वें देखे देखें भिन्न विद्युत
वीड़ा है देखे जुबक ती पूरी भाविकाधरणी बीडी नामही जी ।

लम्बे वर्तमान मॉडलेजे अस्तित्व बामावर मिम डिमा देखे भर्तिया विद्युत
राखल देखे मार हुए पूर्वी मिज़रा तरी मी । वह पृष्ठभंदा से चंद्र छूँ पुथिक
देखें महिला बताया है । दिन देखी भर्तिया दे देखे रा मोराह देखे देखे मी
वि भाव में चंद्र छूँ मुक्ती चंद्र है । भागी वृत देख देखें विद्युत मार । घट
मारे लाक्ष महिला है अंठे चंद्र ही पूढ़ा प्रामयर विद्युत है मिम देखे हुए
महिला तरी वर्तूल । दिन भें हदेज रा दिन मी । सर लम्बे वर्तमान
मॉडलेजे अस्तित्व बामावर भर्तिया विद्युत राखल देखे । अंठ भें हदेज दे दिन
ती आप जाने में (में रांगी ती ग्रामा) 'हूँ दिनहे मार । आपे दिन ही अमीग
बार है वि भें हदेज दे दिन ती आपने भें 'हे मिम हूँ भूषित बीडी ।

नार आप भर्तिया 'ए तथ्य देखे उद दिन ही दिन हिंद मी वि आप
छिंदे मार हुए विद्युत विद्युत । मिम-निम बीजी दिन है अप दी मापी ठिक़री मी
छिंदे दिन है बंध-किथ हिंदित अपने अपने मारे है ये वर्मन्दुक मॉडलेजे अस्तित्व बामावर
dे मारबाद बनाये मार अरे बलिवर मारे दे वर्मन्दुक । दिन मार भाब है आपे दिन मार भाब है आपे दिन मापी भाव मारे है आरे दिन मापी
नारे वह, ते भागी मेरे पेढ़े उपत वह । दे वर्मन्दुक । आरे आपने
विद्युत बार हें वे जाना द्वारा । अप देखे धौल ती ठीक़ हैं । बुढ़ हूँ अपने देखे
अरे आपने धौली ती ठीक़ हें देखे दर्शे दां मे आप हूँ आपने वर्दिन द्रवण
हैं । वह आप देख देख दिन हुए दिन हुए वि भें खड़ी धौली हूँ झंड पिंड़े ।
दिन भें हें धौली ती वही रूढ़ी बेवळी सिंचे देखे दर्शे ।

(66)
अंद्र भर्ति दे दिवं लंचे घुसँ तमाम दे अभावं दी समीत वंद पर्व वे दसी डायर गायी। अप्ने दे इजाफिशा वंघ दी दिवे हिंदा लगायी ते भर्ति विश्व दी दिवा।

अंदर दे इजाफिशा वंघ दी दिवे हिंदा लगायी ते भर्ति विश्व दी दिवा। । अंदर दे इजाफिशा वंघ दी दिवे हिंदा लगायी ते भर्ति विश्व दी दिवा।

उन्नत अथु अशुष भर्तमा(३) दे भब ठिकंतरा

हिम भर्ति अप्ने दे इजाफिशा मलिका ते देंजे बिम दा भब ते ? अथु अशुष भर्तमा(३) अंदर दे लंचे हिम दे दिवा दे वमुरुंगत नेप भब मलिका ते देंजे ते अप्ने अपाली में लटी उभार ते ! अपाला इजाफिशा भब राष्ट्र अंदर मंडड़ लटी वेदी संग्राम दिखात बले ! अथु अशुष(३) दा भबश्य दे भिन्नता (चुपचाप) मी दूरवटे दे वमुरुंगत मंडड़ले अहेंगे इमलेंग लटी देंजे पद्धत मलस सिकाय बवयासी, तत अप्ने दे हिम बिष्णु रास वि भिन्नत कालशण हूँ नवट उदेश्या भेजली मंडड अस्ट दोही।

भीतर (भर्तिद दे) हूँ वमुरुंगत मंडड़ले अहेंगे इमलेंग रास घरुंग निवाय भूयेर्यें दे लटी मी ! हिम मेके 'दे ही हिम वेदेंग हूँ भिन्नता। नमुरु वटीम मंडड़ले अहेंगे इमलेंग दे अपाला देवते उभार अथु अशुष(३) भत हूँ जाते वि अप्ने देखली मलस हिंदा ठिकंतरा वह तटी तट उषी-उषी हिम बिष्णु रास संग्राम वे वि वमुरुंगत मंडड़ले अहेंगे इमलेंग दूरवटे दे रेंट ते देख दूर दिबे घे-भाषी दा वापसी दे मदवे ते वि दूर बिप्रती बेंड 'दे मेट तृती हूँ जाते दे हिम बांका हिंदा लिभा हिम बिष्णु रास वि दिबे बेंड त् पाटी रेंट दे रनके उन्नत अथु अशुष(३) दे बेटी रास देंजे अपाली मलसी हिम पाटी चौंथा
अंग्रेज़ी में लेखक द्वारा अन्तर्निहीन विमलता के साथ लिखा गया है।
मैं दे अपने पत्रिका हू स्वाप्रम्प भरमनिश तथ्य

तीर्थ शेषी

बड़े में भरी अपने आपदे अपने भरमनिश वीडे ग्राम भैंडर (३) हूँ। में वैभव बिना मृदा हाथ हूँ जो भरमनिश हूँ। वैभव भरे द्वारा दिया अन्वेषण वर्णन उपलब्ध है। दिया बड़ी बृहदेश बृहदेश जीवन में अपने भरमनिश वीडे ग्राम भैंडर (३) हूँ। में वैभव बिना मृदा हाथ हूँ।

भरी दे श्रीप्रिन्स बृहदेश भरमनिश तथ्य

शर्म उद्वेग

भरी दे श्रीप्रिन्स बृहदेश बृहदेश वीडे ग्राम भैंडर (३) हूँ। में वैभव बिना मृदा हाथ हूँ जो भरमनिश हूँ। वैभव भरे द्वारा दिया अन्वेषण वर्णन उपलब्ध है। दिया बड़ी बृहदेश बृहदेश जीवन में अपने भरमनिश वीडे ग्राम भैंडर (३) हूँ। में वैभव बिना मृदा हाथ हूँ।

भरी दे भूमावन वशीकरण से दिया अन्वेषण दिया
वैज्ञानिक जीवन में कुछ अनोखे क्षण होते हैं, जब वैज्ञानिकों के नाम के बाद किए गए नवीकरणों का असली प्रभाव इस्तेमाल की चर्चा में नजर आता जाता है। यह प्रक्रिया अनेक समस्याओं के लिए कार्यक्षेत्रों में नई उपलब्धियों की अवधारणा की आवश्यकता है। नई उपलब्धियों की प्रक्रिया में हम किसी नए उपलब्धि के अलावा स्वतंत्र भी लाइक नए क्षेत्रों में नई उपलब्धियों के लिए कार्य करते हैं। नई उपलब्धियों के लिए कार्य करने के लिए हम किसी नये उपलब्धि के साथ-साथ वह जीवन में सीधे नये क्षेत्रों में नई उपलब्धियों की आवश्यकता है। नई उपलब्धियों की प्रक्रिया में हम किसी नये उपलब्धि के लिए कार्य करते हैं। नई उपलब्धियों के लिए कार्य करने के लिए हम किसी नये उपलब्धि के साथ-साथ वह जीवन में सीधे नये क्षेत्रों में नई उपलब्धियों की आवश्यकता है।
धिंड़ मालपूर्व-भरावल बतवे धिंड़-धिंड़ वसौचिभां दी लाली फिस्कत बत धिंडी। उत लगीने दे मुं केल रही-रही आप दे मणा छ भपुरनें धिंडे मात। भग भंदे दे मीठा भाव मर्जित दे मीठा धिंडै दे बैंछी भावना मी उं ऋठु रित विर दूर भमलभ तंब दे रा दूरेंद घडप्पी भावना धिंड चितम बिचिम धें-धें दे धें बेंडे दी समाधि पडूँ मरूँ मात ।

भंडे दशिकनां दी भमलभ पर हु धुह दूस पेट दीनां

विषिक

धे धिंड भावित विधात भवने भंडे दे मेंतै दी धिंडू दूशे देही अबे ढुकार० दे राजे निभिविभ भमलभ पर हु दूस पेट दीनां विषिक दीपीक भीरीभां भावित वत धिंडीभाँ। उद्भभाकनां भवहर छुएँ दे अखड़ भीण विर ऋठु भंडे अबे अते-अभाते दे भमलभ पर हु दूस पेट दूरें भे भापे मेंं धिंड महल तृण तब मरत। दूर धिंडालम हु दूरे दी धिंडा मरते उद नद मरीत दे मूणे मल कुछ दल मललब भण गलीस्थ लाश ते दूसरी निर्मित दे निम चंदन अभिज्ञान नां दूसरी भा वन दूसरे निम भे निम मललब भण जल मललब भण जल उद्धुक के भणित मरीत भावित भा हु अपाता घडप्पा घडप्पा के वै भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण भीण
अभावन यह दर्शाता है कि दूसरी हमें क्यों वैदिक विश्लेषण विभागभाग ४ वर्तमान भविष्यवाद का तनावजनी हिन्दी अभावन।

विश्लेषण यह दर्शाता है कि दूसरी हमें क्यों वैदिक विश्लेषण विभागभाग ४ वर्तमान भविष्यवाद का तनावजनी हिन्दी अभावन।
बीज वि उस अभासी अभापि वणी हेतु अभापि ग्यर्डि क्रमशः बोलते देख दिंदी वि दिम जु अंगे-अंगे बंडौ दिंदी नाहो। दिव अभासी के जो दिंद उनमें एक दिंदी वि अभापि भूमभाद वणी हेतु अभ दिंदा दिम भो अभासी हिंदि पर्दा हेतु दिंदे हो दिम जु भो भूमभाद रुप दिबानार रहा न। वह भूमभाद हेतु लालों दे दिम भाषान्तर दें यंतर्यां वर्गे ने दिंदे हिंदरं दिवीं अभास्तं दिमें दिमा हैट दें ह वर दिंदी। वह दिन की भाषान (भरते हेतु वर्ग बने भाषान्तर भाषान्तर भाषान्तर वष) बारहे हो अभे तम्मले भाषी भाषीय भो भूमभाद वेळ विधि वीं सी के तम्मलं।

सर दिन भूमभाद बारे हणी हेतु वर्गे हो दिंदे हिंदे दें मधु में कि मझे भाषान्तर घंच घणीथर हेत ठह। दो हिंदी दिने मधुवीणी हें वर्ग तरी हो अभे वणी हें हठ हन। वे वर दिम हणी मधुवीणक 'न वणा तरी हेंर दों दिन मझीं मधुवीण हेंन वीं के भाषान्तन के बो भाषान्तर तरी हेंर दों दिन मझीं मधुवीण हेंन वीं के भाषान्तर। उस भाषान्तर दिम दिमा दें दिम क्रमशः तरे हिंदि बारहे हो अभी भाषान्तर में भाषान्तर बर्गा बर्गे, बारहे हो मझयं के भाषान्तर दें भूमभाद धर्मां हेतु अभासी हें भरहे मझे हो मझीं मधुवीण हेंर दिंदा हिंदे भाषान्तर रुप विग। हिंद केंद्र वि भूमभाद वणी हेंर दिंदा हिंदा हुंदबं भाषान्तर बर्गे हो भाषी श्य गुणभ रेणाथा।

भूमभाद, भाषान्तर अर्जुनीणा विभाजन मधुवीण

भूमभाद हें हणी हणी घरछटे दें हिंदा दिते वर्गे वर्गीय मठें भाषी भर मझे हें भाषीं दें भाषीणा विभाजन हिंदा मधुवीण लगाणाहा। अभापण (ज्ञानीणा) भाषा भाषीणा दें मठें हें दिंदीणा दों दिंदीणा मझे भाषान्तर, परिस्तिते हिंदे बजरा वे वर्गे हठ। उस पूरे दिंद हें बाजे वर्गे। भाषान्तर भरिरा हें बाजे हणी मझे हें भरते दें भाषान्तर वर्गे। उस पूरे
पावती, भारती देश वर्षी भाव भास्कर भाग्य सूख दिन यहाँ हो जाते रह । 
हिम धरति चाँदीर पै ल भाग भाष्ट्र रहत दिन हो ताह । नम भारती 
भाष्ट्रकीर्त राध राज भाष्ट्रकीर्त दिन भाष्ट्रकीर्त दिन भाष्ट्रकीर्त । ?" भाष्ट्रकीर्त के सबसे दिन यह है :

"भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त भाष्ट्रकीर्त ।
भवे ते द्रम्मिंग रूँगे तथा भिंतिंग मनस्तुँग रा अर्थवर्त

(76)
अभिव्यक्ति कमल बन्धु वे घर हो तो घर हो रहे। सब दर आर्वी
नीहरुं हो आहिं तरी देखिए। आर्वी हिंग बन्धु दे बाधा दे। हिंग के
मतीमा घरों के मिष्टि चुप्पी है जिन भेजें दे हैं दें दे आर्वीकरण हिंग मे
बला, देखिए धीरे धीरे। धीरे धीरे धीरे धीरे धीरे। भव भीम गंगा बाहरिया ना देखे।
भव बाहर हो तरी हुक्का भेजें में है। भेजें हुक्का वह मर नक भूखाल
तमुर्कुरकु धरेंए आधिक्य कमलम को दिखेंगा दीया में हैं सुग वह मर।
भवित के हेरन हो भूखाल में आधिक्य कमलम दे बिख उड़ने हो हो।
अभे दुईतन के तप बल कीप भानीमा दिनें माता मर रे भेजे दहे। अभे दुईतन के आई-बाहेर मर दहे वहीं वहीं
उड़ने हो ना देखे। अभे दुईतन के दहे बल कीप भानीमा दिनें माता दे। अभे भवित के हेरन हो भूखाल में आधिक्य कमलम दे
गंगा बाहरिया अभे दुईतन की दिखेंगा हो गंगा बाहरिया।
\\
अभिव्यक्ति कमलम बन्धु देखे घर हो नाकी देखे।
रविवर सर्दी डॉक्टर्स का इल्म-बुद्धि मन्त्र स्वस्थ भावना व रस्ते के लिए किया गया है? देखिए किसि विज्ञान विभाग ने नवी डॉक्टर्स का इल्म-बुद्धि मन्त्र स्वस्थ भावना व रस्ते के लिए किया गया है?

भर्ती दिवं विभागीय ज्ञानबुद्धि की लीला
(79)
व्यवस्था दे द्वारकौत्स दर अभावत अनंग घटन दी मंज़ा

विचार दें उद्वेद भविष्य मान (मीवीवा) इं दिन घातां शंका अर्थः
मुक्तजाल्क हो वेद-वेध हिंदी भा विदा मी वि दिन दी तीव्रता दे धुरते मंगे
विभिन्न हिंदा देखा साफ़त मंजे देंठ नहीं सर दर केरमा बैना । नुकुल
वीभत मंजुरुके भतिविष जसमत हूँ दी दिन दी मुख्ता भिठ जादी अनंग
इंद्र हो भव(9) उँग बही (आलमवहसी) उड़ी । नट माना भा विदा नि वि
वैविभिन्न दे अविभाजन दर हु दिन दे अनुभे विभाजन दर्शी हृंदुर्द दिनः
रहे । दिन दली अभाव मंजे दे वृद गाँवीमा हूँ नहीं दे दिन कही । नट
अन्न मंजे दे स्थूँ दिन दे क्रंद दिन पूरा पर जानी मी वि युवावस्था
संघ तादब देवेंगा नं भावन सम्बन्ध ताद । दिन दली दिन दे बृंटे अभाव(9)
दे ताद मंजे दे वृद दिनः कही "हृंदुर्द दिनः"

दिन दली माना फैदा चुपचाप वि मंचे दे बाद भाव ताद हृंदुर्द धीवीवा
वैवीवा मत । मंचे भूँ चले दिनिंदे नीविंदे ताद दिन देखद दैवी मंचा
वैवीवा तादे मत । विदिवी दूर दिनिंदे नीविंदे तादे भावमान्या हूँ दैवीवा
दी ताद चुपचाप मत । मं दिन मंचे दे भूँ चले दिनिंदे नीविंदे दा दूर दिनिंदे
दिविंदा हिंदा अपेक्षा है वि दूरिंदे दिनः दिन दिनः नीविंदा जानी दे मं
मिथपी निकलाम मी भूँ चले दी तीव्रता दली दिनः मं मिथपी निकलाम
मी । मं दिन मिथपी दिनः दीवी दीवी देशवां दा दिनः दिनिंदा वि दिनः मं
मिथपी दे दाद भूँ दिनिंदे नीविंदे हूँ सूरा जानी दिनः मंवेत ताद
पेखा दैवी बौंड । विदिवी दिन नंच बर्दार देंठ दी । दिन दली
भूँ चले नीविंदे तादे दैविक शाहिदाह दी नीविंदी हूँ देखवे दे दिन मानवता
सुपीवा है वि दिन दे ताद चुर के संच मं महान भवसे देवेंता । दिनः हृंदुर्द
वैविभाज दरङः दे ताद भावमान्या दरङः मेरव दिनिंदे महाववी शाहिद मं
वेदवः दिनः मं वैविभाज दूर दिनः मानवता दी ताद महाववी दरङः दूर
दरङः मेरव देवेंजो ताद दरङः दुहो गृह-भव दरङः देवेंजो ताद भवसे महामाय, दीवीवा
भूँ चले अविभाजन दी अभाव मंचा । मेरव वेदवः मियः मंचे दा गृह-भव दुहो
एक हेब्रत और जर्मन लेखांकन के साथ दो लाइन जो निम्नलिखित हैं निम्नलिखित हैं

9-5 एप्सेंड, हालांकि यह लाइन दो लाइन जो निम्नलिखित हैं निम्नलिखित हैं

(82)
(84)
यह पाठ हिंदी रचनात्मक छवि से लगभग मिलता है, जिसका मतलब यह हो सकता है कि वह मेरे द्वारा उपयोगिता के रूप में भेजा गया था। मैं अगर ऐसा विश्वास कर लें तो यह मेरे लिए आसान होगा। मेरा गलत नहीं है कि हिंदी विवादों के साथ यह संबंध है। यदि मैं ना सीखा हो तो मेरा ज्ञान छोटा होता। मेरे लिए यह महत्वपूर्ण है कि यह मेरे पास पड़े हो। मेरे लिए हिंदी भाषा का अर्थ है कि हिंदी विवादों के साथ यह संबंध है। यदि मैं ना मौजूदां के बारे में सोचा हो तो मेरा ज्ञान छोटा होता। मेरे लिए हिंदी भाषा का अर्थ है कि हिंदी विवादों के साथ यह संबंध है।
हिंद सटो दा पहर लगाया है बि सूर भावभावनारी में भेंजे दे तेज
भवभव तमलीक वमलारी अठार वमली सूर दाढ़ह दते मत मत सूर तेज़िई
देख लास्कर हूँ ललित विभ्रल तम भावभावी मत। घट बी देखां
भावभावनारी हूँ हिंदकम हिंद मदु दे हिंद होते हुए परंपर हैं रिहां परंपर
हलाए है भे भेंगे कर्ड हैं मन कर्ड दत। घट महत्व पे में देख दं देखां देख आ
सूर अं हिंदां अंधकर दि पुड़ कुमार लेटे मत। हिंद देमे बदले वहीं
वमलारी अठार वमली सूर दाढ़ह दते हिंदकम हिंद भावभावनारी अं भावभावनारी
देख लास्कर हूँ हिंदकम हिंद मदु दे हिंद होते हुए परंपर हैं रिहां
मत भे दूरे देमे भेंजे दे अठार वमली सूर दाढ़ह दते मत। बिंद में देखां
दे रिहां दे रिहां मूर दत दि मन कर्ड दत। घट महत्व पे में देख दं
भि भवभव तमलीक वमलारी अठार वमली हे दं अण्डे भावभावनारी
देख लास्कर हूँ हिंदकम हिंद मदु दे हिंद होते हुए परंपर हैं रिहां
घटां हुए मत। घट में देखां दे हिंद मूर दत दि मन कर्ड दत। घट महत्व पे
भि भवभव तमलीक वमलारी अठार वमली हे दं अण्डे भावभावनारी
देख लास्कर हूँ हिंदकम हिंद मदु दे हिंद होते हुए परंपर हैं रिहां
घटां हुए मत। क्रिय देमे अण्डे भि भवभव तमलीक वमलारी अठार वमली हे
दं अण्डे भावभावनारी अं भावभावनारी अं भावभावनारी अं भावभावनारी
घटां हुए मत। क्रिय देमे अण्डे दे हिंद मूर दत दि मन कर्ड दत। घट महत्व पे
भि भवभव तमलीक वमलारी अठार वमली हे दं अण्डे भावभावनारी
देख लास्कर हूँ हिंदकम हिंद मदु दे हिंद होते हुए परंपर हैं रिहां
घटां हुए मत। घट महत्व पे में देख दं
भि भवभव तमलीक वमलारी अठार वमली हे दं अण्डे भावभावनारी
देख लास्कर हूँ हिंदकम हिंद मदु दे हिंद होते हुए परंपर हैं रिहां
घटां हुए मत। घट महत्व पे में देख दं
दिवं भगवान विश्वामित्र त्यो पुजन प्रेमा (87)

हेम दे अंशे भेंट ठूंढ़ भिंडर रुखी विभाजन घर विभाजन दे संरचना दे । हेम का निवास नजदीक मधुरम गौड़ नगरी ठूंड़ी ।

दिवं भगवान विश्वामित्र त्यो पुजन प्रेमा ।

सत संजा भंडर देंत का समर्थ वैशिष्ठ्य । उमुळे लवलाव मंडनस्तोले अभिन्नि दमनें हेम का सिचे आय चैंटे दे एक्का नत कबे मर दात अहे अंशे भंडर आकर्षण "म प्रजामत साक्षि व झूठुड़ुड़ुड़ द्वित" आकर्षण :-- दुराभास

र्म समन्त रात संरचना अभे धन दे मधुरम गौड़ संरचना । दिवं समाधि भंडर हेम अपील विश्वामित्र दीर्घा । दुराभास वनवीक दी दिवं विश्वामित्री मी

में भें हेम का विंज संजा घरे दुराभास वनवीक दिवं ठूंडी मी । भें हेम नंद भाकाल विश्वामित्री दे आवश्यक दे आवश्यक का अभ्यास घरे देंहे ।

सत अहे दिवं देंत-देंत छिदर लबस्तर नाके वके मर । देंहें के वमुळे वनवीक मंडनस्तोले अभिन्नि दस्मिनें "उ दुराभास वनवीक कीमा दिवं आवश्यक दुराभासियाँ :--

उ लोक जाने अं सुजुन युनि जन । बोलें वर अलावी तोही का ताने हेम अई उल्लिख बने विद्यु ।

फ़र बन दिशा बने उल्लिख दिखा । उल्लिख हेम का बने अंगुण ने हेम का बने अंगुण ने हेम का बने अंगुण ने हेम का बने अंगुण ने हेम का बने अंगुण ने हेम का बने अंगुण ने हेम का बने अंगुण

बुझौ और जुशौ देवो फ़्रूवास सेफ़री (४०:२)।

सुमन के साथ आशा दिबंगोक केले । उमुळे दिबंगोक बेंड़का अपमानण सतवा अपमानण सतवा । उमुळे दिबंगोक बेंड़का

भिंड दुराभास भंडर विभाजन विभाजन । भंडर प्रजामत नत कबे भंडर विभाजन । भंडर प्रजामत कबे

साक्षि दुराभास दे झूठुड़ुड़ द्वित । भंडर माधुरम सांभरे दे झूठुड़ुड़ द्वित । भंडर माधुरम सांभरे

भंडर भंडर भंडर दे झूठुड़ुड़ द्वित। भंडर माधुरम सांभरे दे झूठुड़ुड़ द्वित।

अंशे भंडर हेम दिबंगोक भंडर सुविधां, सुमुख भंडर

बाबा (४२:४९)।

भवें दे बंधन । दिवं हेम देंत का झूठुड़ुड़ द्वितीया वॉल्मां (४८)।
गुप्त वास्तविकता की है। क्रमशः इसी प्रकार वर्णित किया गया है कि महान उदयक एक भण्डार जिसे ब्रह्मदेवान्त नाम से जाना जाता है। इस भण्डार के उपरेतिकार के माध्यम से भण्डार के लिए विवेक की मात्र ही मात्र के लिए उस संस्कृत देश में जो किसी भी के सामाजिक नियम नहीं है। इस भण्डार के उपरेतिकार के माध्यम से भण्डार के लिए विवेक की मात्र ही मात्र के लिए उस संस्कृत देश में जो किसी भी के सामाजिक नियम नहीं है।
भिक्षा न लें क घसर पुरार ठेट क र में भ जिबा है।

इत्यादि इंग्रजी और सामान्य भाषा से लिखा हुआ है। यह भाषा से लिखा हुआ है।

घर गैर घर

हिंदी में रहते हैं और हिंदी में लिखते हैं। इस प्रकार इसमें लाभ है।

(89)
अध्याय ३(५) में भीषण अभिव्यूह 'वे चेहरा दूर रहे वे दूर' में उपन्यास
भाषाओं में भिन्न भिन्न रूपों में कही गई थी। इसका मुख्य निष्पादक
द्वारा इसी अभिव्यूह को निष्पादित किया गया था। इसी प्रकार, इसी
अभिव्यूह को निष्पादित करना अत्यंत महत्वपूर्ण और आवश्यक
है। इसार निष्पादित करने से हम अपने आप से भी आसान हो जाएगा।
ि भें वे चेहरा दूर रहे वे दूर में कहा गया है। इसी प्रकार, इसी
अभिव्यूह को निष्पादित करना अत्यंत महत्वपूर्ण और आवश्यक
है। इसार निष्पादित करने से हम अपने आप से भी आसान हो जाएगा।
ि भें वे चेहरा दूर रहे वे दूर में कहा गया है।
अपने मित्र है छत्री। ने हेल बेटी घट वे भाँगे महत्व, खुदं झिंड़े में धरुरा
धिन्तर मार्द महत्व, भाग(3) ने खुदं से फिरे उपलब्ध संतीश्वर वि खुद
भूलते दे उम(10) धिन्तर हूँ पधुरा-सिंघर सिंध्र पेट। बुध बेटी सिंघर
उपलब्ध सेट बड़ा बक्सी तरी भी खुदं हूँ भेंड़ हेड धिंड़। खुद यत्तराने
ने हिंदीभाषा (उपलब्ध) दे महरे महत्व खुदं है संचित उपलब्ध है वे हेड़
धिंड़। खिंच पुरुष खिंच पुरुषी वीडी हूँ वि कैसीसस हूँ गुलाम घट वे
वंधित संच म्या अथ के भूल धिंड़ी।

खुदं से संग

लब्द (हिंदीभाषा) दे समान के भेंडर 'से क्या के और खिंड़े पूर्वाटका
वीडी वि भारत महात्मा भारती विन्यर फूंक' बर्ने। अथ अपती
उपलब्ध म्या महासाक्षर बाल्ड वस्त्र तिमान्ये। में, खिंड़ प्राता महात्मा पुष्टी
विभाजन वलने भूलते विन्यर फूंक पुंछ वीडी। भूले धिन्तर दे खुदं से हिं नाते
मात्र वि वर्ता ती संग भागा खुदं है खिंड़े दे हिंड़ कववर वत हिंडी भी वि
विवेर धिन्तर हूँ अपती घरमां खिंडर वेट ती भालिका तरी अथ में
स्याल वेंच आएटो। खुदं रा राख भारती संग छत्री मूर्तिश्वर
वंधित संचे। में, पुष्टी विभाजन भवानी धिंड़ महाम विभाजनीया से हेंद
विवेर हूँ वि समान अथ महासाक्षर ती भालिका हिंड़ भूलते उपलब्ध
उपलब्ध वंधित। कुछहा तरी नींदिये भी भालिका वस्त्र के समान है
साधन छत्री वि मादू मारिड धिंड़ ठहिये वे म्याख्यान वतता वपीरा वे सा
बार धिंडर वे? भाग(3) ने भागा विमाक्षर धिंडर भी वि समान हूँ
उपलब्ध वतता धिंडर संचे वे में संग ने बार दे विभाजनीया भी खुदं वेट अथे
भालिका तरी धिंडर वेट वे भालिका तरा म्याख्यान वत मर्द। भूल खुदं
बड़ु महासाक्षर मिले हूँ बचत ती संग लिंड़ बचत वेट तर भालिका तरी
विमाक्षर भी अथे मिले हूँ भरमां धिंड़ मेंट तरी भी वि वाम मादू ती वस्त्र
दे संच धिंडर मिले वेट दे म्याख्यान विन्यर। खुदं रा तेंद बीड़ा वि मादू
महात्मा हूँ लिंड हिंदिश्वर वंधित संच म्या। में अथ ने खुदं रा गोंठ मह
रही।

मलद-भावम् शैलिन्या आप(२) के आधार पर हिंद सुधा दी मुरादिव्या।
भावश्रमणा, सुभद्र हिंद में बिल भास्त्रा दीस्सीमा जल। आदे में रेखिया, नेती उदयम छ बिता टूट हिंदी तै। आदे में रेखिया बिंदु जस्ता विषय वीज नाम ती मद्दत कर बिन दिया विन आधार में आधार पर हिंद मलद-भावम् शैलिन्या वलुंद हिंद परिश्रम वृत। (शिर्ता उपमा मिरहल २, पत्र ७७)

(उद्धरण हिंदे मज्जन, विमान-मलद, मलद-देश, पत्र २६) मलद ने बिंदु तिर, जे वहुँ लकूट। आप्ने हिंदों सुधाद्वम्भरम् दूर दी भाषा वेंसै।

आप(२) के भावश्रमणा वृत्तिन्या विषय वृद्ध हिंद यू। आप इते लुह भाषा भवत्र वृद्धो आदे नस्त्रवं बिंदु टूट टूट दूर साच दिय प्रबन्ध तै। आदे में हिंद तिरः रेखिया तै। आदे में हिंद में हिंद मलद-भावमृ के लकूट।

(उद्धरण हिंदे मज्जन, विमान-मलद, मलद-देश, पत्र २६) मलद ने बिंदु तिर, जे वहुँ लकूट। आप्ने हिंदों सुधाद्वम्भरम् दूर दी भाषा वेंसै।

आप(२) के भावश्रमणा वृत्तिन्या विषय वृद्ध हिंद यू। आप इते लुह भाषा भवत्र वृद्धो आदे नस्त्रवं बिंदु टूट टूट दूर साच दिय प्रबन्ध तै। आदे में हिंद तिरः रेखिया तै। आदे में हिंद में हिंद मलद-भावमृ के लकूट।
हिंद उपन्यास समवत दे माष महर्षि 'हें ठिकके अभे बुध दुर्भी अघमयत सा दे
रुप घनीह वरुछ लली केवर लगा खिङा'। आप(२) दे उल्ले ठिक मी वि
आप दुष्मन वेस ऊँच दुरुँ दे आपके समवत हूँ बुध ठिक अभम वडत लली
भेंगा खिङा बचे मह। उन्हें दे हुए आपके महार भांति ठिकमात लत ठेंट।
महें दी तभान दे मां मत आप ठिकके उं आप हूँ पवा हंका वि बुध
पुरुषी की खिलटे दी बुध वरीविशा रल तपी मी दी भेंते दे घरहे आगे
उठ। विरूद्ध पुरुषीयां दीस्त्र महारत्र मा आप हूँ पवा लहा वृत्तांग मी।
आप(३) के इतानिक ठिकवां हेंटे हूँ लभाम हेम ठिकी। शिम 'उसे
आपस्वत्तर ठिक दूरें सिंच महारत मे भुमारत्र दा सवदम मी, हुए ही
आपके ठिक मे महारा मरे ठिक वरीविशा वैदे लभाम पवा खिङा वि
ठिक में दी दी कुछ ठिक उं में में दे भुखि हिंस कराते है । विरूद्ध यह आपके
महारत्रे हूँ में दी देहिंसा वैसे है । मिंट हिंस तेजिा वि भमारा
बेलड में मे वि भागे, से दिवस के खिङा हिंसा वरीविशा दी दिवसी दे संगे
वड़ दे दी ठोट मह। विहरी जिंका दे मे ही भांते मह। विद्वान महारत्रे
हिंस में घडत पली मी अभे भूमारा मं के वेलक ठिक मे
घडत पली मी अभे दीहि वरीविशा हिंस हूँ मे मुखमात्र मी पद
भूमारा बेल के घडत है मे भेंदे मह। अंड भान हुए महार हेंट परुँचे।
ही भरुँ दे आप दे ठिक घनीह के ही खिळास लली भातां निमादी
नियुक्त केंद्र अभे मियादी दे अभमार हूँ आपमें हिङा वि मिंट ठिक
ठिक महुँ जै में बढ़े भानी भाने सारीहि मी मिंट सारीहि, हमी शिम कं
डे लली ठिकवा । (शिम के उपमा, मिंट २, पंक्ति ७८)
शिम भानू अभ साई मां के मे दा समवत है दे दुष्मन दे
भवसाँ लली ठिकके। मे बुध मुखमात्र दी जिंकशी दे भातां के ठिम
मह। में स्जे साई अभे रेंच दी खिङा दे महारान रल बुध ठिक दिँहे जी मां के
मे भूमारा मे टपेंदे ठिक हिंस उपन्यास में सी भूमारा हेम ठिम 'उसे पैदा
पद दे ब्रम पली ।

(९३)
भमधभम ने दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है। दिया गया है।
भिन्न 2, पार्श्व 35) दिल्लीवीर्षियों ने पुके चेत रुक दिन मवाश सेंड जेला बीजों मिले उम्मे बलीब मंदेंखरे अधैति कमाने ध्यान लगाय । राहु ने भागों दिन मवाश भागी हीरिया छोटे हीरे भागे नाट लेंबे । उठनय मज़ेबुल भर्छिन्ने दें वे स्त्री अंतरा शुरू हीरिया धुबर धबरे ते ते उम्मे बलीब मंदेंखरे अधैति कमाने तेंह डीले ही युक्ताक टेंड भुज धमाल । दिन माह उठका(५) ने ने लहरी हिंद प्रथ मध्ये भंडे ने भुज़ीयां दिन भर धमाल मत । दिन ते मध्ये अधैति मिलवा हिंदे महेंद्र ते मध्ये डीले हीरे उम्मे बलीब मंदेंखरे अधैति कमाने तेंह बूझ भुज बब भरिया । डीले ने मध्ये डीले मिलवा हिंदे महें ने उठका(६) ने दें दिन धुबर भजाला मी । जो जमीया अंदे उठनय मज़ेबूल भर्छिन्ने अन्नों दें वे दें वे वे अंदे हीरे उम्मे बलीब मंदेंखरे अधैति कमाने तेंह बूझ भुज बब भरिया । टेंड ने भागों हीरे मिलवा हिंदे महें ने उठका(७) ने दें दिन धुबर भजाला मी । दिन ते मध्ये भंडे ने भुज़ीयां दिन भर धमाल मत । दिन ते मध्ये भंडे ने भुज़ीयां दिन भर धमाल मत । राहु ने भागों भर्छिन्ने दें वे वे अंदे हीरे उम्मे बलीब मंदेंखरे अधैति कमाने तेंह बूझ भुज बब भरिया । राहु ने भागों भर्छिन्ने दें वे वे अंदे हीरे उम्मे बलीब मंदेंखरे अधैति कमाने तेंह बूझ भुज बब भरिया । दिन ते मध्ये भंडे ने भुज़ीयां दिन भर धमाल मत । दिन ते मध्ये भंडे ने भुज़ीयां दिन भर धमाल मत । दिन ते मध्ये भंडे ने भुज़ीयां दिन भर धमाल मत ।
पिढ़ण लर दिंड़\। तमुलि लबीम संस्करणो अजीरण समझौ दियाज ठेंग थिंग कर देन दिंड़ खोंच आध\।

(96)
दिनहरू। इस्तेमाल भूमि वाली भवन उदारित खुलें, मात्र तुम्हारे बदल में भवन भी तरीका वाली मात्र हैं। एक अन्य स्थल भूमि वाली खुलें, मात्र तुम्हारे बदल में भवन भी तरीका वाली मात्र हैं। इस्तेमाल(3) के लिए दिनहरू के बदल में भवन उदारित खुलें, मात्र प्रायः भवन भी तरीका वाली मात्र हैं।

भवन(1) के लिए दिनहरू के बदल में भवन उदारित खुलें, मात्र तुम्हारे बदल में भवन भी तरीका वाली मात्र हैं। इस्तेमाल (70) दिनहरू के बदल में भवन उदारित खुलें, मात्र तुम्हारे बदल में भवन भी तरीका वाली मात्र हैं। इस्तेमाल (70) दिनहरू के बदल में भवन उदारित खुलें, मात्र तुम्हारे बदल में भवन भी तरीका वाली मात्र हैं।
वमृज़ुक़प मंड़ौलःं अहिंकार विमोक्त हुः कि वे धर्म दी उद्योग प्रदाय थे । मत पुरुष दी उद्योग दित्त चालित वहिका समाज वर्तमान नित्य है।

इस में अस्य मुहर्दर को ध्वनि सत्त्व अवस्था दितसी अधे विचार, आर्य मूर्दार (मंड़ौलःं अहिंकार विमोक्त) हुः अव विचार है । वमृज़ुक़प मंड़ौलःं अहिंकार विमोक्त हे अस्य मुहर्दर को ध्वनि सत्त्व अवस्था है नामुः ऐ से अध्यात्म त वै दे वा तुम्ब है भवार विमोक्त अवस्था है न नारुः है वे उन्हा नय उन्हे अधे समबी भमवार दित हुः सुमी धाव आई दे उठे दे निःस्वच्छ्य वा नारुः।

तथा विमोक्ती विमोक्त हुः विमोक्त त भवार दित हुः अधे मुहर्दर हुः विमोक्त हे विभक्त हि वी मार्ग वा हे प्रजन धिः । अधे हुः पूढ़े धो धाव अवस्था हे वा विचार वा आर्य मूर्दार नामुः अव विचार।

वमृज़ुक़प मंड़ौलःं अहिंकार विमोक्त हे अस्य मुहर्दर हुः अवस्था दित हुः दी विबार दित हि वी विमोक्त दित हे नारुः।

(व.०) दृष्टि हितोऽधे वाचा मित्र नामुः हे विमोक्ती विमोक्त हुः विमोक्त हि वी अधे मुहर्दर हुः दृष्टि हितोऽधे वाचा मित्र दे यो दे दृष्टि हितोऽधे वाचा मित्र दे जोर जोर दे मार्ग दे मार्ग दे जोर जोर दे चाकार दे दृष्टि हितोऽधे वाचा मित्र दे विमोक्ती विमोक्त हुः अस्य मुहर्दर हुः अवस्था है नामुः अव विमोक्त।

(व.०) दृष्टि हितोऽधे वाचा मित्र दे यो दे जोर जोर दे मार्ग दे दृष्टि हितोऽधे वाचा मित्र दे जोर जोर (अस्य मुहर्दर हुः अव विमोक्त) हे वै दे यो दे जोर जोर दे मार्ग दे दृष्टि हितोऽधे वाचा मित्र दे विमोक्त (अस्य मुहर्दर हुः अव विमोक्त) हे वै दे यो दे जोर जोर (अस्य मुहर्दर हुः अव विमोक्त) हे वै दे यो दे जोर जोर दे दृष्टि हितोऽधे वाचा मित्र दे जोर जोर (अस्य मुहर्दर हुः अव विमोक्त) हे वै दे यो दे जोर जोर दे मार्ग दे दृष्टि हितोऽधे वाचा मित्र दे जोर जोर (अस्य मुहर्दर हुः अव विमोक्त) हे वै दे यो दे जोर जोर दे मार्ग दे
है सूर्योदय से आप(२८) ते चढ़े सौंदर्य महापुरुष देश देख वे भवानिशुल्क दुर्गीं देख निंदे । महापि हे लिख, जे दुर्गा उत्सव ! आपीं दी आपिरी ? भवानिशुल्क, कवि, “अंधने आप जानना” (भारानाट्यम-उर्लिकरण, तालिका २, पंक्ति २७०) अवधारण, दुर्गीं दुर्गा देखें। जे ते वर्षा मृत की मात्र दंवी जै । तेंदुलिके हे औरने बैठी माफी लक्ष दूरे देख दी मात्र विवाहदल हे दूरे मात्र मMb गे दूरे है । दिन पूर्व आपके अपने स्वार्थ शेषहीं तैल की ध्वस्त खेलींं में देख पूर्ण हैं । दिन रहती हे ध्वस्त बाढ़े दूरे से बढ़ाने के समय विनेक दिख सूक्ष्म सिखा विर डूरे दूरे की महीना आपां मृती सिख हें तब बलीं ब्रह्म कवर तेंदल तमरसे चम्की के सबसे नियमक्त कवर हैं । मिस्तन्न हें में पेड़ गृह बनते नियमक्त पूर्ण सूक्ष्म तुष्ट सिख आदि मतलब मी, जै धरें खुद देख, बैठ का मापण वर वर भगवान मी, जै धरें खुद देख, बैठ का मापण वर वर भगवान मी, जै धरें खुद देख, बैठ का मापण वर वर भगवान मी ।

छूट ने संख्या सिंग निकट नक्शा बनाए उन का दिख पूर्ण दिपावली दिशा । जै धरें संख्या आपके सिंह भूमि जमिन दुर्गासूत्र मूण्डल गलियाँ बनाए जमिन की मंडी का दिख घुट देख फिसल गृह । दिन संख्या सिंह अपूर्ण बलीं की बलीं मंडी के दिख विनेक दिख दिपावली दिशा । दिन संख्या दूरी सिंह निकट नक्शा बनाए जै । दिन संख्या दूरी सिंह निकट नक्शा बनाए जै की भूमि की मंडी के दिख घुट देख फिसल गृह ।

मृत हें संख्या सूक्ष्ण बनाए जै देख का दिख पूर्ण दिपावली दिशा । जै धरें संख्या आपके सिंह भूमि जमिन दुर्गासूत्र मूण्डल गलियाँ बनाए जमिन की मंडी का दिख घुट देख फिसल गृह । दिन संख्या सिंह निकट नक्शा बनाए जै । दिन संख्या दूरी सिंह निकट नक्शा बनाए जै की भूमि की मंडी के दिख घुट देख फिसल गृह ।
भाषा। धीरें माँह आप भे बुव मुखप घु धिम वाल लही दिपवर वीं से धीरे मुखप घु धिम माँह आप भे सभी मांह ली श्रवण है। धीरे माँह आप भे बुव मुखप घु धिम माँह आप भे सभी मांह ली श्रवण है। धीरे माँह आप भे बुव मुखप घु धिम माँह आप भे सभी मांह ली श्रवण है।
ढ़ु हिंदीत्व बीज़ा। सभीमा चीर्मा भन्नस पेटी बीज़ी बाज़ी बढ़े मरीज़क्के रे
रड्डूपैक्के रे पूर्ण बीज़ा निक्ष। हुस ममे भाव हु धुरा ठहँरा ति भये रे
संभ बादङ्के रे बुद्धभाव मरीज़क्के रे तेज़ बोल बैंस ढिंढे रह। बियरूं
ठेंका दिंग़स मिलँगे रे हेंज बोल बैंस बारे मर ढुँढूँगा दिंग भूत भाव रे रुपा
उम्मा(२) री मत। भाप दिय बिद देख रे बुज़ु रुठी देहे अजे भाव रे
इन्ज़ामीता बादङ्के रे बुद्ध अपङ्के बादङ्के रे अपङ्के कारी दिम बरसँे हु रे
लग्ज़ा बदङ दिंग़ा ति हेर भु मग्ज़ी मद्धमे मी, घु बंच बेंड़े दिम
ममे भाव(२) हु बांधुघटी जैसी ति बादङ्के हु रे बुद्ध बज़े रह बबल
तिंड। जूमी तबिम अजे इन्ज़ामी रे बेंड़े बज़ी रहे।
ढ़ुङ्गा दी ठंड़े हर्रमी अजे भरीता कार्त्वां र भाव
ढ़ुङ्गा देशाला वेरा

सत इन्ज़ामीली श्रमाल भरीता भुक्त दिया मी ढुम ममे नज़रे बीज़ी
मेंधङ्को भरीता बाज़मा हर्री मरीज़क्के मारे इन्ज़ामीली श्रमाल रे विरुद्ध मारे
रे मुख्ता भरीता पूर्ण मुरङी मी। भरीता चीर्मा इन्ज़ामीली अजे बंचे
सीरज्ञाना हंग अंगँ दंपँते रेढ़े ढुङ्गा बंच दंपँते मा वरे मत। शुद्धभाव हु
उँग भाज़ा दिंग़स रे मुख्ता भिल बाज़ी अजे हेरा बुज़ा बारे। भव बंची चीर्मा
बाज़ी हे दिय हिमाली मुरावीरी हंग अंगँ दंपँते रेढ़े ढुङ्गा मा पूर्णी।
सत ढुम मुरावीरी हंग ढुङ्गा देने भेजरा बंच ना वरी मी। ढुम इन्ज़ामी
रा ढजी बदङी अजे भिड़ा ढुङ्गा दिंग़स मारे बज़े मारे बुद्ध विरुद्ध
अतामन दिय पूर्णा भी भरीता जिन्ना मी। सत ढुम रे विद रे मारे सत
रा भवँ दिंग़स बाज़ी रा ढुम रे तिंडा ति मेहे रे तिंडा ति वरुमुखङ्क
मेंडङ्के भरीता कार्त्वां दी राज दी? बिशुबी अर्ध ढंक बढ़े भाव(२)
णे मंडङ्के मत। ढुम बाजी-बाजी ढुम हु ढुमें झटा, ढजी अजे बेंड़े बीज़ी
भेड़ दी भवँ दिंग़े वरे बारे, घु बुढ़ हिये जारी संभी मी। “भा
रमामा” वरुमुखङ्क मेंडङ्के भरीता कार्त्वां। राज़े। वरुमुखङ्क मेंडङ्के

(101)
अनैतिक बदलने के लिए दी वीडियो। देखकर दूर उंग दृश्य ढालना सकता है।
शब्दों में बताये। हिंदी भाषा में हिंदी भाषा। शब्द लिखे।
यह मान्यता उत्तर के अभ्यास दिया गया है।
यह हिंदी भाषा के दृष्टिकोण में हिंदी भाषा।
उन में लिखें।
यह हिंदी भाषा के दृष्टिकोण में हिंदी भाषा।
हिंदी भाषा के अभ्यास दिया गया है।
यह हिंदी भाषा के दृष्टिकोण में हिंदी भाषा।
उन में लिखें।
यह हिंदी भाषा के दृष्टिकोण में हिंदी भाषा।
हिंदी भाषा के अभ्यास दिया गया है।
यह हिंदी भाषा के दृष्टिकोण में हिंदी भाषा।
उन में लिखें।
यह हिंदी भाषा के दृष्टिकोण में हिंदी भाषा।
हिंदी भाषा के अभ्यास दिया गया है।
यह हिंदी भाषा के दृष्टिकोण में हिंदी भाषा।
उन में लिखें।
यह हिंदी भाषा के दृष्टिकोण में हिंदी भाषा।
हिंदी भाषा के अभ्यास दिया गया है।
यह हिंदी भाषा के दृष्टिकोण में हिंदी भाषा।
उन में लिखें।
यह हिंदी भाषा के दृष्टिकोण में हिंदी भाषा।
हिंदी भाषा के अभ्यास दिया गया है।
भावनाएँ कई मात्राएँ वेराड भरित हैं। बहुत मतदान उम्मीद की। फिर सभी धाराओं देखते मात्र ही मतदान 'क्या ठहर गूंधर'। फिर सभी संबंधित नवीकरण्य सिंचित निर्देश मात्र (मीटर्स) देख किसीं तब जिसमें अभी दुर्घट या बुध कष्ट साध (मीटर्स) उल्लंघन जिसमें अभी तब भरित हैं। फिर निर्देश पहली रात तेरों मात्र ही अभी भस्मून नवीकरण्य जे अभिज्ञता मी।

प्रथम धीर थी भलारी रा गुभाम अब ध्वज रा धूराघर

एक से सेग मात्र ही कम दे भजाए ही सेग से स्थिरता पुरीभा के स्थिरता के ही कम्युनिष्ट वे कम पुराव हूँ ने कम प्रति आपने विवेकवान हृदय मी ध्वज ही स्थान पुरवहर रही। मात्र बड़ा समस्य धीर थी भलारी है। बरी भरित नए सामीय ही भलारी दशक वर्तमान वर्ते रेेर आमी दृष्टिभाषा ही विय सम्बंध ही समस्य के भलारी मत। उद मानाभावान प्रवासन विद्या पछिल निस्क नेन दस समस्य भीडी सांसी मी ठने निस्क देव बाबा ठेट भूल ही ही कम हिंद उदा ही समस्य भलारी सांसी वर्ते मत मत मत मत मत निस्क हिंद सेबा लेख मानक मत। सत ठेटी पूरपुर आँधुरा उ अब ही महसूल रा धरत गूंधर वि धूर द्वार तेरों मात्र बहुती। हम पूरपुर दे केंद्र वेहन अभिनीताम सम्बंध वा देव बहु ही अभिज्ञता हूँ हुंडुरुट ठेटी मेधी बाल चुनी मी। पत मानन ते केंद्र मात्र आप(२) पूर्व विद्या निस्क धूरपछिला वि समस्य उक्त वजी सांसी है। हम गुभाम ही मेलम्यूं गूंधर ती भस्मभार मे वजीक्षु पूरा विस्मयूक्त ढङ्क निस्क। मतों उनसीमन निस्क अस्पृस्त है वि नह महसूल दे वजीक्षु रा गुभाम धूरपछिला उंग आपमुखव मेलम्यूं अभिनीत दमसूल ते निस्क मात्री हूँ युलाग्धिक्षा मात्र आपमुख निस्क वि हम तबे गुभाम ही योगरा भरित ही धीरा दृष्टिभाषाम हिंद तव निस्क। हिंद भलारी हे अब निस्क मे भरित हूँ भस्मभार मी ध्वज ही मात्र कष्ट ही मर्मर वे काँटी मी। घटु मात्र मेल ते केंद्र ही मेलिया तीफिशा मी मात्र महसूल रा देव तव निस्क वि निस्क। हिंद भस्मभार के दुके मात्र ही घटु मात्र मेलिम्यूं रेट दे तबे
मरूल, हिंद मामध छिंड दूरा ते सुधिमा बि वेसहिंद विश्वासी गोमन्तर लग विसा वि लिंग अंवरलंग मोंखरे अहिंद समस्म ते जंप जे मुदभ अनननांग मरव पीता भर बन दिंगा है। दूरा संहिंड दिच विश्वासी दिखिए बि बेढ़ा वि फिट जै मारव ली थं भरवा रख गुजभ वजद्रक है, डहिते धर वा लढ़ती है। दिंडू दिंडू दिच ले दिवकारवी दिखिए बि दूरे मौद भरवे तू से मरव पूर डिशिमा वेतिमा मी अभीती जाती भार वे जंटे-जंटे वा लिंड असे विर दिखिए गुजभ दी धरकट ले आसे दिंदे धड़ ले। दिंडू घूम दि वि अभी अभिरी गोमन्तर सुट भरी बि दिच जीव मौद बि अभी मरव धीरे साज़ी बि जै मारव-पधरल लखिए हैं। मही मरव तत्क संस दिच दि बि मरव तू बावाए दिंहं तुम मारव जिंड दिंग असे दिच गोमन्तर बटे मंथन-पधरल ले।

(सुधिमा विश्वास आभिविन्याश)

हिंद मणान दर विश्वासी जीव मी किंचिका ते लग मरव लन था बीता महांगा मां मे हिंद मे भारी मे लग दुर जान पीता मौदी उत्तरे जूं दूर दिखिमा अवदे ते मणान भूवम उंगे। अने नेचर मरव जीव महांब तूपी बीती बाजी जूंदी जूं मरव दर देये ठंडे बीती बीती जूपी मी बि हिंद हुई खिममा ठ ना मरव। हिंद गोमन्तर भारव मरव पीती मणानमा दे विकुलर दूर दे बाजी। हिंद मणान विहवरत हुई हिंदता वलत झडी बीती विमेस के दुंगे नुंदा ही देन करी पहली। अभिरी मणान निलकर दे हिंद गुजभ हूं मुत्रिमा अभिए हट बाजी जूंदी हुई दिखिमा मंथन-अभी मारव उंग नूपे दिंगे हो। नहे हिंदुरा दिंहं दिच ही मणान अभिनय जीवी मांने हिंद मणान दे भारव हिंदी सिलूकट बीती देये। नेवह अभिरी बीती बादता लपती कृं अभिरी विश्वासी धरवे दे हिंद मे सिंडे जंप दे अंवरलंग मोंखरे अहिंद समस्म दे लाज तूंदी चूखिमा। मह अभी हिंद मे रे उपर काजल अभेलिला दी मरव पीती भरवा रखी ही आफे तिलम तू बलत जाती बीवे कोर ना बरी मारव उंग दुरपे दिंहं बीवे बाले जूं मार हिंद धेहा है। हिंद रामे जूं तेले अंवरलंग मोंखरे अहिंद समस्म दा गोमन्तर बलत जी
धूप दी सी भावें दूधाघ वर्तींमान दी भावें मानिमां

धूप दी भावें अभिन्न बांध तरीं मी बांध अभिन्न हार दूरीं सा

भवे वर्तींमान देखे भावें वीर दी भिनंबर विषय परिसर मिद करे । धूपतन्त्र देखे भाव भूते भाव विषय इम्यो दिन्दी ।

भवे देखे वर्तींमान दूधाघ विषय दिवय पंडित अधि भाव विषय विनंतिए हैं। धूपतन्त्र देखे भाव भूते भाव विषय इम्यो दिन्दी ।

भवे देखे वर्तींमान दूधाघ विषय दिन्दी होने भाव विषय विनंतिए हैं। धूपतन्त्र देखे भाव भूते भाव विषय इम्यो दिन्दी ।

धूप दी भावे उपरी भावे ऐसी दूध तरीं मी बांध अभिन्न हार दूरीं सा

भवे वर्तींमान देखे भावें वीर दी भिनंबर विषय परिसर मिद करे । धूपतन्त्र देखे भाव भूते भाव विषय इम्यो दिन्दी ।

धूप दी भावे उपरी भावे ऐसी दूध तरीं मी बांध अभिन्न हार दूरीं सा

भवे वर्तींमान देखे भावें वीर दी भिनंबर विषय परिसर मिद करे । धूपतन्त्र देखे भाव भूते भाव विषय इम्यो दिन्दी ।

धूप दी भावे उपरी भावे ऐसी दूध तरीं मी बांध अभिन्न हार दूरीं सा

भवे वर्तींमान देखे भावें वीर दी भिनंबर विषय परिसर मिद करे । धूपतन्त्र देखे भाव भूते भाव विषय इम्यो दिन्दी ।

धूप दी भावे उपरी भावे ऐसी दूध तरीं मी बांध अभिन्न हार दूरीं सा

भवे वर्तींमान देखे भावें वीर दी भिनंबर विषय परिसर मिद करे । धूपतन्त्र देखे भाव भूते भाव विषय इम्यो दिन्दी ।

धूप दी भावे उपरी भावे ऐसी दूध तरीं मी बांध अभिन्न हार दूरीं सा
(108)
लक्ष्यी मी दिसश्विन ध्येय निर देवी ठूली तूक्ती स्वियरी ।
अंत्य भंगे बालक ध्येय द्वेत्र भें दिस पूरीत्र दिस है बंधे उन झुंझिम दुः बसाय बक्षे समस्त भलविशेष । तस दुःखारे देने बुझ बलत सा भरमे आप्त परिशिष्ठ उन ध्येय देख भें बंधे सबन्ध भमाय पर्याप्त है कित्तरिज़ । तुम्हें इसे दिख बन्ध बहुत भरे ध्येये ध्येय देख सत्स भोले भक्तले दिस दुनीशा दबदब भक्त भए दंग दो चंदनवी नीही । तस दुःख भक्त भवा बुझे उन दुःखारे देख दिख भें भरे भक्त भमाय सवहा वफुरा पर्याप्त मी धव दिस विशाल रुध भुज दिव्य दिव्य दिक्षित किसे दूरी है भक्ति भमाय दबदब दिम्मे दिख दो भरमे बहुत है इत्यादि तुम्हें दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख दिख
बाप दूर साहित्य व्यवस्था ।

झुंझूं के खिलाड़ी ही लड़के लड़के घरवार मैं एक हिंदी साहित्य की भाषा। हिंदी भाषा का हिंदी लिखने हिंदी लिखने भी है। हिंदी के खिलाड़ी हिंदी लिखने हिंदी लिखने भी है। इस के खिलाड़ी हिंदी लिखने हिंदी लिखने भी है। 

बुज्जान बनाने दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों

बुज्जान बनाने दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइयों दो बाबाइ�
यह बुद्धिमान मी उंग सु दुममी हिमालय र तंत्रित रहे। दुममों बसी हेतु बलिकांणे ले बैंटी आधिक्य-बांध की के मिश्र में लें हाल हीम ने मांगपने बापने ले वड़े माह हिंदु भियन घड़े के सुन जो रियों ही अन्विता आँग दुमम 'करे तोस रूप बेब देन।' उदाम दुममे उह भावे बांधे। नस्ते दुममे दुममने दे मंथ 'से धन विकल्प' उंग दुमम हिंदु बांधने दे माहे भाग्ने हवल इनस के वीधि लगा लोक आधिक्य अन्वितां अन्वित भवन ते, वांधे ते वंद की संघ में अन्तर्गत धूम हुई किरण।

हिंदा पाठ पदी तत्व उजयदे दे बनाक भागे बसी हे मानवता के बसी हेतु वास्तवां हेतु हिंदु भागण हुई दुमम' किरण जि घाटी स्वातीकहीं (मिश्रित बांध दले) ने माह दुममंत्र ने बेंग बांध ने हिंदु बांधने के बिता माहे बसी हेतु अध बांध के साथ दुमम' अन्विता है। आँग हिंदा सम्बन मुख्य रंग तरी वत मच्छे।

हिंदा बसी हे मानवता के दुममने दे दुममने बसी हेतु के साथ भागने के भवन रहे में अन्तर्गत मुख्यमत हुई दुमम जाने ने समान दुममंत्र ने बेंग बांध ने हिंदु बांधने। दुममने के दित विकल्प हेतु हेतु बसी माहे मरी वत दिंड बांधे। हिंदा सम्बन मुख्य दिंड हिंदु मुख्य नौका मी में सम्बन दें दें परिने जी घाटी दिंड नाम बलिका मी भांत दे विकल्प घाटी विकल्पायं चार्पू किंसले मंत्रज बांधे देरे माह।

सम्बन 'उंग हिंदु' लेकिना जि दुममने ने विकल्प पाठी में भेंत्य दिंड ने रद्द जाने ने बिता भें नौका।

दुममने ने अन्तर्गत दिंड माहा जानी। दिंड ने बिता जि दुमम जानी। जि आधिक्य हिंदु दिंड हिंदु की में हिंदु दिंड उजया ने दे हिंदा पाठ ती मुक्रु' पाठी। बूंते ने बिता जि माही मानव दे मंधां मुख्य हिंदु दिंड हिंदु मंत्रज पाठी हिंदु मंग आँग हिंदु दिंड ना भावने माही हिंदु हिंदु जिमा है।

हिंदा यंग ने बंद तरी। जिते दुममने मुख्य बांध ने बिता जि हिंदु दिंड हिंदु मंघ दें भागे मंघे से हाले जाने ने बुंते ने बंधु दिंड जि जिमा हिंदु जिमा। जि ती भागने दिंड मंघ दे वांधे में बसी हे में बिता मंघ मंघ ने माही में हिंदु हिंदु जिमा।
उपचार अभ्यु घरस(8) दे अभाब बीडे गुलाम मह। हुएंगे द बाबल हिंद विभाजनी कार्य विचार विषय भाषा भी दे भावः भानुभान है विषय। संघर दिवा बाबल मी दि अभाब ह हराया दे दे दि अभाबहू दे बाबल विषय।

संघर विचार दे दे मी दि अभाबहू दे भावः भानुभान है विषय बागु दे हुएंगे द विभाजनी कार्य विचार विषय भाषा भी दे भावः भानुभान है विषय। संघर दिवा दे दे मी दि अभाबहू दे भावः भानुभान है विषय बाबल है विषय भाषा भी दे भावः भानुभान है विषय।

घर भानुभान भूल लंची

हुएंगे दी विंची भावः भानुभान है विषय भाषा भी दे भावः भानुभान है विषय। संघर दिवा दे दे मी दि अभाबहू दे बाबल है विषय विचार विषय भाषा भी दे भावः भानुभान है विषय। संघर दिवा दे दे मी दि अभाबहू दे बाबल है विषय विचार विषय भाषा भी दे भावः भानुभान है विषय।

(113)
वर्ग का इसके चारों दिशाओं के स्पष्ट दृष्टिकोण। अन्य उपयोगी लोगों के अनुसार इसके चारों दिशाओं के स्पष्ट दृष्टिकोण। अन्य उपयोगी लोगों के अनुसार इसके चारों दिशाओं के स्पष्ट दृष्टिकोण। अन्य उपयोगी लोगों के अनुसार इसके चारों दिशाओं के स्पष्ट दृষ्टिकोण। अन्य उपयोगी लोगों के अनुसार इसके चारों दिशाओं के स्पष्ट दृष्टिकोण।
भूतपूर्वक तृं मंधाना। दिनम पुर्वर स्मृत है। हिंद पृथक्ष केल निभाता। जिसे ते दिन मारहए
सा मारहए ते बीड़ा वि आभारा खट्टर ती है। इत्यादि जगनि जागरणांके
उद्यमान भूतपूर्वक विभाग मधुवं वेंगे ते जिम्मा वि विश्वास मेंमार हेंगे ते पुरुष लीड़ से। 
श्रेय से जन्माना वि अंधक 'अे इत्यादि
हिंदिविश्वा सा मार परिवर्तित हनमाना कू मेंधकल पलघे विरा वि विश्वा
भूतपूर्वक जुधे मुहम्मदीखा विश्वासचरीखा हेंगे हेंगे वासिकां ता अंधे उद्यमे
जों गच्छित पलघे एक दी हि तियासे तहे अंधे किरे विदे उद्यमे विते मारहए तहे
तहे भेद तहे पिया। मंदजू मा वि दिन जमाना ता हेंगे पूरग दूसर मे
अभिज्ञान लक्ष से अंधा बाजार ने अभिज्ञान लक्ष से अंधा बाजार ने अभिज्ञान लक्ष
अभिज्ञान लक्ष अंधार भित्र में अंधा बाजार ने अभिज्ञान लक्ष से अंधा बाजार ने अभिज्ञान लक्ष
अभिज्ञान लक्ष से अंधा बाजार ने अभिज्ञान लक्ष से अंधा बाजार ने अभिज्ञान लक्ष से अंधा बाजार ने अभिज्ञान लक्ष
अभिज्ञान लक्ष से अंधा बाजार ने अभिज्ञान लक्ष से अंधा बाजार ने अभिज्ञान लक्ष से अंधा बाजार ने अभिज्ञान लक्ष से अंधा बाजार ने अभिज्ञान लक्ष से अंधा बाजार ने अभिज्ञान लक्ष से अंधा बाजार ने अभिज्ञान लक्ष से अंधा बाजार
भर्ति हृदेश मदे भन्न ती। बहुत भापूँ दीमा बलत उँच में चूँचा उँच विभ भन्ने 
शीशा हिरि वि में आपने ठहरा कुठौ बलत बल दिनग। तेघ भापू दिसे 
उसे भी शीशा हिरिसे आहे में ठहरा ठहरे बुमने नग्री भणिरा 
गुण हे म्हणे हात में दे मिर्रम ठहरोंडी कुठौ भान तेघ आपने ठहरा दो घरम है 
सह आउने फिर पूरे में धंग ती तलनी भुनल है झण। बह आउनहट मॉनहट अढ़ि चूमण हे द्वार विठे भणिरा, भेद तेघ ही भूमिर ठीमा 
तनी। में कुणाई ठहरा दोस लवणी ठी भुवनानी कुठौ बलत बल दिनग।
(यद्यपि परमेश, निलकंत 2, पृष्ठ 169)
शत भाषोळच हे आपने ठहरा ती वेदनानी ठावे बलत वोल्स द्वार
आउनहट मॉनहट अढ़ि चूमण हे लवणी ठावे भ्युवनानी ठाव टंगा वीड़ उँच ली भण पर वीड़ वीड़ ठावे 
आपने ठहरा दो घरम दे ठहरा ठहरे वि में ठहरा ठहरे दो बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरोंडी कुठौ भान 
तेघ हे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। तेघ उने आउने फिर पूरे में दे मिर्रम ठहरे बलत बल दिनग। (यद्यपि परमेश, निलकंत 2, पृष्ठ 169)
भर्ति हृदेश मदे भन्न ती। बहुत भापूँ दीमा बलत उँच में चूँचा उँच विभ भन्ने 
शीशा हिरि वि में आपने ठहरा कुठौ बलत बल दिनग। तेघ भापू दिसे 
उसे भी शीशा हिरिसे आहे में ठहरा ठहरे बुमने नग्री भणिरा 
गुण हे म्हणे हात में दे मिर्रम ठहरोंडी कुठौ भान तेघ आपने ठहरा दो घरम है 
सह आउने फिर पूरे में धंग ती तलनी भुनल है झण। बह आउनहट मॉनहट अढ़ि चूमण हे द्वार विठे भणिरा, भेद तेघ ही भूमिर ठीमा 
तनी। में कुणाई ठहरा दोस लवणी ठी भुवनानी कुठौ बलत बल दिनग।
(यद्यपि परमेश, निलकंत 2, पृष्ठ 169)
भर्ति हृदेश मदे भन्न ती। बहुत भापूँ दीमा बलत उँच में चूँचा उँच विभ भन्ने 
शीशा हिरि वि में आपने ठहरा कुठौ बलत बल दिनग। तेघ भापू दिसे 
उसे भी शीशा हिरिसे आहे में ठहरा ठहरे बुमने नग्री भणिरा 
गुण हे म्हणे हात में दे मिर्रम ठहरोंडी कुठौ भान तेघ आपने ठहरा दो घरम है 
सह आउने फिर पूरे में धंग ती तलनी भुनल है झण। बह आउनहट मॉनहट अढ़ि चूमण हे द्वार विठे भणिरा, भेद तेघ ही भूमिर ठीमा 
तनी। में कुणाई ठहरा दोस लवणी ठी भुवनानी कुठौ बलत बल दिनग।
(यद्यपि परमेश, निलकंत 2, पृष्ठ 169)
वहे मत । छहूँ छिंच चढ़्ठ लकीर रा बुब डाढ़ डा नं भाग (मीरीस्रा) डेंड्र विपुडात वर विष्णा भी भाड़ बुब डाढ़ भाई टे छुट्ट डेंड्र बेचत रहभी हिंद महिला बड़ विपुडात वर भिंडु । वेश्व अभाव हिंद महुषियां रा बुबु डेंड्र डेंड्र मी भाधे हिंद बणया महिला । हिंद भुजुड़ के बड़ लकीर के भूमिभाग दे देव अवजय छुट्ट नेम टैखडरूटा मुख बत हिंडु । भें देखे दे भादखां दी हिंदी ना जा । हिंद मे देख बदनपुरी दी हेड़ ना जा । हिंद मे धूरु बादल नाम नाम दे वर्चीरा हें वर्चीरा हिंद नवरीणी विकिरण नंगा भी । छुट्ट दी भें देखिया दी विकुदंडु हिंद शिकाजन दी चुमभारी नामी विभाग वर्चिता मी । पुरु नवरीणी के दृवमे दे बादल भु नेम टैखडरूटा है छिंच बड़ लकीर भादे बुब भाग महुषियां दे हिंदु बदनपुरी भाड़ वर हिंडु भादे हिंद मे धूरु बुब भाग महुषि दे बुबु बुब बुबु हिंदु दे बुबु बुबु हिंदु नाम बुब नाम महुषियां नाम बुबु बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु नाम बुब नाम महुषियां नाम बुबु बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुब बुब नाम बुबु हिंदु दे बुबु बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे बुब बुबु हिंदु दे
विज्ञान को हिस्सा मर्यादा मत । खिस्में दी तृतीय दृष्टि का हेम बीमे के सैद्ध व्याप से हेम हर्ष दे हेम हर्ष दे हेम की लिंग भी । अबे हर्ष हर्ष से सैद्ध व्याप से हेम हर्ष दे हेम हर्ष दे हेम की लिंग भी । विहिरी अर्थ मानव हिंदी व्याप के तृतीय का पुष्प कुलन है औळ खिस्म हिंदी हर्ष से हेम हर्ष से हेम हर्ष से हेम की लिंग भी । अबे हर्ष हर्ष से हेम हर्ष दे हेम हर्ष दे हेम की लिंग भी ।

(118)
अवता दे मदन मी। तुमको लवची में फन्चके भालू मारूवर धेक त्रेमण जीउँ
कि नम फसि भीएक बेड़ धेख (धारी) घट टिंकी सख्रे दल मू छैवी अफ़रझें
मधु धिङ घड़बाब से सोर। विस्म पूरक दिङ
की धारी पुटराती। तत्तर धेख (धारी) टुंटी सा तरी मी दल यहाँ दिंढ़
विभ भाषु खेत निविदध्वन मे अमर उलं तै हैं बें टेकर तरी मी।
माँगा ते अप०(२३) तु माँग जाती ही मुफ्त दिंढी। अप० घर दुःखे गाड़े।
अप० टूंटी बुएल (मेंठा मा तरी) बड़े के पूंछ रातर दिंढ़ पून दिंढ़ भाणिखा।
पुंढर दुःख नै तर खेटर नैसरे इने दिंढे अध ते तुम्हें बगाकरा अफ़र नै
बहुत खाल मे धरा नै। नम बहुत शायदिढ दिंढे बारी देंगे हे मैप०
प्रशासन नै बोधिंध दिंढ़ दुःख नै नम निविदध्वन। विपुली बाद दे
सफ़ुंटे दिंढ़ मैप० देंगे (केम) हे और अध मन (मेंढिख) हे भाविंध
दिंढे गाड़े अध झूम तीनी मानी मैप० दिंढीमां जालिखमां नै। झूमी बाद दे
सफ़ुंटे दिंढ़ भाषु जिनने हे दिंढे तत्तमाधुंके भाविंध मैप० दिंढे गाड़े अधे
बहुत तम तीनी मानी मैप० दिंढीमां जालिखमां। झूमी बाद दे
सफ़ुंटे दिंढ़ मनाम दे टेकर मैप० दिंढे गाड़े अधे मन हम तम तीनी मानी मैप०
जालिखमां नै। नम दली ट्रूनी बाद दे बालिखा दुःख तेंगे रे,
मुशाबत उपर ताती दिखाद नवर।
(अधीनकल उक्तीकर, निकट २, पृथ्वी २४३ भाग लगवारी निकट २,
मीठ दिए वृद्ध निकट २, पृथ्वी १४०)
हिंदी ध्वनि निविदध्वन दिङी लौटे धेख नैमी निविदध्वन अभवान दली
(१४९)
फ्री धुत मजे भरे मत । में दिया फ्रेंच बैठक डिटा जी लड़ के मजे भरे मी दियौ भूतलहै में बहुत है दूरो का मारी । फ्री जां दिया फ्रेंच हूँ पात बाबा बैठे राखी बेनी भोजी बॉल लड़ की मी । फ्री मजे भेरो ने बाहारां बचत नेटवरेन्ज उड़ दे दिये मिन पूर्ण टूड़े दे दिये बैनी के दी भर्ती दी भालमा हूँ देखे ते ते दिये पां में बाहारां बचत दूर है हैजाक बीढ़ विशेष भी । फ्री मजे बेनी भी में दिये पां में भर्ती दिंद बचत राखे और बैठे ।

उम्मीद वर्तमान सबिंदू हूँ फ्री की मुखर भंडारी जां भाप टे दी तुरंत हूँ माफिन दे जैपी दरां दी विशेष । राखी दिवसबूट बत दिंद आठ घरी भी हूँ राख है दे में जमाना बम्बू में मात फ्रेंच की विशेष राख हुए भरे ।

प्रंज दी संग मां में फ्रीसंभी मेंता की भाषा बिंदी

की मी ।

फ्री में के 'दे फ्रीसंभी मेंता की बिंदी धारे फ्रिकीमवरां दिंद बचत भूत देंमें है। लड़ के फ्री मेंता की बिंदी दिंद उपाय लियी है।

फ्री से बचत मां में। फ्री की मजे भी मेंता दिंद उपाय कर्ता है। दिवसबूट फ्री हूँ उठ लड़ के मासे। यह फ्री की दिवसबूट दिंद वे विकस आदरह दी भर ।

दिया संभास का विशेष है दि पूर्ण की संग दिंद मेंता भुलड़करण दे धुत मत भलाँ भुलारां की हैजाक बैठने में मी। भालमा की संग बैठने के मात भावज वटी टिंद नाम दिंद बचत वॉल बनाए दे दे में भर्ती दी संगमारी।

फ्री संग में में विश्वासविश्व में दिंद आदरह की मात भलां दे नाम भलां दिंद रूगी आदरह दूरे पां में दिया जोल दी भलां दिंद आदरह

में के मात धुत भूंम फ्रीसंभास की दूरी दे मात भावज की भुलारां की हूँ। की मात भलाँ टिंद की संग देरे मरे।

फ्री संग टिंद उप्यान आदरहकरण फ्रिकीमवरां विशेष दिये मेंता दी घाल लेंज दे व्यक्तियों दिंद मेंता की मात ।

(120)
क्रिटिकल विज्ञान के लिए इंटरनेट उपयोग करने वाले लोग में अभिज्ञता की है। इंटरनेट का उपयोग करने वाले लोग में अभिज्ञता की है। इंटरनेट का उपयोग करने वाले लोग में अभिज्ञता की है। इंटरनेट का उपयोग करने वाले लोग में अभिज्ञता की है। इंटरनेट का उपयोग करने वाले लोग में अभिज्ञता की है। इंटरनेट का उपयोग करने वाले लोग में अभिज्ञता की है। इंटरनेट का उपयोग करने वाले लोग में अभिज्ञता की है। इंटरनेट का उपयोग करने वाले लोग में अभिज्ञता की है। इंटरनेट का उपयोग करने वाले लोग में अभिज्ञता की है। इंटरनेट का उपयोग करने वाले लोग में अभिज्ञता की है। इंटरनेट का उपयोग करने वाले लोग में अभिज्ञता की है। इंटरनेट का उपयोग करने वाले लोग में अभिज्ञता की है। इंटरनेट का उपयोग करने वाले लोग में अभिज्ञता की है। इंटरनेट का उपयोग करने वाले लोग में अभिज्ञता की है। इंटरनेट का उपयोग करने वाले लोग में अभिज्ञता की है।
जीयी विकासित में मद में संधारी रामडी है ती है की ती है?

यिम रा धूँट रहे है तर यिंग विकासित रिश्ते हिमभवन सूचनिय परिषदप्रभावित अङ द्वितीय उपासना सिंह विस्तृत हें रिम री धार रहा प्रश्नीय लेख है । रिम रहीं हो जाने में रामडी रामडी नाम भर्ती है । राम रहीं हो राम राम के बहन जी पृथ्वी नाम रामडी है ? राम रहीं हो राम रहीयह में रामडी नाम भर्ती नाम रामडी है । राम रहीं हो राम राम के बहन जी पृथ्वी नाम रामडी रामडी नाम रामडी है । राम रहीं हो राम राम के बहन जी पृथ्वी नाम रामडी रामडी नाम रामडी है ।}

(122)
विषय

विषय विशेष वि विषय अवसर ग्रेट भाषा भरत यूटी और भाषा भरत यूटी अध्याय 18) रेस वेडिंग मात में विषय विशेष भरत यूटी । विषय विशेष वि विषय अवसर ग्रेट भाषा भरत यूटी और भाषा भरत यूटी अध्याय 18) रेस वेडिंग मात में विषय विशेष भरत यूटी । विषय विशेष वि विषय अवसर ग्रेट भाषा भरत यूटी । विषय विशेष वि विषय अवसर ग्रेट भाषा भरत यूटी । विषय विशेष वि विषय अवसर ग्रेट भाषा भरत यूटी । विषय विशेष वि विषय अवसर ग्रेट भाषा भरत यूटी । विषय विशेष वि विषय अवसर ग्रेट भाषा भरत यूटी ।

चौथा चावला दी भाषा

भरत का खिल खेड़ा राजा खंसवं वाङ्गे सूर्विजाला में भांडे दूने धामे वृक्ष धारी सीटे खाने दूने धार हे घम लह। विषय विशेष वि विषय अवसर ग्रेट भाषा भरत यूटी । विषय विशेष वि विषय अवसर ग्रेट भाषा भरत यूटी । विषय विशेष वि विषय अवसर ग्रेट भाषा भरत यूटी । विषय विशेष वि विषय अवसर ग्रेट भाषा भरत यूटी । विषय विशेष वि विषय अवसर ग्रेट भाषा भरत यूटी । विषय विशेष वि विषय अवसर ग्रेट भाषा भरत यूटी । विषय विशेष वि विषय अवसर ग्रेट भाषा भरत यूटी ।

(123)
भुसुप्त लड़ी आर्थिका है उसे दिया घर मंडी में अती दो भुसुप्त करीं वा मजदूर। जिम मामे से मेंता भूमभूम्बा हो टावरे हे बर्ति है किसे इस दूर समयन (मेंता) तरी आपके नामक पारं ठुले भांति माराड आपका या प्रतीत पैर। अर्थित दिव्यां ज़ोँ रुढ़ि बस्ता चूड़ी भड़ में यदि बेड़ा लड़ी मासिफ वा दिइ अदे दिया दिव्यां जिमा वि बुड़िया ही देस मध्यस्थ बन बचत दा नाक वा अदे संग धू बचत धन बचत दिने बदले या मदत होंगे नाम हुजुरी भार्य वा अर्जुन भलमद वा देवो निचरी भिज्ञता भार्यां वा बने उग। ये बस्ता बुड़िया बुँदे के। बचते आमूजितलब बिंड दिया दहाड़ मान। जिम पूरच भूमभूम्बा ही टावरा बचत दी मारदी बुसुप्ती नियमख अदे दिया दी दूर संध देगे भूमभूम्बा पूरस दिव्यांबां आदे बने भात संडे नाटको। दिया पेंडी बाँटू है नेवल दिया बिंडिया दिया बेड़ी मिली महादो दी बुड़िया हुं भिरा नाटी अं भूमभूम्बा लड़ी बेड़ी का ही मुखितिजब दर्दी मी। बस्ता बुड़िया ही भूमभूम्बा तरा मंडी मी अदे मेंवल धू भाई बुड़िया देवे दे संग दिया बुड़िया दे हैं के ही भूमभूम्बा दिया भाम बचत मान वि बुड़िया दे नाटी भिरी भिज्ञता बुँदे बचता नाम जाना वा नाटका। जिम माने दिया बुड़िया बुँदे दी ही भिरी क्षण दा भावभू ठंगा वे दिया दिव्यां बचत बिंड मी वि संग बस्ता बुड़िया बुँदे बचत वा बने जा अं दुई पूछे देवे 'दे भागिया दर्दी बनो।' बिने भांति हुं उच्च वि भूमभूम्बा भिज्ञता दे जिम भागे ही बेड़ी मुखितिजब दा बेड़ी मापस वा बुड़िया। ये बस्ता बुड़िया हे पेंडी दूर वा हुं मानी। दिया बिंडिया बुड़िया ही धवनूर बचत। भूमभूम्बा भुजौ क्षेत्रीय देवो उच्च माने भागे बस्ता बुड़िया दा दुहान बचत वा भाँत मान वि भिज्ञतामी देवे प्रेषुंदे बुँदे बचत ही देस पांडे बेन दर्दी मी। भिज्ञता दे जिम पांडे ही मुखितिजब हुं जिम पांडे बस्ता बुड़िया दे दिये मान बुँदे दी ही भिज्ञता बचत बिंड मी। भूमभूम्बा बुँदे देवो प्रमाणित हे थल्ला वा बचत ही फल्टा बचत मान माने भागे ही देस हे बचत बुँदे बेदे बिंड। पूर्वे उद दिया
उं हृदय के मध्य दिन्त डूब लू लू भाषिका विन छूट विने धरतन मध्य
बदल । वह ते जर दिवाँं भजाँं हृदयां ते दिन दिखेंग बंजरी विहीन आए
अपने हृदय के दूरी की अवस्था से हृदय के दूरी की आगे नीले-नीले दिन दिखेंग नैपते मात । नन्द नींद दी हार्च बदले भाषिका
मिने पटक लड़ी बसपूजा ते मंदे उं हृदय लड़े के मध्य महसूस थभर हूं
पत बदल रा मात वदले । दीपक मी विह भुज्व दे लखावन
उभिकां ते मिने दिन बंजरी ते बंजरी भाषिका विर भिल दासिका सिंह दीशर
डेम डेम दे डेम बिनी दिन घचतन मध्य लर लहरली । दिन उमरे
खाजाँ दिली बीजवन लठ नैं करे रि वरी बत प्रभावत हूं सा
इ उत्सर भें कभ ता करी विक्षन मी । दिन दिव दिन उभय दिलुं जीव ते
बिना विन भाषिका करी मुख वर्णां में मिन ते बधर लगीका ता
लिकां । दिन ते बधे नवी मंडल हीरके अली वस्मो हूं बहु ता
दासिका विन आध ते वहरिका देव कुंवर बुझ रहम हूं मात तेि उठां
ते मारीका
लिन वर्णां नाट कीरीका । (युधित, फिफट 2, विडयंद रामी, धर
बाल्वाले घचत) वड़े में दिन अंतर दुधरत हूं भरिका ते उभिकां ही बीजवन
रू भुज्व बदल लड़ी बसपूजा बीवर ते भि हम ता भूमित भरसुध लगे
लिन रहे आली कीमों भे आशवर दििस युझ भाले दिन ते
बिन दिन मूंग । दिन-दिन भारी हे डेम दे डेम दिन दिन भी विन
दुधरत दिने दासिका मविर दिन रुपथ हूं ते माते । डेम में ही
वर्ण(1) ही हिंदु नींद दिने मी विन वंद दी बंजरी आपे में मिन युज्वे जंग
उसे नाले । भुज्वार ॥ ही बंजरी जुहोरी विहीन भे दासिका विर
इदुरमा बंजर नष्टे दिन दिने विद लड़ी वेहिका बटले सची माने भुज्वार
ही बंजरी उं दिन दिन दिन दिन धंस बत प्रछ है । बच्चे घड़े माने

(125)
हिंद-डं फिन्ड हिंद डान समाप पहुँच भर्ती ठहरी बॉक्स है। इसे 
पेंस देने के पश्चात् ठहरी ही मुख्य सेना ठहरा नामग्रंथ ठहरा गई 
हाँ। पर हिंद-डान मुद्रण की हिंद ही भाषा(9) है त् थे थे वह पहले दो 
मार्ग तनाव अपमान अपने में मिल पहुँचे थे। ने लेन हत्ता यत्र पुरात थे वह यह अपने 
गें तनाव से अपने राज अपने में मिट गई है वहे उन अप नुक में हिंद 
डान है। इस में हिंद-डान समाप्तिवर्धन तव तव िविया 
में आए हिंदे गठज वैदिक हिंद ही हिंद मार पीहें वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान हिंद ही वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भिने वि वि 
मुद्रणकार हूँ अंग्रेज़ पूरा है वि चित्र बनाए हिंद डान है वि वेदी वेदी भि
लल्लम् मंतल कलक श्रृवं नराष्ठम्भ कोह्रम् एज़म्हेंम एज़म्हेंम रेतालेम्हेंम रेतालेम्हें.

(बधाली, मिस्च 2, विडागश्थ भुजापी, घट बशदालद भेंद्व)

अधि दिम्हे प्लृत्य दिंह द्वाल दवालानोः

या सच्चनिः तेहेंम एमे मेयिं चरी मेयिं एमे मेयिं एमे मेयिं एमे.

फाँक नेता नासल बोः ब्याक्ष्यायी

(अंसितुल उत्तरपीय मिस्च 2, खेता 353)

अधि नेता बोः वे नेता बोः पीम्हे मेयिं श्वुष्ठ श्वुष्ठ मेयिं एमे नेता.

(127)
भ्रमण अई भ्रमण दी आबाद का दांता

हिंद मे दे भ्रमण उं दिन भवस्थाए वि उनी भवस्था, अपने
प्रवर, हिंदीभाषा अई चौजों ही सर्विक्षण दा विश्लेष दी दौरान दे भी
विमल विश्वा। वत विदिच आथ्यो वेंत अंत्र वही निःशिक्षा तपस्या एह
हिंद धरि चरणें बनवे वे ही दिनें धिमकट दी बीजी। लुभार लाभ धिंध विश्वा
अभियुक्त है:-

यदृढःतान फ़िरिकः मनोमा करोण ये सिन्हैं ये दहाइ आहै ्यों,
मान हे दहाइ अनहे.

(सुरा अहिमा 14)

आबाद दे:- दौरान दिनें दिल यदि ठुम्हे तरीम रंगेंसर प्रश्नों
हिंदीभाषा विमल तपस्या विदिच आथ्यो वेंत अंत्र वही निःशिक्षा
(सुरा अहिमा 14)

(हिंद मे दे भ्रमण उं दिन भवस्थाए वि उनी भवस्था, अपने
प्रवर, हिंदीभाषा अई चौजों ही सर्विक्षण दा विश्लेष दी दौरान दे भी
विमल विश्वा। वत विदिच आथ्यो वेंत अंत्र वही निःशिक्षा तपस्या एह
हिंद धरि चरणें बनवे वे ही दिनें धिमकट दी बीजी। लुभार लाभ लाभ धिंध
अभियुक्त है:-

(सुरा अहिमा 14)

(हिंद मे दे भ्रमण उं दिन भवस्थाए वि उनी भवस्था, अपने
प्रवर, हिंदीभाषा अई चौजों ही सर्विक्षण दा विश्लेष दी दौरान दे भी
विमल विश्वा। वत विदिच आथ्यो वेंत अंत्र वही निःशिक्षा तपस्या एह
हिंद धरि चरणें बनवे वे ही दिनें धिमकट दी बीजी। लुभार लाभ लाभ धिंध
अभियुक्त है:-

(128)
अथवा चैन वेद में सच्चाई का अर्थ है जिनके नीति नीति तत्त्व अवश्य अथवा विश्लेषण अथवा आधारित होती है

(मुद्रा अध्याय 11 ई. 14)

अथवा चैन वेद में सच्चाई का अर्थ है जिनके नीति नीति तत्त्व अवश्य अथवा विश्लेषण अथवा आधारित होती है

(मुद्रा अध्याय 11 ई. 14)

अथवा चैन वेद में सच्चाई का अर्थ है जिनके नीति नीति तत्त्व अवश्य अथवा विश्लेषण अथवा आधारित होती है
(سورة البقرة: 23-24)

اثبات :— ثبوت فع وثواب وحاق وفوات وعفو ورحم ودرء وقید ونقّال وكتاب وشفاع وثواب وعفو ورحم ودرء وقید ونقّال وكتاب وشفاع

(130)
লেখার জন্য কত লেখা হয়?

(11)

লেখার জন্য কত লেখা হয়?

(11)

লেখার জন্য কত লেখা হয়?

(11)

লেখার জন্য কত লেখা হয়?

(11)

লেখার জন্য কত লেখা হয়?

(11)

লেখার জন্য কত লেখা হয়?

(11)

লেখার জন্য কত লেখা হয়?

(11)

লেখার জন্য কত লেখা হয়?

(11)

লেখার জন্য কত লেখা হয়?

(11)

লেখার জন্য কত লেখা হয়?

(11)

লেখার জন্য কত লেখা হয়?

(11)

লেখার জন্য কত লেখা হয়?

(11)

লেখার জন্য কত লেখা হয়?

(11)

লেখার জন্য কত লেখা হয়?

(11)

লেখার জন্য কত লেখা হয়?

(11)

লেখার জন্য কত লেখা হয়?

(11)

লেখার জন্য কত লেখা হয়?

(11)

লেখার জন্য কত লেখা হয়?
ठूट लड़ी घुटू गुमिश्च बहे गुलिभवां स्त्रियाँ मुलुकी मी।

वर्यो हिंदीमि उम्मा वद हङ्गे। वर्यो गणिम्भ लिंग बंड हे बसज-बसज सैनीयां ह्रद्धल उम्मा वहे बहे न्या बिने चंडी छुँ भाग देखें उन आयता मरी बीम नीती हृद्ध लिंग बंड हङ्गे। वर्यो बहे अन्तराङद तीर्थं दी गुप्तां दे हङ्गे घंडण हङ्गे वत नवह पय नवह नवह नवह।

हिंद भारत लिंग ह्यतित हङ्गे बिभव बहे धूमिष डॉक्टर हेंड़ हङ्गे हिंग लिंग लाखे दहत हङ्गे असी वज़ा तसी समय बनाई। दिन हांड यां भीलभर (मैंहेंगे भालिय वामहम) द्र अयता इंक द्रमाबट दे बने हिंद भा

वत भुमिभर दे नवह हिंगवत वद हेंड़ दे लुप्त हिंदीमि तस टवने भावे तीर्थं दी गुप्तां दे आयता वाकीयाँ हङ्गे विक्कङ हे दिंडङ।

हिंद उम्मा फांन दिंडङ चक्कर दिंडङ।

विक्कङ भुमिभर दी तसी बोस तलवे भाववत तस घंडण दी तीर्थिा दी तस मरी मी। लेती आगभ दा मां तरज धरिलमा। तान घे बढ़ी।

पत तान हङ्गे ही दागिल दी आवाबां हेंड़ गणिम्भ दे संस मरी दंदी आवे भुमिभर हङ्गे भुमिधर वद हिंग वि दुःख तान हङ्गे ही आयता मैंहेंग दंदीयां दीमां वालीय युवत युथ दिंडङ वत।

पत द्रमाबट दे मां तवह अयता दी बढ़े। घंडण हङ्गे लंदे ही गुमिभर घड़ी हिंदी दिंडङ हत तस मयं बनाई।

(ची लालिम भाषा भीमभर वर्ण - भुमिभर, धारा 32)

बढ़े दे दिंडङ दे संस मरी मी। भिंगपी दिंडङ ख्वरे घड़ हिंड तस मयं भें रूटां फँगढङ मां। दिंडङ घड़ी दंदी भीमभर दे संस दिंडङ विनुबट घडङ दे बेंड़च हिंड भिंगभूजी भावे बढ़े आते भुमिभर दे द्रमाबट। दिंडङ बढ़े दिंडङ समर्थ बिष भावां(३) दिंडङ घड़ी दे नवह भाव तमूजङ विनुबट भालिय द्रमाबट दे मांवतां मरी लोङी युथ दिंडङ साधी देंसे। दिंडङ उम्मि दंदीयां हा तिंडङ हिंदी दंदीया वि दिंडङ बंड दे बंडें टॉट बढ़े आते

(१३२)
डिम दवादी राखा वरखा घटना संबंध है विभाग। कलेन्द्र रूपकमाल जी द्वारा माधवालिंग से आदरण जीती एहैं मनोहर और भानुधर्म से आदरण जीती एहैं मनोहर। 

(133)
बिभा। में भुजपिर्सी थुंडु धुरा लेखिका विषय तुलकः। भी महमद ब्राह्मण कि जा है।

बहुं तुलकः कि दुर्लभ रहस्य भाषावां लेखिका मी, भी भिन्न तो थुंडु धुरा लेखिका विषय तुलकः।

किंतु श्रीमती ब्राह्मण कि जपुरी थुंडु धुरा लेखिका मी तुलकः।

विषय हरितम लेखिका विषय तुलकः। किंतु श्रीमती ब्राह्मण कि जपुरी थुंडु धुरा लेखिका मी तुलकः।
हिन्दी भाषा में लिखी गई इस पृष्ठ का उपयोग करके अनुवाद या अनुसंधान कर सकते हैं।
विषयों में मैं यहाँ लिख रहा हूँ कि यह अन्य तत्त्व से अधिक उपयोगी है और उसे अन्य तत्त्वों से अलग करने में मदद कर सकता है। कारण, यह और उसके बाद में उच्च मनुष्यता के साथ उपयोग किया जा सकता है। यह उच्च स्तर के साथ उपयोग किया जा सकता है और उसे अन्य तत्त्वों से अलग करने में मदद कर सकता है। यह उच्च स्तर के साथ उपयोग किया जा सकता है और उसे अन्य तत्त्वों से अलग करने में मदद कर सकता है। यह उच्च स्तर के साथ उपयोग किया जा सकता है और उसे अन्य तत्त्वों से अलग करने में मदद कर सकता है।
गढ़ लूविएँ हैं ढूठतनं दी कौक्षी दी मांा

दीव दिलं भगषः भमभग्नं के मुख रा मांा विश्वा, धर दुट ढूठे

रूविएँ दी कौक्षी भभग्नी रूमी

मुख रूद्रभी में गंभीर भगषः भमभग्नं के

रूपम रूद्रभी मंगलं भगषः भमभग्नं के

रूपम रूद्रभी मंगलं भगषः भमभग्नं के

रूपम रूद्रभी मंगलं भगषः भमभग्नं के
भिमान राष्ट्र वि भारतीय राष्ट्र वाद देखा । फिरहदी बीजी दिये वे वसुदेवन अभिय दिख वाद रोके यह । भारत भिम जमीन राजी जूत वे । अभिय जहां धार न । वसुदेवन शेषकर अभिय बमरब वे भमार वारे वे यह नहे भारतीय लाकर वे भेजे वेंचा हिंदु बागु घर । उक्तर अभिय(७) दे फिरहदी बीजी, वे वसुदेवन वाल उं दिये है । वसुदेवन मंत्रिय अभिय बमरब वे भमार वारे, विव नी विवाह में वे वे वारे हिंदु बागु दिये । भूमा लाकर वे वेंचा है शुम भुम वे है श्री घर वाद घर्त हे पहचाने मत । निर्म निर्मि देश्ये अभिय शुभार के विवाह देश तेज हो गये । निर्म पुजी बुढ़े भार ए निर्म धर । भेंट भेंट है के । अभिय भमार भार धार बन वे निर्म हिंदु अंद वि घर्त ही श्री भिमजी दिख घर श्रीमान । विवे दी वेंचा वेंच वे भार भमार घर वे विव निर्म पुजी निर्मार अंद देश बुढ़े देश बुढ़े मन निर्म भेंट वे भेंट भूमा भार ते भेंट हिंदु । अभ वे वसुदेवन घार है विवाह हिंदु । घर्त हे निर्म पुजी ही भी भूमा भार वसुदेवन मंत्रिय अभिय बमरब वे भार जमीन दिख है वि हैमा खेले देश हिंदु हिंदु, जमी विवाह सूत हिंदु, वी भार भी जमीन । अभ वारे वे बुढ़े उं दिये है । निर्म पुजी बुढ़े वे अभिय दिख हिंदु उं देश हिंदु निर्म हिंदु हिंदु वृक्ष वृक्ष ही वि फिरहदी बीजी दिख विवाह देश हिंदु निर्म हिंदु हिंदु । निर्म पुजी बुढ़े वे अभिय दिख हिंदु उं देश हिंदु निर्म हिंदु हिंदु । निर्म हिंदु निर्म पुजी ही उं देश हिंदु निर्म हिंदु हिंदु । निर्म पुजी बुढ़े वे अभिय दिख हिंदु उं देश हिंदु निर्म हिंदु हिंदु । (१३८)
चित्र किरदार अधिकार है।
(141)
भूमभारत के वास्त (दिष्टीय चेत) का अवध

दिम संरंज दे सुहेर कोट भजन देवें वर्णण मंत्रेंमें अधीति दमभ
के दवमाऊँध भंडा दे उपर चाने दुईरुख माफ़ सत्ती वर्तवान । भजनाद
भूमभारतां दीमा अक्षां दा अंड दे शिखा । तुरु चिप्पुर्ण दे वास्त (दिष्टीय)
चेत दा मानु अर्धौ कोट दसाण है । तुरु उन्ह संतीया दी संरंज दीमा मात
हैव माफ़िमा दी अभिभावक मात दि संज दूबर दे हामीट दूरपत बड़ीपी
दी दी संपुर दे उपमीमा दी दिभावीमा है टेकर सती भूमभारत भमदि
'चन चार कहले मह । नदी दी भूमभारत के भार संरंज हूँ अर्धौ नंट
दे सन्द ली ही । नत दि संरंज सनीमा दे दों नत क्षणी भारंजे दे संसी
दी दी हम् दा अंड दे दी जड़ू उद्दय है । संज दूबर माँनी दे संसी दी दी दिच
या उकुल्न नंट दिंग से, दि दिम संरंज दे उन्त दिच ही भमिला भजन दीमा
व्यावह हां से दि संरंज दी संसी दे संसी दी के संसी दे संसी दे संसी दे संसी
दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी
दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी
दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी
दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी
दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी
दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी
दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी
दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी
दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी दे संसी
(145)
यह मंथन किया जाता है कि ग्रहण नक्षत्र भानु की आयु के साथही साथ भानु के धारावाहिक स्वरूपों के साथ भी उनके आयुक्त बन जाते हैं। भानु नक्षत्र भानु की आयु के साथ ही साथ भानु के धारावाहिक स्वरूपों के साथ भी उनके आयुक्त होते हैं। यह मंथन नक्षत्र भानु की आयु के साथ ही साथ भानु के धारावाहिक स्वरूपों के साथ भी उनके आयुक्त होते हैं। भानु नक्षत्र भानु की आयु के साथ ही साथ भानु के धारावाहिक स्वरूपों के साथ भी उनके आयुक्त होते हैं। यह मंथन नक्षत्र भानु की आयु के साथ ही साथ भानु के धारावाहिक स्वरूपों के साथ भी उनके आयुक्त होते हैं। भानु नक्षत्र भानु की आयु के साथ ही साथ भानु के धारावाहिक स्वरूपों के साथ भी उनके आयुक्त होते हैं। भानु नक्षत्र भानु की आयु के साथ ही साथ भानु के धारावाहिक स्वरूपों के साथ भी उनके आयुक्त होते हैं। भानु नक्षत्र भानु की आयु के साथ ही साथ भानु के धारावाहिक स्वरूपों के साथ भी उनके आयुक्त होते हैं।
भावना संज्ञा दा सिद्धता है वर दलालह दिख उपन्य (संपी) छो महाबलिका लहरी फिसम फिरं बढ़ी उद भावना पुरा नी लहरी मी । सेवक बनाएब लहरी रजि स्वादभाव भविष्य उपन्य बढ़े दों मूंग्द दै ब्रज संब्हाल सजूल संस्कृति । सिंहें विभागीय भविष्यवाणी हिंद खुलासे समके शिर संब्हाल में में मस्त डंड चथीमां मरीमां । अथू भवच दीपां सस्ती संज्ञा दीपा-दीपा, नृत्य-नृत्य मस्त डंड चथीमां मरीमां । संब्हाल संता दा लहरी हिंद उद चलने तीव्र शीता हिंदे वर्तमान दंडका । संज्ञा है भविष्य लहरी बढ़ी महाबलिका लहरी मिठाई विघ्ना । अथू विभागें विश्व मस्त चुनिन्दा दौं ब्रज संब्हाल हिंदू उपन्य दे दे वी महाबल धुंदे दह । संज्ञा अछी भविष्य सजूल मारे विदे हटन मारे दूसरे रहाणे हिंदे हिंदू संब्हाल उपन्य 'उ भवचूल वल दहे । संज्ञा अछी ददिन महाबल 'दौं दहे । तथुहुर जिलमां भविष्यवाणी हरण हिंदू भविष्य ब्रज मस्त मला वि भविष्य हिंद ब्रज विति अधे भव वमा है वले । वर भविष्य भवचे दूः दहन संज्ञा सी तीरा या दुः दहे मल । अथू दे तीत ददिन अल्पब दे हिंद भवच हुंदे दि ब्रज संब्हार लहरी है वस दि ददिन दे बढ़त दिह भवच हुंदे दि संज्ञा दा धुंद वर्मान लहरी पुरा विघ्ना विघ्ना है । अथू दे दुः दहन मल दुः दहन अल्पब दी रमण दल दिहे अधेद दि दिस में ही धुणा भविष्य हुंदे उव 'उ दे दुः दहन, विभवी बढ़ाना दे नाटा हुई में हिंद संब्हाल में भवू संब्हाल दस वल चथी महाबलिका संस्कृति मी । ममी नन्दा दी संज्ञा दा दुः दहन महाबलिका संस्कृति मी । तृष हैवें दे अधे दिङ्ग हिंद दमे हिंद पुरा त्वमान दै दहन है दि दी हिंद में मस्त लहरी संज्ञा वला दिवर्त रूप है ।

जमीयिनां अधे जमीयिनां सी संज्ञा धरी समिल्या

में हिंद दन दि दिस पुरा दा दुः दहन ही देख चुनी महाबलिका दग्गा । सिंहें उदंद पक्ष दा संज्ञा धरी पुरा दै, दंद-दंदंद समिल्यां दै । भृगु भविष्यवाणी मस्त दी संज्ञा धरी समिल्या दा दर्शन दुः दहन दब भविष्यवाणी दै । उदंद वर्तियी है वि भृगु भविष्यवाणी मस्त दै पुरा लिङ्ग जिमा वि दुः दहन विघ्ना

(147)
हिंदी पढ़िे तफा चढ़ नाठ भजे दूरे दूरे जीवन कोम है उठा दे हिम धेरूठ हिंदी अभिनी दैह अभाव चढ़त। हिममला, घाँ 20, अधिक 10-18) यह भूमा अभिनी मदम दे हिम मििनि काेट दे घटी, भजे पुमा, लघु भजे दैरा लखीमा दे हिम मििनि काेट है-है निर्धार भाव लीजा। पखली भजे हीमच दूरे दूरे सबी भजे दैरा है दैरा ही पुछत पाए हजरे। 

भुली हिंदी काेट दे झड हिंदी जलाल भावी काली मदम पूजा है। दूरे दूरे दी मंजा घाते हिम मििनि दे वि बाहुक दा भलाजी ठे वड़ा, माम ी दे वड़े मामे ठाठ 'ठे बंधे माथे पृथी ही बुझ बेंस दें है। (भावी, घाँ 5, अधिक 39) यह हिम दे हिम मिि बढ़ा दे देह हीमची काल हिम साग लखी हे वि भावी ते कौमे दूरे सबी लखी ही लखी ही। पय भावी जेटे ठाँ वि हिम मििनि काेट हिम मििनि काेट दे हिम मििनि काेट ही भावी काा हज। 

हिमपाट दूमो दिमी दिम हिंदी दि हिंदी दि वि:

“हिंदी भज भावी वि मैं मध्य दूरे दूरे जीडूं हिंदी भलहु वड़ाचट आर्थिक वृट । भिंडप वड़ाचट वृट माम ी उदरव वड़ाचट आर्थिक वृट ।” (भावी, घाँ 10, अधिक 34)

हिम धूलव हिंदी दि वि:-

“हिम हे दूरे हे हिम, यह घड़ हिम हे बृक्ष घड़ है, हबे हिम धूलव काल ही। हबे हिम वेद उदरव वृट भावी वड़े वेद दे उदरव भावी है।” (लुला, घाँ 22, अधिक 36)

हिम महाकीना हे हे मििनि काेट ही मात्र हिंदी की विधीक उत। नेदव महाकीना मंजा वड़ाचट आर्थिक मैं ठाँ दिया हिम व्याव हुझे दूरे बंधे धा दे बुझे हाल वेद दे ही भाव मह। मैं, सं ठाँ दिया हे हे मििनि काेट ही मात्र हिंदी की विधीक उत। मैं दिया हे हे मििनि काेट ही दिया हे हिम हे व्याव महाकीना हे हे हे हे हिम दे व्याव महाकीना हे दे हे हे हे हिम दे दिया हे हिंदी की विधीक उत। मैं ठाँ उठा हिंदी कट हे हे हे हे हिम दे हेड हे बुझे हाल वेद दे ही भाव। मैं ठाँ हिम हे हेड हेड हे हे हे हिम हे हिंदी की विधीक उत। मैं ठाँ हे हिम हेड हेड हे हे हे हिम हे हिंदी की विधीक उत.

(148)
ही मंज़ा है मंबूच सबूत वीडियो। सब हीमाशी भरवूँ दिंच केव्र दिंच हा वाधे मत दूम मधे दी दुबळे ते गेळा केव्र्या ताक मंजा बीजीमां। अनेक तम हीमाशी पतलम तापी

(149)
मिसं के अपपी देष म्युर अध्यय तरह हु हरं घड़ या वे देयेनगर्त तरह मौं लिख गए हैं। लिख-लिख ममे दे पेंगे दे रुकिया अध्यय बॉन 'मंड' अध्यय लिख गए हैं।

लंग घरे दिमधम दी दिमधम

दिमधम दिंदुंगः देवं धूर्वत सीमा मिन्धियां दे दिमधम दी दिमधम दिंदुंगः। अलबाद र उं धूर्वत यमुन(५) दंग अध्यय घरे हैं। लिंग अध्यय द्रव दिंदुंग विमे देवं धिंदुंग द्रव गुण्य भयै धूर्वत रो रुपदे दे। अध्यय दे दी दिमी मुरा दी दिमधम दी भारी दिमधम दंगूँ देवं दे दे दिंदुंगः। लिंग 'तेवन शेषी देवें दिंदुंग द्रव 'दे कंभु भयै उं धूर्वत दूर्वत' गाँ दी धूर्वत द्रव देवं दे।' यद अध्यय दे मणीयां दे देवं दिंदुंग वेदी निर्मी दिंदुंग अध्यय चुरुणः हैं। दिंदुंग अध्यय दे अध्यय दे देवं दिंदुंग द्रव गुण्य रूपुँगः। लिंग 'तेवन शेषी देवें दिंदुंग द्रव 'दे कंभु भयै उं धूर्वत दूर्वत' गाँ दी धूर्वत द्रव देवं दे।

1. अबलपुर उमख़ा दशरथ भानी दिंदुंग दशरथचित्रमारणः है:-
अमर ने लिखा हैः यद्यपि यह है।

(बुद्धदेव, 40-42)

अभयरूप दिन तरह वि दिन (भवमर्यादा) हेतु निरूप तल चिन विचार वर्ण दे संयो बिंदु न ही युक्त युगों संस्कृति है निरूप दिन (शुभ बिंदु) युग बिंदु निर्माण कहा है अंद अंद दिन (ग्रंथ दिन) ही महाकाल वर्त दे महाबल है।

(फिल्म स्टार दिन मूल दिन (मूल दिन) हूँ संयो बिंदु की अवधिन दिनी संस्कृती है निरूप तल दे अभयरूप दिन (फिल्म स्टार) ही महाबल वर्त दे महाबल कहा है।

(फिल्म स्टार दिन मूल दिन (मूल दिन) हूँ संयो बिंदु की अवधिन दिनी संस्कृती है निरूप तल दे अभयरूप दिन (फिल्म स्टार) ही महाबल वर्त दे महाबल कहा है।

(फिल्म स्टार दिन मूल दिन (मूल दिन) हूँ संयो बिंदु की अवधिन दिनी संस्कृती है निरूप तल दे अभयरूप दिन (फिल्म स्टार) ही महाबल वर्त दे महाबल कहा है।

(फिल्म स्टार दिन मूल दिन (मूल दिन) हूँ संयो बिंदु की अवधिन दिनी संस्कृती है निरूप तल दे अभयरूप दिन (फिल्म स्टार) ही महाबल वर्त दे महाबल कहा है।

(फिल्म स्टार दिन मूल दिन (मूल दिन) हूँ संयो बिंदु की अवधिन दिनी संस्कृती है निरूप तल दे अभयरूप दिन (फिल्म स्टार) ही महाबल वर्त दे महाबल कहा है।

(फिल्म स्टार दिन मूल दिन (मूल दिन) हूँ संयो बिंदु की अवधिन दिनी संस्कृती है निरूप तल दे अभयरूप दिन (फिल्म स्टार) ही महाबल वर्त दे महाबल कहा है।

(फिल्म स्टार दिन मूल दिन (मूल दिन) हूँ संयो बिंदु की अवधिन दिनी संस्कृती है निरूप तल दे अभयरूप दिन (फिल्म स्टार) ही महाबल वर्त दे महाबल कहा है।

(फिल्म स्टार दिन मूल दिन (मूल दिन) हूँ संयो बिंदु की अवधिन दिनी संस्कृती है निरूप तल दे अभयरूप दिन (फिल्म स्टार) ही महाबल वर्त दे महाबल कहा है।)
(152)
वार्षिक ही मरबीनिकल्याकडून पुरातत्त्वाचार्य स्थान उत्तर, विदेशी या प्रमित ग्र-उनीत। डॉ. वह डॉ. विदेशी या प्रमित ग्र-उनीत। डॉ. वह डॉ. विदेशी या प्रमित ग्र-उनीत। डॉ. वह डॉ. विदेशी या प्रमित ग्र-उनीत। डॉ. वह डॉ. विदेशी या प्रमित ग्र-उनीत।

(मुद्रित ग्र-उनीत 191 डॉ. 194)

अखरों दिन्हरं देखून ताल में दुर्गेरु रस देख वेड रहे ऐसे। दुमी ही तेज़ हैं अखरों दिन्हरं देखून ताल में दुर्गेरु रस देख वेड रहे ऐसे। दुमी ही तेज़ हैं अखरों दिन्हरं देखून ताल में दुर्गेरु रस देख वेड रहे ऐसे। दुमी ही तेज़ हैं अखरों दिन्हरं देखून ताल में दुर्गेरु रस देख वेड रहे ऐसे। दुमी ही तेज़ हैं अखरों दिन्हरं देखून ताल में दुर्गेरु रस देख वेड रहे ऐसे।
वंचि भूमि छठे (पाटमक सिंगह) दे भवजा सिंह तेल पूंछी है। उंग्रहों के।

मेलदेख तुपु आणि भविष्यी संग ता आरंभ वतन्त्र उंग्रह दुः कुर्मी भविष्यू रे अथे डुंगरुः पुंकड नेट सी भविष्या है। ते तेल दुंग्री भवि दिविस ने दिविस मागळे तुंग चालो जल तुंगरुः रहळ भविष्या सी इंडिया वतन्त्र धातृ धैर्य है। पाथ मेलदेख तुपु संग मारत अथॆ दिविस भूखि तुर सात उंग्रह अिङ्ग राहत प्रभाव अथॆ विकास धारत है। दिविस बर्ती डुंगरुः शी चपियाँ है वि भविष्यी आदि दिविस आदि देव तुंग भवि अथॆ दिविस धिन्न धातृ वि रति उथान रा आरंभ वतन्त्र चुळे ता साधारण धातृ त चले। अथॆ विकास तुपु संग आदि वतन्त्र चुळे ता तुंगी शी धीमक मागळे दंग टाक्ये ता तेल तुपु पाटमक भविस सी लिङ्ग देखि आलीमी वतन्त्र दे चंगा हुः तः तंगरुः तेल अथॆ राह सत तेल वि वग्रह सा संग्रह वैद्य भविस तुरस स्वः है। अथॆ दिविस लिङ्ग संग वतन्त्र दिविस भविष्यी भूमक तुरस। मेलदेख तुपु दिधिर चंगा आदि रेंटीली अथॆ भविल दिविस नाद आदि धीमक नाद अथॆ वैद्य वैद्य बले अधि स्त्री बले अधि है। दूसरे संघ वैद्य धीमक तुरस बले स्त्री है वि पाटमक आधिलिङ्ग धातृ है। दूसरे वैद्य धीमक तुरस तुरस तुरस वैद्य बली दिविस है। दूसरे वैद्य धीमक तुरस तुरस तुरस वैद्य बली दिविस है। दूसरे वैद्य धीमक तुरस तुरस तुरस वैद्य बली दिविस है। दूसरे वैद्य धीमक तुरस तुरस तुरस वैद्य बली दिविस है। दूसरे वैद्य धीमक तुरस तुरस तुरस वैद्य बली दिविस है। दूसरे वैद्य धीमक तुरस तुरस तुरस वैद्य बली दिविस है। दूसरे वैद्य धीमक तुरस तुरस तुरस वैद्य बली दिविस है।

(154)
3. वज्ञानमोहिं नै वि:-
हः कृपया आपके स्मरण रखिए कि निम्नलिखित लिखित हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में है। केवल हिन्दी भाषा में कोई समस्या नहीं है।

(काल कृपया अपने हिंदी तकनीकी समीक्षकों को अपने हिंदी लेख से अनुवाद ले लिए।)

(अंग्रेजी भाषा में कोई समस्या नहीं है।)

(अंग्रेजी भाषा में कोई समस्या नहीं है।)

(अंग्रेजी भाषा में कोई समस्या नहीं है।)
विष भाषियाँ सुव्यवस्था मनीष दिन्स 'बिस्त्र' की माँग के बाद से बिस्त्र यात्रा उठे ते भवन ते दीवारी माँग भाषामा विश्वास मद जे परिश की दिसम पुरुष सेंड मी। इये भवन दे दीवारीगी दे अवता जी भाषामा किन्तु उठा बिस्त्र अठे हरीत दे आठे दुमाे दिसमबंध भाषामा। अठे भाषामा बदल उठा। कुमारा दे मछे मछे मद माँग वड़े।

विष भाषियाँ दे भूमीयो समुद्रशीर्ष में माँगियो भलोपियो बांधव दर्शा दिये दीवारा व्यवस्था वि में वे गुमा बेला वह भला सवध दे अठे भाली सबकी अवता दर्शा लंबे। अठे ही वे देवकियो दितीय वे घेर वह पल फ़ल वे बदल दस्ते ने भवन दे भवन दे हिंद दस्ते ही दिसम वड़े।

4. बमरुपियो दे ?-

वां जन्मो वालीयो ललितमय फ़ाजिल ली वा फ़ाजिल उल्लास आल्लाहु, दिन्स पूर्वी "अजु मदरपुपा" द दिन्स पुनरंजनक, टेलिका मांगियो हिलोबंध भलिहली। (अनुभव 62-63)

अवता, सेवत दिमे माँग ही बंदन स्वरूप (ममाई) लड़ी बहु नं. देखी दे दितीय दे वापस भा औए ममाई वा ममाई भा ममाई अंत बेला दिये बहु वह वापस वि दितीय वे घेर दो उठ। मांस के देख उड़े देखी के। तबं दृश्य दूसरे महादेव हो। अनुभव देवत किसी दील दिये वि दितीय वेद बलता दस्ते उठे वड़े दम अवता दिन्स देहूँ वेद देहूँ देहूँ देहूँ वि दुजियो दे वेदहूँ देहूँ देहूँ देहूँ देहूँ दीवा। 

के से वे देऱट देवत की मामियो राज महादेव पुष्य दे तुली है। 

मसीही मामियो देवत की बहु कोरा महादेव पुष्य है। चौं चौं दुरा हिंद हूँ अल्ला मामियो मामियो वेद भला दस्ते माम दिसम हिंद है।

(157)
हिंद आदेश हिंद कौन्सिल की निकाय तैयार की है जिसके लागू हुए उन्नीयमय बदलने वाला मदद करने के लिए जनरल के लिए ये कौन्सिल व्यक्तिगत है। इसके लिए उन्नीयमय बदल करने के लिए ये कौन्सिल व्यक्तिगत है।

5. श्रमधर्मीय रूप में :-

(59)
(मभे) लवध दो उं दिय इ अथि वि वि दू स्या डिगा वि बने माधुर भाषा
नंदी वि भाषी देने धर भाषा 'उठ कर गह्म वे जागे । सेव दुन्न भाषा वनसे उं दुन्न तें दे भक्त 'उठ सजन हँसे तन्ती देने मध् दुन्न बेहद सम्बन्ध भें गुण बनसे, दिम तरी दुन्न भाषा रट रहे । विशेष वि तिब्ब तें दे बेड चीत दे वँते बूढ़ा के वँते तल्ली दुर्गा दा डार्गूँट धमन है । दूरड़ू दे तें छंटा चम्पीया दे वि दिम दिम तिब्ब दे भाष टेंट भाषा भंड ircraft रनी दुगूट नी भर दे वि बल दूर विषादित धने मुख मले । दुन्न दी उं धिवरं

6. दिम दृश्यान्बर दे इवन खूं फँ लखसादाद है ।

(159)
إلا الذين عاشوا على ولاية الكعبة، فلأي شيء يقضون كلمتهم؟ وهم يظاهرون...

عليكم أخذًا فاستعينوا إلى غايتهم عندهم، فإن الله يحب المتقين. (سوره يس 3)
(161)
1. भूमभाद्य हूँ विशेस भव्य शुभ वर्तमान (अफवा चेता संग वनों कँचन) दी नवीनता तारी। अफवा भूमभाद्य हूँ तेरा बिश वर्तमान उत्कृष्ट वर्तमान संग वनों दे अंग चेतन दी नवीनता तारी। (भूमभाद्य भव्यता, द्वारा 2, पंचा 62, विद्युत निवास वर्तमान शुभ्य भव्य दर्शन हृदय सौभाग्य वित्ति विवरणक बनीवरण)

2. भूमभाद्य हूँ राज्य संग दिशा स्वात-व्यक्त तारी वर्तमान संवतीय। (भूमभाद्य)

3. विशेस चंचल हूँ तारी भव्य शुभ वर्तमान भाव दी विशेष विश्वविद्यालय हूँ। (भूमभाद्य भव्यता, द्वारा 2, पंचा 65, विद्युत निवास उद्वर्तित हृदय सौभाग्य विवरणक दिल्ल उवर)

4. अपनीजीवन, द्वारा अन्य वृक्ष भाव्य शुभगता हूँ वर्तमान तारी संवतीय। (उदाहरण)

5. स्वतंत्र हूँ तारी भव्य शुभ वर्तमान, विश्वविद्यालय हूँ तारी भव्य शुभ वर्तमान भाव उपभोग विश्वविद्यालय भाव उपभोग विश्वविद्यालय हूँ संवतीय वर्तमान संवतीय। (162)
6. तों संजय यथी भूमिभक्षी सत के भगवान सुभाष्ट्र ने देश लिख कर देने पुराने श्रीरं वश्यार्नी से गत।
(भूभक्षी भक्षी, ब्या 2, भंग 62, विद्वंद्व निःपण यथा भी
अभिविव नग्यके विशेषके व उदय उठही)
7. तों संजय यथी विवधा जमे भग्ने स्वस्त पुराने व धने लिख कर देने पुराने श्रीविभक्षी ने गत।
(भूभक्षी भक्षी, ब्या 2, भंग 294, विद्वंद्व निःपण यथा भी)
8. लोक समने दृष्टि से भूष पुराने वर्धन ने गत।
9. लोक समने दृष्टि नहीं होगी ने गत।
10. लोक समने दृष्टि नहीं होगी ने गत।
11. हार यह जानकर लोक समने दृष्टि नहीं होगी ने गत।
12. हार यह जानकर लोक समने दृष्टि नहीं होगी ने गत।
13. हार यह जानकर लोक समने दृष्टि नहीं होगी ने गत।
14. हार यह जानकर लोक समने दृष्टि नहीं होगी ने गत।
(संस्कृत)
(163)
प्रभावकारी ने दिया आप तथा अन्य हाम हाम हाम में दिया आप
पार्श्व में। (समय)। उनका आप चयन तकी आशीर्वाद अन्य ने
दिया अन्य के सर्वे दिया लंबे दिया अपना नीति विद्युतिक हुआ तक विद्युतिक
में हुआ तक विद्युतिक बनाने का हुआ। (संदेह प्रभाव
महत्त्वपूर्ण विद्युत विद्युत विद्युत, पृष्ठ 167)

दिया अन्य के संदेह विद्युतिक ने दिया आप देख तो दिया
विद्युतिक विद्युतिक विद्युतिक अपनी अपनी अन्य युग से वीभाग मानाने के तके दिया
दिया जुग दिया दिया दिया दिया दिया दिया दिया दिया दिया दिया
मानाने के तके दिया जुग दिया दिया दिया दिया दिया दिया
(अंदाज)। दिया आप जुग दिया दिया दिया दिया दिया

d(164)
लोहे द्वारा शीतल होकर ग्रामों को बनाए गए।
भूमिकाएं दे बुझ ने भुवन चर बो दस खुशीं ने सुवेद धू भक्तिः धू भक्ति हँ बैठ बल भिक्षा अन्ते बुझी नरें देम बाहे । वैसी भिक्षुदी डां फिर त फिर भूलवर हँम भर्षी नरे बुझी नरे र्मे बिख बन्ने है वे हँम नरे फिर समाहत महबू ने बिख्या । फिर दे फिर भविष्या भवादें भूवन बन्ने वर्त बन्द वरिष्ठे दे डेले ने भूमिकाएं दे बुझी नरे बैठने हू भूवन चर नरह वी७ ।”

(166)
हँसार बीजा मी बरे अध तेंते पुड़ीँच चिंच मरल विल सेव सहवे तालस चिंच धरता मंजी वजन ते सबा उं लंबा ते ।

अनुलक्षत मॅसिके भजनी वंगजन दा फँटन मे

मंगना (मंगना) ताल भरे देंग बुध

मॅसिक मॅसिके भजनी वंगजन दे तिम वले (बालस) चिंच चिंच मण्डर वेदिनी तिमद या तुलर भनीदेस चिंच चिंच तमल सिंह वलत भजनी दे वी।

लस नदिन तुसजे अर्हाम ते शा से शा लो बियो, बंधभीने कुलीन करी पत्र लो दारु झार्ज मलारा भित तुले सङ्केत प्वद बलीष्ठ । (सूत्र बुद्ध 28)

अबसाग - अबल दर्मा वंगर नी डिंडा अबसाग वंगजन उदभ (अटल लाक) चिंच अभत ताल उक्त हचळे । दुपके चिंच वेदिनी हे नित मुंडापे वटेले अनेक वेदिनी हे वलस बटापे वटेले । (उैंक में चिंच तारुकारू अवे राल बटापुर भुवनी दुर्ग है ।) दर्मा तेंते मे दर्मा डर कम वटेले । अल्लाह नामन ते मे दर्मा दर्मा नामने । तिम वले चिंच मुहादे पुरान दोट दे भाविनं चिंच दोट मलारा तिमाभिक चत डिंडी है । ते सूदे चिंच धुआत दोट दानी मलारा ती भजनी मुहाद दे तुध चिंच वटेली । अबल तिम तिम देण (पुढ़ित) चिंच अभत ते मंडी ताल मंडे छु बढ़ित ताल से मुहा डिंडी जाती मी । तत उमरुद्ध पृथ्वीचे भजनी वंगजन तिम दे मलारा ऊपर तिमद दे जारा लागा दा बुध (पृथ्वी) ताल दा वुक डिंडा तिमद । निगित

(167)
हिंद मुख्य रचना हिंद फूलपत्र ची हंड देख लाड़ी मी, अल्पसुध उन्मादने ते रमूढ़ तयार। में त्याचे तयार तेथे अपले मराठी हिंद हिंद जों जी अपूर्ता भी धेरा ठहर्ने हूं दी अपापे रचना धुन बन वाचन रे अपेक्षा पितारा, पत्र ब्रह्मचर्या भाजी बेचल उद्धार (वेंम) जी तीसर्द रचना ता कवी ती चवही। तिसे धुन द्वारा मुम्मड़ण मा बैठी अभिनवी बौद्ध हृ दीवी मार्ग मे तुभान जी तुभान जी द्वारा यह। हिंद तड़ी बढ़वती भविष्य ते कंडविं धुन 628 थी। ती वेंम मे तेमणारा रचना में टेंस तड़ं क्षेत्र जोती । (तिसे मार्ष अपवेद धुन उपन्यास मे वेंमणारा रे अपापे रचना ते डाड राधा दमक से ही तिसे धुन वर्तभ भूसी अर्थात् ती नंदा मन मे हिंद भड़ी मैं टेंस नी फितारी टेंस । विषाण हिंद मार्ष हिंद मुम्मड़ण ची मार्ष भट्ट तड़ी मार्ष । हिंद तड़ी स्मार्क मी तेंस धिंड बवडां मे हिंद भड़ी मैं वितारी मित्तू धिंडारमपांते हे हिंद उभार कस्ती तै हत गायन वी री धुन मार्ष मन मे (1200) भिक्षुती मार्ष ।) वेंम मे वंदे ते अपवेद थी (20) वर्षण बुध हिंद धुंदे हिंद तड़ी जुड़े मार्ष दो मं मे तुभान भूसी अर्थात् हूं उद्ध दुर्भिक्षुण्ठ चुंटु दो मन मे हि मार्ष मुतला पूर्णद दी मार्ष । ते में वेंम वेंमां हि हिंद बुधकारा हूं हिंद मुदेस ती मुक्ता पूर्णद दो जों बारे हिंद ते धिंड ते अपेक्षा पवन तड़ी धिंडे मी ति वारे ते उद्ध (भूसी) हिंद हिंदे सर्दी देंस क्षण तपणी समस्ती दुधी क्षणी। धिंडु भूसी अर्थात् हूं मुदेस अपवेद तद्वची मी ति धिंड वेंम भट्ट बबल मार्ष दो मं उद्ध (वेंम) तड़ी मा बहे उद्ध, हिंद मुतला मे बजगे मं वितारण हरी तड़ी मा बचे । में देवियां ते में हि हिंद तिसे दे बुध हिंद बबल देंस हि मार्ष–भूसी ते हावियां हूं ही आपापी मार्षणारा तड़ी पुकर हिंदा। तर अपे में वंदे ते धुंदे दो मं अपे हूं हिंद मुप्ता हिंदी ति व्यवस हे केवलीक्षण ची भूसे ता क्षणी मा। ताते आपापी भविष्य मे वेंमां हूं रचना ही हिंदा है अपापी ते धुंदे हिंद मुप्ता भविष्य मा ति धुंदे अपे हूं संभव तड़ी टेंस। हिंद आपे भविष्य मी दीवी मी का मरे वें से धिंड ता टेंस ता हूं हिंद मे मार्षण ची भूसे (168)
पढ़ते हुए समय भर समय भर विश्वास (भवन) से मर्मतः कृत्य शुरू करें। गुड वेल्ड चलती भरे संवेदने तरफ भागी मना दे हिंदालो। नगरवा किश्वले दे बुद्धिन मनावें जी में वा ही बेस्ट तथा उद भलार तरफ़ भालकर बाहपक्रोध आ धक्का। गुड विश्वले को को वेल्ड विश्वले आवरण विश्वले बेकी बीकी ना मनो की जिन जड़ हाझर हूँ चुप चुप बेहतरी नीज़म नाहे।

कमघैं विभीष मनोक्षण पर आलेज्यि बिश्व्वभ विनीक्रि विश्व विश्वत्र बनते भाहे शम का जिने जी भक्ति विश्व प्रेमी तरी जड़ते। अवध ने विश्व नुमिशक्त भालवा चलवा हूँ से भजन अंतः है क्या ती विने बाही निर्मल बीमा री विने बाही बीमा री निर्मल बीमा री बनाए। निर्मल भालकर भाषण भुज हूँ मे भाहे वे मनावें जी में वा ग्याम नाहे।

अपने में शिंगे शी तयित बे में बाही बाही है नं उद चित्तृ करनार दे से बुद्धिन शिंगे बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही बाही

(169)
वर्तमान (मात्रलिख) हर भाषा की बोल-बच्च सभी है जानी। भवे दे तुझ नवरात्री देवों के दिन एक ज्योति किंची वि द्रमाभि हु कदर लग दिन सिंह त्रिका है भवे दिन अस्व दैस्ते-दैस्ते गम्भीरता मंदिर-मंदिर अर्थिय जसलंग उन लार्ड बुझाँ। दिन 'रे' गम्भीरता मंदिर-मंदिर अर्थिय जसलंग के सर्गराम है दिग्विजय वीर अर्थ इजाफिया तनसुद्र ती सर उद वेदिंग सूर्यधारा सूजी है। दस मूंतिया है वि द्रमाभि(३) भु करे वहिमाण ते रघु दिन्दा है। ने वर दिन अस्व ठीक रूपी हाँ भामी लघु पूर्वार्थ हने दिन समथारक उतारे। (भवानु मात्रा परिक्ष दिनां वि मांडों लघु भवे दिन समथारक देवों, रिसुं बड़ों देवी नी, विसर्ब दिन बड़ा मांडो हिम लघी भामी हिम दिनां चे पर्थक तरी ज्यों)। ने ठीक दिन पूर वर्तमान वहिमाण वेदि वि मंदिर मात्रा विषय दो नां भामी लघु तत्वे पदांजों ने दिन दिन लघु वर्तमान क्षिति भावे पार्वती। पूर दिन पूर ठीक भेंटी वैशाख (स्वस्थान) वर्तमान अभय दिन आसमान वि पुंछ में मांडो में भाव दे तुझ भालिया मी दिने तत्व विषय में मिशपी दिन बड़ा मिल्का अर्थ दहुँकीण रुपा दिन दुधे दुधे हंसभां महिमा दुधे दुधे गम्भीरता मंदिर-मंदिर अर्थिय जसलंग दे रंग 'रे दुधी' हें परिक्ष हैवाभि वहिमान वर्त में मांडो विश्व ह्या 'रे' दुधी' हें परिक्ष हैवाभि वहिमान वर्त में मांडो विश्व ह्या 'रे' दुधी' हें परिक्ष हैवाभि वहिमान वर्त में मांडो विश्व ह्या 'रे' दुधी' हें परिक्ष हैवाभि वहिमान वर्त में मांडो विश्व ह्या 'रे' दुधी' हें परिक्ष हैवाभि वहिमान वर्त में मांडो विश्व ह्या 'रे' दुधी' हें परिक्ष हैवाभि वहिमान वर्त में मांडो विश्व ह्या 'रे' दुधी' हें परिक्ष हैवाभि वहिमान वर्त में मांडो विश्व ह्या 'रे' दुधी' हें परिक्ष हैवाभि वहिमान वर्त में मांडो विश्व ह्या 'रे' दुधी' हें परिक्ष हैवाभि वहिमान वर्त में मांडो विश्व ह्या 'रे' दुधी' हें परिक्ष हैवाभि वहिमान वर्त में मांडो
एहँद रे रेमिथा वि भेंवे ऐंचे फिम माल उं खुंभज दी भाभिता लनी रे मलवे । यह बलाइ माल भाभिता चेत लली फिमस उत। फिम लली फिम यंहे मालें वड़ लली क्षेत्रं दे अनंते फूंडितिपी फिमलद वत दिंदे उत।

उत्तर जंभाण्डे (c) दे आप्तं दे लुक फिम भावे मंधे यु फिम खेतीम (मालंढ़े) मुंदें रमी मालें दली अप्ती में दिंद उपर दौमिता अनं जंभें फिमिता फिमसा।

जंपणीताणे दे मालें दीमां मालंढ़े

तेंघ दे रं ‘इंद मालें दीमां मालंढे मिंघें अभयुँडूळ (मांडँखरं प्रहैवी वमलं) अनं मोळ फिमें छिंदें (रूंडितिपी भेंर) दे फिमसल फिमिठिद बदवीमा उद वि मोळ रम माल सली बैंडी बैंडी मंडी वे। ते फिमिताळी हूमिता (मांडँखरं प्रहैवी वमलं) रुल लबल रभुं दे मुंदें रुल जंभें वड़ चापे दब याना वत मलके हे भें मे फिमिताळी बूमीम रुल लबल रभुं चापे दे मालें वड़ चापे दब दी याना वत मलके हे।

तेंघ वैंडी लउँ मिमें फिमें फिमें मेंडू बैंडी वैंडी मेंडू सां भाले हूली दीमां दे तेंघ अप्ते फिमें दो भूमेरी (मुंदेरी) सी भाली दे फिमें भूमिता मांडँखरं प्रहैवी वमलं हेंड वारे उं दुंदे मिमें मिमें सं हूमेरी हेंड मलरं दिंद नांजेणा। पद मेंव भूमिता (मांडँखरं प्रहैवी वमलं) दे मालीणा दिंदे बैंडी बूमीम दें बारे उं दुंद मू मलरिता दीमां नांजेणा। भूमिता (मांडँखरं प्रहैवी वमलं) फिम माल भेंवे दिंद हूमल दें फिमें दिंद हूमल मलड मारो, पद माल क्षेती माल भूमिता (मांडँखरं प्रहैवी वमलं) अनं दूंतं दे माली मेंवे भा मलके उं अनं दिंद हूमल दिंद हूमल के बारे दा उड़ाउ वत मलके उत। फिम दबें दिंद हूमल मलड दे वापस धांडी दुंद हूमल चापे मारो। पद दिंद माल वैंडी वि लव भूमिता (मांडँखरं प्रहैवी वमलं) अनं दूंतं दे माली मेंवे दिंद हूमल दें बारे उं दुंतं बैंड घरिता मारो दे मिंने दिंदे दुंम दे पावें दे चाप नप। अनं मालान बिमाणह दिंद भाली वैंडी लउँडर। (फिमें दौमिता, वारा 2, पंक्ति 180, (172)

(172)
(173)
(174)
अपने घिरा लेने सहि देख देख दिख मनी । चपम भरक देख लरी मलंश भन। दूरों के उतरूँ विभवता दिँसे देख लरीभा भरे दिम बृह उन दिनमा वर विभव दिं दिं भर भरको भर अपने भरी हुई दिम दे देख देख देख देख देख देख देख। अभू भवररा के अपने भर ती विमुर्दूर समेलन आठम आठम विश्वव ती देखन। अथ भरी भवमुर तू है देखे तू भरी भरी दिम बृह कर वर विभव दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं दिं ही देख। दिम भररई भररई विमुर्दूर समेलन आठम मलंश दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम दिम
वायपायं ते तां पंदव

मसूं पंदव आपूर्व भागें वमुरुपायं मांकलपः अथवा दमखं ते
हरिं धिम्रपण बींडः वें भाग्य आपदे पुत्तः हे बुढाभा ते बसिःशा उः पद
पुनर्जुगें। तद्य आपदे आपदे धिम धिमासे ता वहांडट आपदे मरचा भागे
बींडः उः बुढः मरचा हे ते घमच्छरी दुःखां धे मांकलपः म्हण वस्तुपर्यं नाम्रहे
धिमासे अथवा दमखं भागे विवृत बींडः हे वमुरुपायं। घमच्छरी दिवसः भुजः
हे धुं (पंदव) तुम्ह हैं। धिम उः भागः हे हिंद भुज्य वरुःध्यी
धिम उः “भूकम्भर वमुरुपायं” ते मरचा म्हण्ये। तवेदः मसूंतः म्हे
आपदे मध्य हे हिंदूह “केशर” य वस्तु धिमासे पंदव उः”वमुरुपाय अथव
हिंद उः भुज्य “भूकम्भर” ता।

भूकम्भर मध्य 628 ती। हिंद दमखें वलीभ मांकलपः अथवा दमखं तः
पंदव हैं हे धुं–धुं सर्वात्स मध्याः सत्य ते सत्य तः कः जः। दिवसः हिंदः हिंद
पंदव धें भागच्छर मेन वस्तु मी। हिंद पंदव धीरात्स ते घमच्छर वस्तु मी।
हिंद पंदव भीमासे ते घमच्छर वस्तु मी। तवेदः मसूंतः म्हे
आपदे मध्य हे हिंदूह “केशर” य वस्तु धिमासे पंदव उः ही आपदे पंदव सिधः।

तवेदः ते घमच्छर उःसत्य ते तां पंदव

धें तेघ घमच्छर कैमत दा पंदव मरणी चीव्या वत्सी(३) ते धें
धिमासे विष्णु विष्णु मी। भागः हे धुंमुडः आधेंचा धिंदुः मी विर पहिंढः घमासे
ते गाढ़लत वेळा नामः ते भागव देवमाः मी अथै धिंद उः धें भागः पुत्तः
पुनर्जुगें। म्हे धिमासे वत्सी(३) गाढ़लत घमाः वेला पंदव हैं ते पुत्तः उः
मांकलप ते पुजरी धिंदुः कैमत, मसूं (मसूं) ते हे धें धुंमुडः आधिः
वेला मी। धिम धुंमुडः घमाः ते गाढ़लत ते चीव्या दा धुंमुडः वेळा धिमासे
धिंदुः। म्हे धिमासे घमाः ते गाढ़लत उः धें स्त्री धिंदुः ते भागव नामः
स्त्री मांकलपः मध्य हे हिंदूह ते में हंदे धिंद उः पुत्तः हे भागव नामः
हे उह शिव शिवान्त छटी भूती है वि नु बैमत ठुँ मनावः बँधे ।

सीजनः ते यहलगळ बल दिंडः अँहे लिङः वि आमी भूमरभास निमे अहूँध
ँ मनाल ठुँवा बँधे । शिम शिम शिम मनाल शीर्षां भां धीमः ते मागम्बः बँधे अँहे यंडः यग बँधुः ।

धाममर्गः ते अल्हूँसबः ठुँवा दुङ्डः दभ्याः अँहे तिल दिंडः वि शेवी असव रङ संगः आजिछः ठँढः उँ हैंगःः गुर्गः ठुँ यँगः बँधे उँगः में शिम शिवान्त छो हमाल दँडःः यन्यः मः यह ।

नभेंगः ठुँगः भूवः-भूमरभास दिल बंगरः ते ठँढः धीमः मः गुहिये आजिछः शीर्षां मः ।

इँटः दे अबमाल भूवः मुमरभासः ठुँ धाममर्गः सी मेंगः दिंडः हे बँधे ।

धाममर्गः ते तिल दिंडः वि भूमरभासः ठुँ मः मेंगःः बँधे अँहे भँडः बँधुः सङः मःः अँहे आजिछः दिंडः वि नेवः भूवः मुमरभासः निमे गँडः दिंडः यँगः बँधे उँगः धीमः दे मःसी वँटः धीमः रङ बँधः बँधः । लितः हँबः भूवः मुमरभासः हःः हूँमाळ पँखःः ।

पुमः- किंतः शिवान्तः मः तङःबः (भूमरभासः तङः) रङः बँधः बँधः ।

वि आमी धीमःः तङःदे दे, धीमः रङः करश्चा (धीमः) लिने लिङः हैः?

पुमः- धीमः मः किंतः शीर्षां, लितः भँडः बँधः अँहे दिंडः निमे दिवः ते जः बँधे अँहे यसे मः करश्चा हःः?

पुमः- किंतः हःः शीर्षां, लितः धीमःः तङः किंतः शीर्षां 'इँ मः यः बँधः अँहे दिंडः तङः 'िँ यः' शीर्षां बँधः अँहे यसे मः किंतः?

पुमः- धीमः रङः किंतः शीर्षां, लितः धीमः रङः किंतः शीर्षां 'इँ मः यः' बँधः अँहे दिंडः तङः 'िँ यः' शीर्षां बँधः अँहे यसे मः किंतः?

पुमः- धीमः मः किंतः शीर्षां, लितः धीमः रङः किंतः 'िँ यः' वि नेवः भूमरभासः बँधः अँहे यसे मः किंतः?
भूमत- दिव घटनाएं है प्रक्षेपण, दूर ही मुख-मुख भरे दूर ही लगे छोटे छोटे गृही तुषी है?

भूमत- अब मुखजन हैं दृढ़ झिंग, आर्द्री दूर ही मुख-मुख भरे लगे दिव लड़े जाती आव (धूलम) रुधै लेबिषण।

भूमत- दिव नैति है प्रक्षेपण वी देह-देह पुघा मलाली भरे मबीनात है, दूर ही समझ निंद स्थान दूरे जरूर मां निवारण हो आगे होग? दिवत- अब मुखजन हैं दृढ़ झिंग, निवारण, आगे होग अबे नेपुच्छ होग।

भूमत- दिव दूरे प्रक्षेपण, दूर भरे जरूर मां देखे जरूर?

भूमत- अब मुखजन हैं दृढ़ झिंग, देखे जरूर।

भूमत- दिव दूरे प्रक्षेपण, वी दूरे देह भरे पृथक ही कीर्तित हो?

भूमत- अब मुखजन हैं दृढ़ झिंग, अव उंद उंद रुधै। अब गुढ़ अर्थी दिव तरे मासिकड़ बीज दे। देखि गुढ़ दूर दिम घरे ती नमरूत हो?

भूमत- दिव दूरे प्रक्षेपण, वी दूरे भरे प्रक्षेपण देखे वैसी सेना ही वैसी हो?

भूमत- अब मुखजन हैं दृढ़ झिंग, देखे.

भूमत- दिम 'के घटनाएं है प्रक्षेपण, दिव दूरे तैरा हरा ता मिट्टा ती निवारण हो?

भूमत- अब मुखजन हैं दृढ़ झिंग, नाट दे क्षेत्र मिट्टा हो। वारे मये रेख दिव दूरे है वारे दूरे प्रक्षेपण देख हेड दुरे है। दिव दूर 'घटन' ही मना दैशी, संस्मृत हैं दूर हों दिव दिम तस्कर है।

भूमत- दूर 'घटन' ही मना दैशी दूर मंदे में मांबंधर मी, भर्मी दूरे हैं दिवरे पारें, देश देह आजे रेते दैशीभाग।

भूमत- दिव नैति है प्रक्षेपण, दूर भरे जाते वी गुढ़ झिंग हो?

(178)
वैमेने वेभ दा सिंटा विर आंगलज शीर्षक को अधीक्ष बनाए 
बामख भने रध्मी बनाएः

विमा 'उँ वैमेने रे लिउ मलाईः । में उनलाई छिन पुमूड रीडा मी वि छिन रा ब्रे लिउ शिउँग विै, दुम्मी विरा छुए दीम रेैव चिंगा वे अढ़े रध्मी छोर (बुन्नाउ) उपमा अवधे दी विद्या बड़ेः उठः। वित हे पुंडिक्षा वि विमा दे पविल्लाँ विे मिश्रिकार दे अवधे दुबा रीडा वे, उं दुम्मी विरा रध्मीः। 

विद पुमूड में विमा दुवी ब्ररा मी वि सेवर दीम दे पविल्लाँ विे मिश्रिकार दे नेखे ने में दिन अवधे दुबा ब्ररा रुङ्ग उं में समझा वि विद दी दुबाली रध्म नव लिउः। अढ़े वित में पुंडिक्षा वि दी विमा दे पविल्लाँ दीम 'उँ रे बाड़ दुः दी दिवे ब्ररा विद्या विद्या वे अढ़े दुम्मी विरा रध्मीः। उं में समझ दिशा वि से मिश्रिकार दुबाली गठे दुः दुर्दी ब्रेव्ता छुए दुबा गठे दी दुर्दी ब्रे विद्या। वित में दुवाँ पुंडिक्षा, दीम दे दद लिउँग 'उँ रे बाड़ी ब्ररा कोँ दी मी। दुम्मी विरा रध्मीः। उं में समझ दिशा वि दिउँग दे ने दद दुबा दिउँग रध्मी वि दिउँग अवधे दद-ददे दे देमा द्वाय देव्त पुंडिक्षा वे। वित में दुवाँ पुंडिक्षा वि पुमूड श्रीमती दे मातीदुर्दी देव दीम दी समझ दिउँग दद्दुः उठः उं में दिताँ उँ अवधे देव्त, उं दुम्मी दुवाँ पुंडिक्षा वि अवधे दे अवधे देव्त, उं में मिश्रिकार वि में दद दुबालीः दी समझ दिउँग दे ने अवधे देव्त अढ़े
फिरपत धेव जिन समस्या निदेश करते रहे तो व सुप्रभावक अनि पुरुष धेव 
हो। ये में उपरिमा धर्म तिथि छोटे घर मंगल प्रसंग तो उठ, हे उग्र हेम धु धर्म छोटे घर। ये अत्यधिक परिवथ धर्म की शाही बदलनी है।

न उठ धु धर्म (इसवीं शताब्दी) उठ शरीर पहुँच स्वर्णी दुल्हन में उठ धु धर्म संग्रह रहे गए। ये में उग्र हेम धर्म व वैष्णव-धर्मी श्रीमती तीर्था धेर प्राचीन न नवे ज्ञान की पुष्प है तथा उग्र हेम धर्म ती, अत: अनेक धर्माधि धर्म नामों का सामान्य रहे गए है। ये तथा उग्र हेम नन्दा व वैष्णव-धर्मी दियाँ जाए तथा धर्म तीर्था धेर महज़े चुनी निर्दिष्ट। ये में उग्र हेम धर्म व वैष्णव-धर्मी व वैष्णव-धर्मी दियाँ जाए तथा धर्म तीर्था धेर महज़े चुनी निर्दिष्ट। ये में उग्र हेम धर्म व वैष्णव-धर्मी दियाँ जाए तथा धर्म तीर्था धेर महज़े चुनी निर्दिष्ट। ये में उग्र हेम धर्म व वैष्णव-धर्मी दियाँ जाए तथा धर्म तीर्था धेर महज़े चुनी निर्दिष्ट। ये में उग्र हेम धर्म व वैष्णव-धर्मी दियाँ जाए तथा धर्म तीर्था धेर महज़े चुनी निर्दिष्ट। ये में उग्र हेम धर्म व वैष्णव-धर्मी दियाँ जाए तथा धर्म तीर्था धेर महज़े चुनी निर्दिष्ट। ये में उग्र हेम धर्म व वैष्णव-धर्मी दियाँ जाए तथा धर्म तीर्था धेर महज़े चुनी निर्दिष्ट।

धु धर्म तीर्था निदं धन्य ते हुए ते स्वस्तिंग्न निदं तो-पुरं निदं व ये श्वास्ने 
भूँ धु धर्म तीर्था निदं धन्य ते हुए ते स्वस्तिंग्न निदं तो-पुरं निदं व ये श्वास्ने 

(180)
अभष्ट शुद्धपुजा अभि ठिंग देव मापीयण्यांत्र हे सत्यां "ते बनक लघु जिंडा"।

आंद्रेबाद मॊर्तक्षे अलैि दामल्हम देव उवल्ल दे तमः

विषे जंव द्वारा प्रस्ताव

विषे जंव द्वारा वमुरुक्त सेर्वक्षे अलैि दामल्हम देव बैमव दे तमः

विषे जंव द्वारा प्रस्ताव

अत्यथ विस्तर भोजपुर अंबाप दे चंदे अभि ठिंग देव उम्मेद देनें हेमः

अत्यथ विस्तर भोजपुर अंबाप दे चंदे अभि ठिंग देव उम्मेद देनें हेमः
साप्ताहिक, ने उड़ाये अंडे मस्त लिंड मंगनी ते। अत्यधिक आभारी तेंच ते चिहार लिमे
रेन दी धमरी ह लगी ते। अते लिमे चीता हु पुंछन मगील ह घटाने हो।
अते अंडां ते बिलाक लिमे घटे हु मठी मंगल ह टेलौडे लिमे बिला दुकी
बुतर रुख सापतिश माट लें। नेवर भुमिय देन भुमिय (सीमाती) दिन
बिला मंड पै रात बाले दिनेंकाट हु भुलक ह रकर मंगे हु भुमिय
बुतरुवर अंडे दुपारे दे मापी दी। दुपारे हु भाष दिन लिमे आभारी दं तेंच
de अलिबाबाली ते।
बुतर दिका, भुमिय दुहस दिन्इलिया दी दि नय दिन पेंड बसमाधुर
de मगरोस्य धेरा दिन्इलिया हुन द्वारीयां हे दिन लिमे दिन पेंड
hू पार दे मॅंट पेंडा सरफीर है दिखीव दिन दिन्इलिया दी देही बीडी
बाले हु अंडे पेंड दे बिला बसमाधुर कैम दवी दिन्इलिया हिलावा सकाय
de भटाव धेरा हु दासी दिन्इलिया है दिन ठीक है।
अंड भटाव दं तेंच ती है,
में दृशी (भावन) दं मंड बुतरुवर मंगलघर आर्वी बालन दु हेम
हिला हु मुक्त दवी कां भाष हे भटावलिया। कैम दे बसमाधुर हे में दिन
हेम भुमिय भटावलिया है दिन दुवाले हेमी दुइभाद बसा हुसी मन्दीजी अंडे हुम
de ती मंगल देव उंड उभाद बसारी बेजीय। भागी आर्वी ही दिन्इमा।
बिकेरीजीया हुना दिन्इलिया दुइभाद दुभुमियवर मंगलघर आर्वी बालन
de दृशी (भावन) मंगलघर हेम रा बिला बाला धे बसमाधुर तेंच
hें दिन्इलिया हिलावा दु दिन दुएटा दे हे में मंड दबां देव दिम दे दृशीया
de दुहुद बुतरुवर दृष्टी दिनेंकाट हिला दिन्इलिया।
कैम दी दुहुद दिन्इलिया दुभुमियवर आर्वी दमाल दं पेंड बुदुवर दिन
de मुरलिया दिन।
हेम दं बसमाधुर भुमिय बुतरुके हु वड मंडी (मुरलिया) कैम दे बसमाधुर
dेंच गाजे दं बसमाधुर दे दुपारे हु दिलावृद्ध दवी दिन दुहुद भुमि
de भटावलिया भी दिन दुपारा दे दं डुके बुतरुका दे हेम दुहुद भटावलिया
ली में भॉ देव दं तेंच बेल मुरलिया है।
द्रवम (शीर्ष) हो चालक न्येल ता पेड़ा

अमरे बल्लभ मंडलके अराध्य विषयके वानात हैं तर पेड़ा द्रवम (शीर्ष) हो चालक न्येल ता पेड़ा। द्रवम न्येल लिखिता मी हुई अभज्जन चित्र गुमान दर्शी डिशपटिका विज्ञा मी। द्रवम हे प्रम्प दिया गया।

किराये श्रीमंत श्रीराम अर्थरसुल देवा। सलम उपरे द्रोह गोकुल राम देवा तथा सोल. श्रीदान देवा श्रीगुरु है। उन मुहम्मद शाफीक देव। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा।

उन हालची चोरी छिंटिता है। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा।

अभयश्री - अभयश्री दुःख तां ठं हे रे मे अभितंदन विषय शिरक्षा भत्ते दावे दारण विशिष्ट बना। द्रवम पेड़ा भूतावण द्रामक न्येल ता पेड़ा द्रवम (शीर्ष) हो चालक न्येल ता पेड़ा। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा।

बेझ था, बेझ था नरसीन दावे अभयश्री है। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा।

अभज्जन चित्र गुमान दर्शी दुःख अभयश्री है। श्रीदान अर्थरसुल देवा। श्रीदान अर्थरसुल देवा।
मुरादिश्वर उं विमल। तेह गुरु मठें चें गुरु मठें पूज गुरु मठें। तर अविकान चिह उपाय तें पिंच अहिम गुरु मठें। मलक ते से बड वने पंडु यस जीव जे, तेह द्वीमी सम्प्रदाय रान दी अभिज्ञ दी जीवन। विनाद ते से बड वने बन कह जीव, तेह द्वीमी सम्प्रदाय रान दी अभिज्ञ दी जीवन। विनाद ते से बड वने पंडु यस जीव जे, तेह द्वीमी सम्प्रदाय रान दी अभिज्ञ दी जीवन। विनाद ते से बड वने पंडु यस जीव जे, तेह द्वीमी सम्प्रदाय रान दी अभिज्ञ दी जीवन। विनाद ते से बड वने पंडु यस जीव जे, तेह द्वीमी सम्प्रदाय रान दी अभिज्ञ दी जीवन। विनाद ते से बड वने पंडु यस जीव जे, तेह द्वीमी सम्प्रदाय रान दी अभिज्ञ दी जीवन।
(185)
उच्चमा (अध्यामित्वा-अब्दब्रह्मा) दे घड़माघ लमाघी

dेह उं पुँडत

डीमा पुँडत अपसे लमाघी दे हृं दिनिधिमा से अभित विष दिमेंजा

Java(२) दे उंघ हिरघिधिमा मी। दिमें पेंघ दिम पूरच मी।

ब्रह्माप्न रहमं रहिमं। मनुष रसुल लले नजाश्च मलक

लिपिशमा सम्मं नंत। अमा बुद दावेद अहमब लले जहा जहा

हो मलक गुदो दलमा मोमनं माहम। वास्तहं अवुसेय अपेम

रोह लले विकम्मे वात्पा ले मरम कुमाले दे मलम जो लले विलभ

श्रीकं ले लोमाला हृं दाता। वापं तामं वापं दे नामणं परमं दे नामं

प्रतित हृंष्ट्व दिनच से मलबरनू हृं पतर दिनं मी।

यिमं लली अहपे दिचलम भजं दिनी हृं देकं दिन व्यवमं देकं देकं दुःख

दीमिमा हृंष्ट्व दिनच से मलबरनू हृं पतर दिनं मी।

मैं दिमं देकं हृं हिमानी देकं भजं देकं देकं दुःख

मैं उभीं दच्यमं देकं, दिमं हिंसं दुभूल दी परेंदानं विलभम।

क्षमें क्षमें मैं देकं मलमं हृं पतर व्यवमं देकं

मैं उभीं दच्यमं देकं, दिमं हिंसं दुभूल दी परेंदानं विलभम।

(186)
कहे मत अथवे तें दे दुःख व मन्द्रक्षा हूँ खुले वरल कहे मत में अंधकार ते
भरकम ताल, मिलते अथवे तीव्रत तें चढी चढ़ वद जिना मी, तराक्षं दें
तीव्र रेडे मत। मैं भेंडू दिन गुरु निमाने बैठे कट्टी कट्टी ताल मंचिय नेकर
अथ नूस्ती भाविकावली वरल कट्टी कट्टी मी नागरक ताल दे जिना दिनअंगे
अथ दुरातू हिम और बी रंग जब (मंचा) दिनसे जो बिंदु भीते विस्ती कर
अथ जिम तें दुःख सीमार किरण निमा दे में हुए पुजार नीताम्य है, तराक्षं में
नूस्ती योग जाहू जाय। अथे में दुरःख निस्तीरल दिनदक जो अथे हहारं हेमा हूँ
ही नतव निस्तीरल दे पूर्वदाँस तें दे स्थीर दिन भाग्य दें निस्तीरल
दिनु दे। मैं अथवे निमाने भें हुले वद जिना है अथे तें दे नीताम्य रेडे
जेंव पुलु किना है अथे मददपव ताल दिन हूँ जसे के जबीव दें दिन दिनी है।
हिम नामी भें हिमायत का भले तें दे। जस निमाने तें दे निस्तीरल
दी हेती वरल दे जिम दुःख वरल दे मलामामा दुःख दिनी है।

में हिम हेंडू पुजार हमारी बेल पुलुम दे हिम में हेंडू मस्तकक ताल हिम पुजार
हूँ अथवे भें भले बाह्य भें बोध दे हेंडू वे देंई डरा है जिना अथे वरल
दिन हेमा दे जिम दें दिन निस्तीरल जिना है। हिम नामी दिन दें दिन निस्तीरल जिना
हूँ में हेंडू पुजार हेंडू मस्तकक हुले हेंडू दिन दिन हेंडू अथे तें दे
जेंव हिम पुजार मुदाधिक आरोता ताल की जुहाव मुदाधिक आरोता है।
हिम म्युल जहामी दे हिम दिन दें दिन मिथ्य दिना। हिम पुजार माता दे
जिम नामं निस्तीरल माता निस्तीरल माता हीवान बोध दे हेंडू होरिना
जिना, भव पुजार दे मोंरिंड ही निमा माता जिनव है। अथे उपाये दे
दिन जिने ही महामामा ताल मंचिय दिन जाहू जाय। दत्त सुभाष दे
स्थापना के अर्जक निमाने पुजारा ताल भी भी भें हेंडू हूँ में हेंडू
माता जिनव माता दे हेंडू हेंडू जिनव है। अथे उपाये दे मोंरिंड बोध
ताल की जुहाव म्युल दे हेंडू-हेंडू होरिना होरिना। भव पुजार दे
हिम हेंडू मिरिया जुहाव मोंरिंड।
भिम (विनिधाट) के राजसम्बर भविष्य दे तं ड़ूंग

उपरोक्त विनिधाट (विनिधाट) के राजसम्बर भविष्य देंस विनिधाट मी अर्थे दिन डंड भर्ती वनाशिः बिन भवी वस्तुभाग तरी भर्ती वस्तु तपों दिनाशिः। दिम डंड रा देश दिम यूरा राज मी।

बीसम नगरुल नाम। न मोहल रसूल लल्ल माफ़क्स उम्मीद ने पक्ष सलम्म सलम सलमुलिया अनुज हॅमेज दे भविष्य भववी दे राजसम्बर भविष्य देंस विनिधाट मी अर्थे विनिधाट वनाशिः बिन भवी वस्तुभाग तरी भर्ती वस्तु तपों दिनाशिः। दिम डंड रा देश दिम यूरा राज मी।
वेदं भुज़ं वुधं थूंदरे दे मैं भें अभिन्न भुज़ं थूंदरे यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा नानी हृद भीतर यात्रा

(189)
भारत 'के हिंदू निधन'। दिन 'डे नाबाम के विभा में दूर लक्षि दे
रक्तम सुके उठ आदें में दिन अदबद्व लक्ष्य उं दि दिन दिने डेंगी गोद रा
बुधब करों दिनः अदें दिने रेजी गाथ उं रेजी रेज्य आदें में भा
ज्ञानिका है व के दिन दिनविकरी साड़ूरक तांगा तरी है। ये दिनटीम सुब
बलिकारीया सुतीका उठ ने पुनरी वैशीका उठ। दिन दिन के दिन उपयो
शें द हंग भवानिका अदें दिन दिन बसूतुरए मैंने पहली कहा के पंजाब
के पंजाब तंग दिँदा अदें दिन 'डे भूत लुजा दिँदी। अदें जनहारी दिन
समी के मुखत वत दिँदा। दिन दिन के बसूतुरए मैंने पहली कहा के पंजाब
दे हं दिन पंजाब दिनिका।

चित्रहितितिन तिनिकितिन जीविका
भूमिका दिन बसूतुरए दंड भवाम वहीका रा बसूतुरए पंजाब
विभा है द अदें 'दीनः महाभारत दे। दिन दिन भवाम में दिन दिनविकरी उं
कि में भवाम भर पँ दिनः है अदें से बुध आप के दिन दिन बलिका
लीला है अदें दिनः दिंगों दंड दिनः दिनिका है दिनः दे दीनः दीनः है अदें में
उर तंग है व के दिनटीम बलिकारीया अदुमात दिन तरी रा भारी
अम वाली है, उर भूत दिनिका मी व के दिन जाम (वीकीका) 'डे पूरत
वैदेशा। में अदें दुरं तुं दंदे मौजव रासा दिनिका दिनिका है अदें
दिन उरमाई दंड अदें पूरा में दीनः में बलिका (दिन दिन पान में जा में दें महाभार
दों दिंदे संघं उं) है दुध दिंदे दूर तुं दिंदे उं अदें में दे भमानी
जीविका अदें दुध डुररम दे कुध दिंदे दिकमा दिवा उं। वहीका रंडी
तेंदे दिंदे संघरीया दंड जुड़ा में अदें दुधकङ दिंदे दिनः दं हं
भीका अदें दिनः दं मीरी दं। अदें भमानी ज़मरं दे कुध बेटे दे
दीर (20) में दीर ही अभ दी में दिंदे दिमा दिवा उं। हम दुध दिन
वज्र अभ दी महती दी किसान दिमा दिवा उं अदें अंडें दिंदे दिनः दुधा
जुड़ा उं व के अभ 'हे दंड ही महाभारत दे।

(भवाम, उंड 2, पट्टा 349-350, द उंड 3, पट्टा 1559)

दिन पंजाब दे पट्टा जामात है व के भवाम के अभ दे पंजाब राज अदें
चतुर्भीति देव मकरण्येन देवं घुटोऽ

भृणां घुटोऽ अभिषेक भृणाम देवस्मृतिः देवस्मृतिः देवस्मृतिः देवस्मृतिः

(वर्ष 72)
वर्षीय उम्मीद दे मतरंग, घरी भातीभ दे मतरंग, उनके वर्षीय दे मतरंग बंद दी पंद दिखे मित्रों दिनं भविष्य भविष्य भविष्य दे मतरंग

(192)
वास्तवतः हूँ उत्तम होते ही ते आदर्श मात्र, परं भाषण उपचार हो आपके विशेष विवरण राष्ट्र भाष्य हूँ मुश्किलात्मक विषयमात्र । विवरण के पुनर्लिखन के विशेष विषय हूँ राष्ट्र भाष्य हूँ मुश्किलात्मक विषयमात्र । समस्त है वि प्रेम वेंध ही विषेष विषय हूँ राष्ट्र भाष्य हूँ मुश्किलात्मक विषयमात्र। 

(193)
दिल्ली अस्पताल और गैर अस्पताल की सेवाओं के लिए निम्न परिक्रमा निर्देशित कर दी गई है। केंद्रीय सरकार और राज्य सरकारों को इसका समर्थन किया जाना चाहिए।

दिल्ली अस्पताल परिक्रमा

1. सेवा की विभागों में जाने के लिए दर्शावत अस्पताल की स्थानीय परिक्रमा का प्रयोग करें।
2. सेवाओं का समन्वय करने के लिए विभिन्न स्थलों का निर्देशन करें।
3. सेवाओं के लिए विभिन्न स्थलों का निर्देशन करें।
4. सेवाओं के लिए विभिन्न स्थलों का निर्देशन करें।
5. सेवाओं के लिए विभिन्न स्थलों का निर्देशन करें।
6. सेवाओं के लिए विभिन्न स्थलों का निर्देशन करें।
7. सेवाओं के लिए विभिन्न स्थलों का निर्देशन करें।
8. सेवाओं के लिए विभिन्न स्थलों का निर्देशन करें।
9. सेवाओं के लिए विभिन्न स्थलों का निर्देशन करें।
10. सेवाओं के लिए विभिन्न स्थलों का निर्देशन करें।

(194)
भूमि ! हूँ भगवान् दे वन्यपाय तुम्ह जिन्हाँ वर्तम सुझी ।

(अलं मृतकुल उपजीविनः रचना 3, पंक्ति 50)

दिय दूसरे दिशा सबसे विराज विर भव्य है श्रेष्ठ है सेवी सिंह श्रेष्ठ है । नेता श्रेष्ठ है दिशा दिख देखना वि भव्य है श्रेष्ठ है सेवी सिंह भव्य है वि श्रेष्ठ है दिख देखना वि भव्य है श्रेष्ठ है सेवी सिंह दिख देखना वि भव्य है श्रेष्ठ है सेवी सिंह दिख देखना वि भव्य है श्रेष्ठ है सेवी सिंह दिख देखना वि भव्य है श्रेष्ठ है सेवी सिंह दिख देखना ।

दिय दिख देखना श्रेष्ठ है दिख देखना वि भव्य है श्रेष्ठ है सेवी सिंह दिख देखना वि भव्य है श्रेष्ठ है सेवी सिंह दिख देखना वि भव्य है श्रेष्ठ है सेवी सिंह दिख देखना वि भव्य है श्रेष्ठ है सेवी सिंह दिख देखना वि भव्य है श्रेष्ठ है सेवी सिंह दिख देखना

(अलं मृतकुल उपजीविनः रचना 3, पंक्ति 44)
हिंद अक्षराक के धरण लक्ष्य है विशेषतः संस्कृत भाषा के अधिक साधनीय विद्वानता के संबंध में उपयोगिता तथा अभ्यास कार्य के उद्देश्य से।

 histories देखने के लिए निम्नलिखित संस्कृत भाषा के अभ्यास कार्य के उद्देश्य से।

 histories देखने के लिए निम्नलिखित संस्कृत भाषा के अभ्यास कार्य के उद्देश्य से।

 histories देखने के लिए निम्नलिखित संस्कृत भाषा के अभ्यास कार्य के उद्देश्य से।

 histories देखने के लिए निम्नलिखित संस्कृत भाषा के अभ्यास कार्य के उद्देश्य से।

 histories देखने के लिए निम्नलिखित संस्कृत भाषा के अभ्यास कार्य के उद्देश्य से।

 histories देखने के लिए निम्नलिखित संस्कृत भाषा के अभ्यास कार्य के उद्देश्य से।

 histories देखने के लिए निम्नलिखित संस्कृत भाषा के अभ्यास कार्य के उद्देश्य से।

 histories देखने के लिए निम्नलिखित संस्कृत भाषा के अभ्यास कार्य के उद्देश्य से।

 histories देखने के लिए निम्नलिखित संस्कृत भाषा के अभ्यास कार्य के उद्देश्य से।

 histories देखने के लिए निम्नलिखित संस्कृत भाषा के अभ्यास कार्य के उद्देश्य से।

 histories देखने के लिए निम्नलिखित संस्कृत भाषा के अभ्यास कार्य के उद्देश्य से।
विशेष दिन के मेहनत किरदार वेलिंग है जिन भाग थिंग गलत विशेष गृह निष्ठा निष्ठा रहे । (दिन के दिन आपके नीचे विन आप ने दिन काटे भविष्य केन्द्र (केन्द्रीय वन्य) गृह निष्ठा को । में दिन आपके या दिन भर्ती है । भर्ती दिन के आलय दिन या दिन काट भर्ती निष्ठा निष्ठा है । दिन की तुलनात्मक विशेष वाणी भूमा आत्मविश्व भूमा न्यूज़- दिन के भविष्य निष्ठा निष्ठा रहे । दिन की तुलनात्मक विशेष वाणी भूमा आत्मविश्व भूमा न्यूज़- दिन के भविष्य निष्ठा निष्ठा है । दिन की तुलनात्मक विशेष वाणी भूमा आत्मविश्व भूमा न्यूज़- दिन के भविष्य निष्ठा निष्ठा है ।
क्रिया बि धुम दे स्पेक्ट्र विश्लेषण है । धिम के आधा के धुमकूट हावर्ड बि धिंग देखा वर्तमान कोटा की जिविंकी बंद के पूरे उदाहरण, धुम के धुमकूट हावर्ड बि ने कहा के वर्तमान धन की तेज़ी मी हटूं एंड में सच समीक्षी धिम रजनी धिंग भाई बने मह। मेंसा भर धिंग दिइय विषय आविष्कार बि में धुमकूट हू हावर्ड बि धिंग है । सेवां धुमकूट हू वर्त दिइय भी विदेश मंच धरू धिंग हूं भरली पूर्ण दे राजीवी भरे मेंसा भर धिंग दरमाद धिंग रजनी देवसं ओं तेंद धिंग हूं धरा धहनें। बद्दुपे वनिम मेंसा की भी वामन दे धुम दी धिंग गाल मुखबे धुमकूट भ्राद वर्त हिंदु । (भारतीय कुल उपशासना, दल 3, पंक्ता 61)। धुम पर रंग से दरमाद धिंग बनट मी हे धिंग। धिंग अटल समसी दै बि अथत लिंक आपटे भ्राद वातिल भरे उपटे मिउस हू भ्राद वातिल हू कधम विश्व बनटे मह। भाव किंग अथत धुम मेंं हेंड दे लिहा बलबे मह नए लिंक विभागी दा सीमित वरिस विस्तरित लिंग घट्ट माने वातिल हू लचवादे महदे मी।

बधें र उदाहर

पिमड हे बोंडरे महर डवली 629 दी। लिंग महबूब आहत आभा" के उदाहर हरी मारी मी। धिम शंकी नह धुम महर आविष्कार हं आधा के वम वातावरण मचे लाज दे उदाहर हरी उठे। मह आधा भूतों वर्तमान उद पहुँचे दे मते दे दिइय जग्स दे ती।। महबूब आहत आभा के मारे कारी उदास भरे मारी (वर्त मधुर) धुम के महर धिंग आफ़ आधा आभा आसे आधा मधुर मटे महबूब आहत वतहा विभागस्थल उदाहरण के तदह उदाहर (धतू-लाघ दा परिवार) लिंग राष्ट्र रहे।। मेंव महर भिखा बधें (वर्त दीवार) महाकेव भुतमान दे मते लिंग राष्ट्र तेंद सेवी भी मामली बोल शरी मी।। धुमकूट दे भर धिम पामे दा धीम आविष्कार हं महबूब वतहे उदाहर दुगों उदे मह में मेंव धिंग धुमकूट दिइय दीवी संघे मह, भरे धुमों पामे तंज ही धुम विका हू दे तेंद दे लिड उद दे धुमकूट हू तथे रा उदाहर वतहे रा आहत तमीश बीजा " है, धुम ध्रम ही दे लगे मह। मेंवे
अन्तर्भाषकः मेलिने अलैंधिः समस्या देखिए ते हेम

विभाग बदले के आपकी या हुई है

हेम भट्टू वेसी अभी भट्टू वर्णी मिकन्हु दिम मेघद मीठी दिंदुः

(199)
वास्तवीकरण संरचना, जिसे पूर्वत में सीधी में दिया मईं हिंद विभ कर गए । वह हिंद अर्थम् कि रेख पेश ने भीतर मातृत्व वजन ने दिया हिंद मातृत्वीय अर्थम् हूँ दिया तथा इतना हिंद दिया है कि नूनों में वाणिज्य में जीवन में मथवान भविष्यवादी हुएं जिने मंत्र पूर्ववर्त पाए उन ने विचाररह दीवारनां वेदी पत्थरों मध्य हो सक्ष किया आधुनिक दिया वजन तृण चिन्तन मोह मतलिया (आत्मवाद आर्थिक आदर्श) लगभग 'ए एंग दी पत्थर चंपुचे दंड' (की बिनाम नं आवश्यकीय अगु इनड टी । वह अन्तर्गत हिंद में मेंंग ने बीड़ ताल बैठे उन में अपनी दी पत्थरीन में आधुनिक दिया वजन तृण चिन्तन मोह मतलिया (आत्मवाद आर्थिक आदर्श) में फिर पत्थरी रहे पूर्व के रेखयोग दी आधुनिक पत्थरी ताल आधुनिक दी ताल। नेताजी आधुनिक रेखयोग दी पत्थरी आधुनिक पत्थरी ने एक निधान दी मतलिया (आत्मवाद आर्थिक आदर्श) है जिसे मध्य पत्थरी, आधुनिक दी पत्थरी, मध्य ने अपनी पत्थरी वजन तृण चिन्तन मोह मतलिया के भी जिने तुझी समय अंदर एवं पूर्व उठे । वह आधुनिक पत्थरीन दे मध्य हिंद अध की में भूमि मध्य आधुनिक दी पत्थरी में एक पुराना वजन तृण चिन्तन मोह मतलिया (आत्मवाद आर्थिक आदर्श) से भी जिने तुझी समय अंदर एवं पूर्व उठे। पूर्व प्रत्येके में हिंद वजन तृण चिन्तन मोह मतलिया (आत्मवाद आर्थिक आदर्श) कि भी जिने तुझी समय अंदर एवं पूर्व उठे। पूर्व प्रत्येके में हिंद वजन तृण चिन्तन मोह मतलिया (आत्मवाद आर्थिक आदर्श) कि भी जिने तुझी समय अंदर एवं पूर्व उठे।
सिस्मार भुक्त नवरा

वर्षे के स्वसार १७ भवदर्भ २०४२ जी के अभिलेख दिन विश्वास सभी वर्षे के सम्बन्धी संगा के अवधि के तौर पर देखे। मैं यह बताना चाहूँ जबकि दिन देखी थी हमारी प्रतिक और उन्हें स्वीकार करता हूँ। यह स्मृति प्रियका जी के अभिलेख बहुत भवदर्भ नवरा के सम्बन्धी सभी लोगों को इस स्मृति के सम्बन्धी सहकर्मी धार्मिक हैं।

'भेड़' की तिरंगा

सर भाषा(२८) कांग्रेस के राष्ट्रपति (श्रीमती) से मार्गों रखने वालों की आशा से मार्गों पर रखने की आशा (महात्मा) के समस्त मार्गों रखने के लिए, स्वीकार के प्रति हमें सम्बन्धी हैं। वर्षा के स्वीकार तथा बहुत हर रूपों के लिए, झलकी आशा के समस्त मार्गों रखने के लिए हमें सम्बन्धी हैं।
पुस्तक वर्तमान वि दित्य अभ्यास परियोजना शिष्य दंड़ ठीक रहा है। सेंट दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल सभ्य अभ्यास परियोजना शिष्य दंड़ ठीक रहा है। पुस्तक वर्तमान वि दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल स�्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है। तथापि तुम्हें वि दित्य हेल सभ्य दीना । मंदिर के पुत्रों द्वारा पुरी के रूप में दिक्षा वि दित्य शासन विवेचन है विरित है।
मध्यमलोक-मध्यराति से निर्मत भूमिभाग रमुखेलां भौतिक ब्रह्मांड केंद्र
में मंच तथा उन में जुगी के दी निर्खणे राप्तम तरी पढ़े। मैंने ते खेज़ह दिनों विर तर भूमि हनुमन मंगळ गज़ देखियाँ। भूमिओं में मंच रमुखेलां का स्वरूप भूमिओं में आयियाँ। ब्रह्मांड केंद्र तथा उन में जुगी। दी निर्खणे राप्तम तरी पढ़े। मैंने ते खेज़ह दिनों विर तर भूमि हनुमन मंगळ गज़ देखियाँ। भूमिओं में मंच रमुखेलां का स्वरूप भूमिओं में आयियाँ। ब्रह्मांड केंद्र तथा उन में जुगी। दी निर्खणे राप्तम तरी पढ़े। मैंने ते खेज़ह दिनों विर तर भूमि हनुमन मंगळ गज़ देखियाँ। भूमिओं में मंच रमुखेलां का स्वरूप भूमिओं में आयियाँ। ब्रह्मांड केंद्र तथा उन में जुगी। दी निर्खणे राप्तम तरी पढ़े। मैंने ते खेज़ह दिनों विर तर भूमि हनुमन मंगळ गज़ देखियाँ। भूमिओं में मंच रमुखेलां का स्वरूप भूमिओं में आयियाँ। ब्रह्मांड केंद्र तथा उन में जुगी। दी निर्खणे राप्तम तरी पढ़े। मैंने ते खेज़ह दिनों विर तर भूमि हनुमन मंगळ गज़ देखियाँ। भूमिओं में मंच रमुखेलां का स्वरूप भूमिओं में आयियाँ। ब्रह्मांड केंद्र तथा उन में जुगी। दी निर्खणे राप्तम तरी पढ़े। मैंने ते खेज़ह दिनों विर तर भूमि हनुमन मंगळ गज़ देखियाँ। भूमिओं में मंच रमुखेलां का स्वरूप भूमिओं में आयियाँ। ब्रह्मांड केंद्र तथा उन में जुगी। दी निर्खणे राप्तम तरी पढ़े। मैंने ते खेज़ह दिनों विर तर भूमि हनुमन मंगळ गज़ देखियाँ। भूमिओं में मंच रमुखेलां का स्वरूप भूमिओं में आयियाँ। ब्रह्मांड केंद्र तथा उन में जुगी। दी निर्खणे राप्तम तरी पढ़े। मैंने ते खेज़ह दिनों विर तर भूमि हनुमन मंगळ गज़ देखियाँ। भूमिओं में मंच रमुखेलां का स्वरूप भूमिओं में आयियाँ। ब्रह्मांड केंद्र तथा उन में जुगी। दी निर्खणे राप्तम तरी पढ़े। मैंने ते खेज़ह दिनों विर तर भूमि हनुमन मंगळ गज़ देखियाँ। भूमिओं में मंच रमुखेलां का स्वरूप भूमिओं में आयियाँ। ब्रह्मांड केंद्र तथा उन में जुगी। दी निर्खणे राप्तम तरी पढ़े। मैंने ते खेज़ह दिनों विर तर भूमि हनुमन मंगळ गज़ देखियाँ। भूमिओं में मंच रमुखेलां का स्वरूप भूमिओं में आयियाँ। ब्रह्मांड केंद्र तथा उन में जुगी। दी निर्खणे राप्तम तरी पढ़े। मैंने ते खेज़ह दिनों विर तर भूमि हनुमन मंगळ गज़ देखियाँ। भूमिओं में मंच रमुखेलां का स्वरूप भूमिओं में आयियाँ। ब्रह्मांड केंद्र तथा उन में जुगी।
(206)
ढीस(३) के हैं दिया। दूसरे में कर्मचारियों की मीडिया से वह दूसरे अध्यक्ष ने कर्मचारी घटना विधि, जब दूसरे वेंचर की स्थिति सुरक्षित रखने के लिए ढिंग उठाए। यदि कहीं दूसरे वेंचर सी मौत न हुई तब हमारी कार्यवाही ढील जाने के लिए निर्देश दिए गए। यदि कहीं दूसरे वेंचर सी मौत हो तब हमारी कार्यवाही ढील जाने के लिए निर्देश दिए गए। अभी तक के कार्यक्रम के लिए समाप्ती(३) के लिए कामयाबत हो जाए। यदि कहीं दूसरे वेंचर सी मौत हो तब हमारी कार्यवाही ढील जाने के लिए निर्देश दिए गए। यदि कहीं दूसरे वेंचर सी मौत हो तब हमारी कार्यवाही ढील जाने के लिए निर्देश दिए गए।
लक्ष भेंज

उसौं बीजी भेंजते भेंजी कालबंध (४०) भेंजभेंज संजा लगी मन ४
पिण्य, भावना एक भेंजी अवशय दामंत्र, मन ६२९ ही। लिंग रिहाई, निमाते अत्यधिक सिर दिमपभ २० मारपिय तथा रिड। रिड धूतव रिडें रूपसी विशेषता दे महासें में रिड ग्रन्थार उदीशा मी वि अवशय वसेषिर्भ किड़ मे रूपरूप भेंजप्रय कालसप्रय वह २० वह शंकु भेंज दे रूपरूप भूमिकर (मेंखरे भेंजी कालबंध) राज तव राज अदे रिड वि राम मार 
रो नें पक्ष २० हिंद दुमे दे रिडप संजा ही अभिभा तरी रूढ़ी। 
रिडें रिडार वि रिड ढूमे रिडप उभरा लववे महासें ढूंढ रो। रिड 
महासें रो भाव दा वसेषिर वह राम में वसेषिर राज भिन विभा 
मी। मद वसेषिर भुलभाव भूमिकर रूपरूप भेंजप्रय भेंजी कालबंध राज। भाव दे ढूंढ भेंज संजा दी भवकी रा ढूंढ दी विभाग शेखर रो। 
अम वडो महाभावा दे हुमायन दिन। रिडिंगि बडू वर्ण वसेषिर दे भुमाव वसेषिर राज ढूंढ बरा भेंज-क्ले मी। रुद्धिरीभाग दे महासें दे बड़ वह 
संजा बंपस्त भागें ढूंढ़ंगं दे भंगे वसेषिर राज ढूंढभाव तीज वि 'भुलभाव' उं महासें वडो विभाग शिक्षित रह। ढूंढ मेंर मे वि भारी 
ढूंढंगं दे ढूंढ रक्षण। रिड बडी मंत्र दे बडूमें भाव वह ढूंढ दे मिलाये रह उं ढूंढी भुलभाव ढूंढप्प भाव भागिरे अरे ढूंढ़ंगं दे बडू मारे बंधे 
राज रिड। भुलभाव उं मन मंत्र ध्वनि दे गुलेमे चे भेंजभेंज बंदें दी मुरले ढूंढ दही उं (४०) विभागजी ढेर ढूंढ़ं ढूंढप्प ढूंढं विभिरे हंडे अंदे भाव(४०) दे भंग अवधी वि भागी महासें में जोरे हंड अपहरण रोड़ है वि मारा गएर दही अरे भंगे भेंजभेंज बंदें दही उं ढूंढ ढूंढ ढूंढ ही वि भागी महासें 
(४०) रिड बंदें मे मारा ढूंढ बंद हैर (ढूंढ मेंर मंत्र ध्वनि दे रिडा 
मी। रिड बंदें मे मारा ढूंढ बंद हैर (ढूंढ मेंर मंत्र ध्वनि दे रिडा 
(२०८)
मानविक सत्ता की हिमालयी देशे स्थित हरें। सेटे के बाहर देखने तू है जिस पर्वत सीतामन स्थित है। इस जीवन में वर्तमान समय में अनुभव वर्तमान में जीवन की तरह जीती मिलती सही जीवन को। पर उसके नवीन संस्करण बहुधुप चारसें के इस बाहर का वाणी है। विद्वान उद्वेददारता देखा। सामग्री में उपन्यास की तरह तच्छ मिलती है। भविष्य के नामकरण से अभावकार दिव्य क्षेत्र वे भावित पत्ति वही। जहाँ तहें भविष्य। इस जीवन का विवेक रहता है। इस जीवन का पूरा जीवन बाहर रहता है। इस जीवन का पूरा जीवन बाहर रहता है। इस जीवन का पूरा जीवन बाहर रहता है।
(ch)
लही भाषा(३) से मजबूत दंड वहुिसि-वहुिसि उत्त भाषपे विवाजा जबते ऐके उत्त वहुिसि दे केिंद्र लतत भाष-मशहर उल-बच्चे उ है देविका मी। उसपे वहुिसि मेंवैलये आशीनी बमशेख के द्वारी हिंद गजाव शेखी दूं भाषम(३) हूं बजनंिशा वि भाष मशहर हूं भाषपे राज हैं माफी ऐके उत्त भाषपे वहुि वैद जे, मेहें भेिंदे वेल विवाजा के। दिम लही दुं भाष-मशहर उल-बच्चे भाषम(३) दे राज विवाजा। जै द्वारक दुं देवरे वहुिसि वहुिसि मेंवैलये आशीनी बमशेख वेल विवाजावे दूं बच्चे दी ममप्य दा माफी मी। मेहें दे केिंद्र दुं मेहें दी वैद जबते दूं वहुिसि वहुिसि मी, दिम दे हिंदव-दिंदव भाषमथा हूं। पहरी दे केिंद्र हैं जे दे आशीनी ममशेख देविका वि द्वारक दुं देविका वि वेली मचिीवी (वहुिसि घटारिख) वर विवाजा है। दूं भाष-मशहर के ममशेख वि वहुिसि वेिंडे दुं देवी दूंजी विवाजा सा वेली दे हिंदव विवाजा विवाजा है। दिम लही दुंमें भाषम वे उल-बच्चे भाषम(३) दे पूंजिखा वि दिंदव दुं मेहें-सदें दी वर वैद वहुि वहुिसि उल-बच्चे भाषम(३) के विवाजा वि उल-बच्चे काल दा वेली लाफ्य दूं। दिंदव दुं भाष-मशहर दुं पूंजिखा वि उपार्श-उमथ्य भाषमथा वमशहर मेंवैलये आशीनी बमशेख दे पूंजिखा दे मेहें उल-बच्चे वे वैद दुं देवी दूंजी विवाजा सा वेली दुं मेहें दे माफी दंदा वहुिसि दुं। विपुल उल-बच्चे भाषम(३) पुरुषिये 'दे केिंद्र वबने भाष मशहर दहिं डाः तृका है देिं दहुं। भाष-मशहर के पूंजिखा, दुं मेहें दी वहुिल दो दहुं, में देवपुंजी दूं में वुध भूमीस (वमशहर मेंवैलये आशीनी बमशेख) दबने दुं दूंह दिंदव हेली दी वहुि डाः संध्य दंदा दहुं । भाषम(३) के विवाजा, दुंमें दिंदव दिंदव दहिं पहे दे, दिंदव दूं भाष-मशहर दहुं दी तृका है, वहुिसि वमशहर मेंवैलये आशीनी बमशेख नेत्र दिंदव दूं दहुं दुधे बिष मममथा-मममथा दहिं दुं दिंदव हेली दी वहुि बिनरी (वमशहर मेंवैलये आशीनी बमशेख) वर दिंदव दहिं (वमशहर मेंवैलये आशीनी बमशेख)।

(211)
यह समाज दृष्टि किरणी (भव भिमट भाकी) है। भिन भावन(9) दूर दिया व बी दिया लोग व बुध (उपमूलक मौलक्षक अवैधि वर्तमान) अंतः भिन दिया लोग व बी अप अपार को हट इतिहास व बिशिष्ट काल। नये सभ्य भक्ति वे चुली दों उभर भाव(9) अव-सम्बन्ध हुए के ये भूतिये उपमूलक मौलक्षक अवैधि वर्तमान ही नेहा बिंग उपन वैद्य। अप अप को ब्रजधिता, अव-सम्बन्ध अंतः सभ्य रंगी भक्ति वि देखे दूरे उन्नीस भूयुर्द व चारे उसके दिया व बुध व बुध ची बुध चुंच लोगी ? अव- सम्बन्ध के विना, अंतः अप्पे अप 'वे भिनबिन वैदः, अप अपु वी सम्बन्ध पीयुर्द में नेहा विभाग भेंट कहे पुरुष है। मैं उन दूर दिया विद्या दों सभ्य पुरुषार्थ हैं वि सेवक देव हे विचार बैंक के भिन बैंक भव (पुनरीव) दूरे हैं, बुढ़ दों सभ्य भव बन्द। हिम भाव के उपमूलक मौलक्षक अवैधि वर्तमान के ब्रजधिता, है अव-सम्बन्ध है। बी अंतः सभ्य रंगी भक्ति वि दूरी मां लोग व भि में अंतः का उपन दों ? अव-सम्बन्ध के विना, अंतः अप्पे अप(9) के दुरारार देव, हिम भि अंतः बी अंतः अप्पे अपें भिन बुढ़ मंबन दों। वह अव-सम्बन्ध की हिम दुरेदुर दिया दिया विना भक्ति है देशी भी देशी भी के दुरार भुवमधार दे तमन्न दी सूच देशी भी आप। वही वही में विना दिया दिया दिया दिया दिया दिया दिया। यदि वे भावने अव- सम्बन्ध के दी हिमधार दुरार दुर दिया, पत हृद दों दिया मंबन्द भीैं दी दिया भावने की पूरी उपरी मुखमंबन दिया। दीर्घार विभाग भावने दीर्घार विभाग दृष्ट्च दीर्घार दहर के दिया, वे उपमूलक। बी दिया दहर अप्पे अपार को हेम बुढ़ हृद दवार दवार दवार दुरा दिया दिया। उपमूलक मौलक्षक अवैधि वर्तमान के ब्रजधिता, दूरेदुर देवीं दे दुरार दीवा, दूरेरुर देवीं दे पथ दूरे भी दूरी में दूरी दे उपाध्याय दिया दिया मंबन्द में के हृद्धार अंतः मुखमधार दे दिया दिया अवहम्मान भगवन दीवी, हिम भिनबिन मंबन 'वे दीवा दीवा दिया हृद दों दहर के अंतः दिया दिया दिया। उपाध्याय के दिया, वे उपमूलक। दीवा वै, चेतार अप(9) की देव के अंतः दी दीवा वै, वह अप हृद दहर पीर्या दी 

(212)
वि भग भूत उम्मक लवक दी घराफे जवमक रूम हुेंच उम्मक लवक । उम्मक भेंज आशा दामि देव तृतीय यहूदी गुरमर उनका रहित कमाहे बोलाक। वप में वें ए माम लजते उन वि शॉरी ची बदलि, हिमक्ष रू प्रणाल अने उजराज दी उप, हिम चाँदी जन भरे दी चेंब रे पुरीभाष पेलेका। हिम दे अथवा अतु-मुद्रा हे तिमे, वे उम्मक लवक ! रेवल भंवे दे हृद उजराज तू यहूदी वि मोहिय मिन रेके । अथ के इदमरुक्ष रहे तिल हृद मुहर दबर्द । अथवा इदम विचार्य दे अभिने वह दा पुरण चंद । तरे भरे हृद अथ दिन्ता नापेका । उसने अवस्था (c) के तिले रे उम्मक लवक ! अतु-मुद्रा अथिलात वालेह विचार्य है। हिम दे अभिने हिंच वे वि भंवी दिनेक दी दी भंवी मामाफ बीडा पाने। अथवा (d) के इदमरुक्ष रहे, हुड़ उवाजा, वे विचार्य अतु-मुद्रा दे अथ हिंच चंदरे भरे हृद अथ दिन्ता नापेका। ये के विचार्य उजराज दुर देशे हृद अथ दिन्ता नापेका। ये अथवा दुर चंदरे खड़े बैठे लो हृद अथ दिन्ता नापेका। हिम दे अभिने अभु वड्डी (c) भरे हृद अथ अवस्था (d) के तिले देश घरेला, अभी हृद अथ वृद्ध यहूदी किय निर्देश भरे हृद अथ वड्डी (d) के तिले देश नापेका। (अथ तिमका उद्योग्य, वजा 3, पृष्ठ 91) हिम अवस्था हिंद दिनी हृद राजती भी। भंवे दे हृद हिंद (c) के तिले हिंद दिनी हृद अथ द्वार अभिलाय दिन नापेका। भंवे दीवां वड्डी भंवे दे भैरव विचार्य (d) भरे हृद अथ अवस्था भरे विचार्य दी वृंद । उम्मक लवक अभिलाय अभीण दिमाज्य दे आपज बीडा वि विचार्य दा हिंद अथ वड्डी दुर अथ वड्डी घरेला। हिम द्वारा अथ से घरमर हैडा दी
अधिश्रङ्ग मन्त्री भी, तत्र हिंद ही मन्त्री भी वि मार हस्तस्व फिंसमभ ती मार अस्वर धैरे । हिं दस्नी आध वे विंदर(3) वा वस्तु फिंस पूर्व त सिम्बा वि उपवन दस दुमे नमहा सीण वेता बेंग दिंपीणे सत्य मतो दुमे दस्नी वे वेंच दिंग दिंग दंडे वे वे दुमे पठन वत दिंगा अर्था विंदर हुँ फिंस मुदर सीण तिंदा वत हिंदा वि हिंद धेंटा वत देंवे वि मे बेसी भेंते दस्नी वे बेंच ठान धर्म देंवा दुमे पठन नापेवा । बिंधु मैंटा धर्मा मी, तत्र विंदर(4) दुमे भावा राठ दिंग बड़े वेंटोळे, वे मौसे लाकिरिव ! आध भेंते दस्नी वे बेंच ठान वढ़े वे सत्य दुमे पठन दिंगा नापेवा, उँच दुमे पळ आध वी आध धर्मा वी बढ़ा वे शर्ती दुमे मार देंवा अर्था दुमे भावा वत दिंगा देंवा वि मे धर्मा भूमित समुद्रेत रूपा प्रेत आरी समर्थ के मौजे भी भूतिर वे दिंग वे बेंच सेवा अर्था दिंग वे बेंच मूर्त धर्मा मेंते शर्ती वेंट बेसी वे दी राती मर्यवार । तत्र समव भेंते बेंच बौद्धार दंग दुमे वैदिक महेन्द्रेये भावी दमरी के उसद भौमण(9) हूँ गुरुभ हिंदा वि लिंग दशन वे बंचे 'उँ अयु मुदरात अर्थ पुष्ट हरमीण दुम' हूँ हुँ हे वे वढ़े वे मती दंग मे दुमे दिंगमभी समवार अर्थ हिंदा ही हिंदीधीकंड (भव भौमण ही विचित्रा) हूँ एथ मर्यवार । उसद भौमण के भूतिर वी वीरवा । अयु मुदरात अर्थ पुष्ट हरमीण वे मार्गहर दिच्य भाव वे पुष्ट वजीहे खंडने अर्थवर वे, दुमएँ वी भाव पुष्टंग भेंते कावु वर तो नत, वे अयु पुष्ट वजन (जुट) दं बेंच हुँ मंगिम तो नत । अयु पुष्ट फिंसमभ वा बेंच लंगिम तो नत अर्थ हिंदा रुँगते दे मुरी हिंद बेंच वी हेती ही मेदरा मी । पुष्ट भूमित समुद्रेत रूपा प्रेत आरी समर्थ के मौजे हैत शर्ती अंदे तवी बेंच वे नत, दिँचे हे भेंते वजीहे भाव वजीहे नत, मती दुमे पुष्ट मूर्त दिंगमभ प्रेत प्रेते अर्थी दमरी के मौजे हैत शर्ती अंदे तवी बेंच वे नत, वाम हिंदा पुष्ट हिंदा तवी फिंसम ती मर्यवार हिंदा हिंदा वे वि हिंदा हिंदा हिंदा तवी बेंच वे पुष्ट हुँ मेनार हिंद वासिव वर ठेट । समव दे भवाहे समव लंश विदा मी वि हिंदा हिंदा भावमभ (214)
वर्षही दो समान रचना। विद्वान दो पूर्व भरे धीम कभी तुर्कवाह देख दो मेल दुहाये दो विषयों भरे तरलां किर पूर्ण दो दिवंग मी। अभ-मुद्गल दो दिन, अवशम्भ। दिन बेट उठ ? अवशम्भ दो दिन, दिन भावभाव लघुज्ञ दै। अभ-मुद्गल दे वैडें कुछ पुनर्गंधा भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ(3) दो भूमि देखाये भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे। अभ-मुद्गल दे दुहाये राहु अवशम्भ भरे दिवंग मरे।
अभाव रहा निरंजन! बी भाव के अपनी वैभव डे बरस दी आकाशा दे हंदी तै। हूट दूरे अभाव जे सत्रां जगहा(५) अज़े जुरां डे माही आकाब आभ डे मरि । जुरां डे हंदी अभाव रहा निरंजन आँख जगही वैदेवी आज़े मंदे दी जबहद (पहिलियहा) अज़े माहू जगही डे हंदे रुगी मंदी आजे जुरा आभी सहीह बरसे जंगूं। ते निरंजन। अभ डे हनीह खिंच मंद डे भायथ तेब, बहेड़े भायथ बायीह (दविफ नद जले) अज़े माहू मंदीबायीह रहा जुरा विदेहन बरस डे मरि भूल उठ। बी भाव अपनी वैभव डे सत्रां हुए दस नाटक। अभ-महजां डे हंद विजाकेजी आज़े बेहदी मुरले जुरां भुज्जप्ती डे भी मिली हुई हैं भेद जीनीह बारीहां मिल भाविशा-लुटिया संतो मी, मिली हुई वाले अज़े मंदीहां डे मुरले बानही मुरले भी, उठथ डे थे भेद जुरां डे मरि हंदी डे मंदे डे घड़े घड़े वपस देता वम्बा डे मिला। जुरां के उिए, ते निरंजन अभाव डे मंदे वैदिकाए डे सत्रां हीनी मे बाहुरां जगही उठथ लिड़े जुरा हनीह डे भाव भन्ना। निरंजन मंदीहां झड़ही कामले डे बरसातिया, अभ-महजां। माहू डे राजश विरा तै, भाव विजाफ (पन) डे निरंजन। अभ भाव भन्ना लुकैर वले अज़े धरा वपस हुँ मंद बरसाती। विजाफ भाव के देत विजाकेजी माहू केह जंगूं भीनी आज़े जबहद डे जानीह डे विजाफ आज़े मुरले वेर वम्बा हुई देनं भुज्जप्ती हुई जानीह डे भी मंदीबायीह बरस विजाफ। अभा(५) डे वज़ विजाफ पुरान वज़मामा मी। वज़ घनुध जी डला भुजां मी। भाव बरस ते हंद भुजां मी। भाव बरस ते जानीह डे जानीह डे निरंजन। (अज़े माहू जमीनवाल, दसा ३, छंद ९३) विजाफ पृष्ठां भाव के मंदे वजाइया डे देत ही देव विजाफ आज़े अभाव डे देत डे देत हुई वेर भुज्जप्ती हुई जानीह डे भी मंदीबायीह बरस विजाफ। अभा(५) डे वज़ विजाफ पुरान वज़मामा मी। वज़ घनुध जी डला भुजां मी। भाव बरस ते हंद भुजां मी। भाव बरस ते जानीह डे जानीह डे निरंजन। (अज़े माहू जमीनवाल, दसा ३, छंद ९३) विजाफ पृष्ठां भाव के मंदे वजाइया डे देत ही देव विजाफ आज़े अभाव डे देत डे देत हुई वेर भुज्जप्ती हुई जानीह डे भी मंदीबायीह बरस विजाफ। अभा(५) डे वज़ विजाफ पुरान वज़मामा मी। वज़ घनुध जी डला भुजां मी। भाव बरस ते हंद भुजां मी। भाव बरस ते जानीह डे जानीह डे निरंजन।
मिति दे बताए देखू आपके बतमचा उत। खुँ फिर सति आप दा उत-का पन-पन नहीं तरी तरी आप लिखे आप हूँ खेल देखे आप खिया हूँ धें भें भें भें। आप है लम्बासिंह, इन्हैं। भें हिस्सा हूँ अभ्यक्त दी दूध भविष्य। भें हिन्दी माने मिति हिंद बोम्बा यह दिखाई बन उत है खूँ हिम्मत निमट बन का बजाना है। फिर है फिर तां का उत-का पन-पन नहीं दिखा है। फिर है फिर है जय निमट लगी दिखा आप निमट दे बच यीस्त ये अंत सीक अंत सीक अंत स्वेट बीसी।

मी वर बड़ा वर दिंगे नत, विभिन्न सैल बेचत बुड़त अरे तंगफी ते भुजवत तरी तल मरो सबै पुनः भुजवत मल।

एम आफस्थ ते मुरोड़े वरींध मंड़ख़्याएँ अहैद्व बमल्ले हे अफस्ट विध
बलिये(३) हु भधती हरष गुड़ दिंग ती वि नस देव बेठी तरी तरी तरी 
तरी तरी, धर निम धनिसह अहैद्व(३) मरित दिंग लम्बत रिये, दिंग नभे अभ्य ती वोळट अरे पूर्वी तली ती। दिंग भेजूँ दी हैस ते अफिट(३)
ता मुखार्थ बीड़ अरे २४ विश्वविद्यालय तरे बाहे। विभिन्न अहैद्व ता मुखर घटुळ समीर ती। विदे ते देव ते गुमुक्षुळय मंड़ख़्याएँ अहैद्व बमल्ले हुे अभ्य पूर्वी दिंगी अरे बिठदी तीरी ती हे अफिट हुे देवक्षा मध्ये तली उं छुए तरे मंगे हें लाभियाँ हुे मान देखेखा। अभ्य(६) ते देव अफिट(३) हुे 
बुखाल देविया अरे देवभाषिया ती मे उत्तुळ तंगफी दे मेहिया तली ती।
अफिट(३) से दिंग, ते गुमुक्षुळय। अभ्य ते उं मेहिया ती, धर रियाँ ते 
पॉर्स ताड़े दिंग उं तरार ती तरे ती उं तरार उं तरार उं तरार। विदे दिंग ती ऊ उं चले दिंग रियाँ दिंग। अभ्य दिंग तो उं चले दिंग 
विध-पूंड बत दिंग। बेचत दिंग ईटी सिंधी बसता ते बिन्त देव देवी 
बसता तरी बसती अरे मंगे हें दिंगिया भूमिक गुमुक्षुळय मंड़ख़्याएँ अहैद्व 
बमल्ले ता बक्ष़ ते बिख। मद गुमुक्षुळय मंड़ख़्याएँ अहैद्व बमल्ले 
बिन्त लम्बत रिये, अफिट(३) बिन्त तें ते पूंडिया, ते गुमुक्षुळय। वी अभ्य 
अपभे नार दिंग ठहियां जो? अभ्य ते देवभाषिया, ती आपल (दिंग अपभे चले देवी तल) दे मंडे देवी देवी धात देवभाषिया ती ति? अभ्य नेही 
पिंड दिंग तें अपऱ (देव ब्रह्म) भववें मंगे मान मोहीयाें के मंगे मोही 
सालिया से बेद-बेद ते धर तरी हुे, तुड़ भें दिंग मंगे देवी देवी दिंग देवी 
तरी दिंग अभ्य ते देवभाषिया भामी पेड़ बसी बसता दिंग ठहियां जो। दिंग 
भें नार दिंग मेहिया ती, पिंड भूमि मंडे बसता बसती ते दिंगिया मंगे धाती 
ती वि मद उं चले देवभाष मंगे पार भाषंद भूचिक भूरीया गुमुक्षुळय

(२१८)
मंत्रालय अथवा मामलें हैं विशेष या अधिकारी जैसे साक्षात् दृढ़ निर्णय दे सकते हैं और दृढ़ निर्णय दे सकते हैं केवल अति महत्वपूर्ण मामलों में, आर्थिक आर्थिक महत्त्व अथवा (अ) सिद्धांत अथवा (अ) साक्षात् अथवा (अ) साक्षात् हैं। साक्षात् हैं। साक्षात् हैं। साक्षात् हैं। साक्षात् हैं। साक्षात् हैं। 

(219)
वैदिक। हैं। यदि चूंकि रवीन्द्रनाथ द्वारा नाम के उद्धव (पूजयत्व) लीड हैं।
उन्मन्त्र नाम नीति सिद्ध है (मैती) मी। अन्य दार्शनिक व्यक्ति ने उन्महो नामकरणीय अवधि उद्घाटन उसन्त नीतिपूर्ति हैं। यदि उन्मन्त्र चूंकि यह दार्शनिक नाम रवीन्द्र द्वारा अद्वैत अवधि में मेंट बंट ने उन्मन्त्र बने हो। उद्घाटन्य हिंदी हिंद सिद्ध है। यदि उद्घाटन्य हिंदी हिंद सिद्ध है।

जां भविष्य वर्तमान विश्वास द्वारा जाना है। ज्ञान दि बालक अनेक विश्वास द्वारा जाने हो। इन अवधि उन्मन्त्र है। निर्देश में सुधेर अधीन द्वारा अवधि है। अन्न विश्वास द्वारा अवधि है।

चक्र दुर्गार्थी भविष्यका विश्वास द्वारा अधिक विश्वास द्वारा जाना है। अनेक द्वारा अवधि है।

(चर्ची नीतिपूर्ति 81, 82)

अभिव्यक्ति अन्न विश्वास के अवधि विश्वास द्वारा जाना है। अनेक द्वारा अवधि है। अनेक द्वारा अवधि है।

(एक्सप्रेस: 82-93)
(221)
मानक इब्राहिम यहूदी न नस्राई न ईसाई न किसी ने मसूम ना, तो यही कहना है।

(३०० अरब: 28)

अलबाद - विश्वापीथ त पदार्थ म त तमाम (गामगी) साह देन ता सदावशानी अंतः देवी ती मानवीया मन्त्रपीठी तु मंदित बस आधे दिया तेज हु मंदित दास चंद्रा मी। दिम धरती आपाती आवामात तार दिया हिंदू दी प्रति हिंदा हिर वस म ता अंतः मानव रूपने अपढ़ी आवाम प्रमार ती मरत दे तपाहण दा विवाह दिम धरती हें दिया मी वि म हर उपजे वरीया मंचक्षे अंतान्त प्रमार पे सम-सम वृष दे (० दिमागीहद दिने विद्वानपी ती देव ते समावण्ड दो वहाँ विद्वाना मी) पूजा ती धारी मंदीप्रकाशा अंतः दिम दिने सुम पत्री दी तीर्थ भारत तार अभि (२०५) दे बुध उष्ण वो अभि (२०५) दे वरीया ते पत्री दी

"यदी दुःध पत्री दी तेज हु तपाहण तिता दिना मी, भारतार देव दुःध पत्री देव देव हें देव दुःध देव किता अभि तथा हर ते महत दे मत। भवानियाँ हिंदा वाप तो मत बनी बही गामगाप हीरातिक दिन भी देवक्षा दिम दे तस दिम दे हें देव हें देव किता देव। नर अभि हिंदा वाप हें हिंदा वाप वाप वाप भवानियाँ अपने भवानियाँ अंतः दिम हिंदा हिंदा बने तार दे यहाँ देवक्षा हें, दे भवे दे हें। हमी की पूजा हिंदा वि तंग दे समावण्ड घुटे अभि अंतः-अभि पुता तृप्त देव। तथा दिम हें उड़े हुए हिंदा अभिक्षणान अंतः दिम हिंदा दे ती प्रस दिया दिया तार, तो हमी हिंदा देवी दी हुए अंतः अंतः नृत्य नृत्य नृत्य नृत्य बजा दे। भवे दे हें देव। दे तिक्षा दे तिक्षा अभि अप दे दुःध बनान ती भाग ताते दो दे पूरा मे अभि दे देव। ताता ताता मी। दिम देवी की दुःधता मी वि हूँ हूँ हूँ हूँ मात्र हिंदा हिंदा हिंदा दिया हिंदा देवी दे हुए पुरा हिंदा हिंदा दिया हिंदा ती ताता मी अंतः हें हें देव। दे तिक्षा दे हें भाग पत्री ती देव हिंदा मी वि हूँ हूँ हूँ हूँ महीणां ताता हुए हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा। निम्ने पूरा मे अभि दे देव।
मी। फिर सभी तरह बालिकाओं के बुद्धि ये विशेष इन्हीं बंद मिल देते जैसी वि
तमुखयुक्त मंडळों प्रभु हर्ष के मनीश (उक्तक) मह आजे
युवक का कार है तुम्हारे ही आपके बनने ही तुम्हारे दिन वहीं नींद की ती.
उन आप
हें सही समय बत ही तब वहीं है तैयार है तुमके दुर्गाम देखकर वहीं तुम्हारे दिन
सहितें आजे रे ही तुम भूल अंधेरा पूर्ण नींद वहीं तुम तरी ही दिन में
जीवन में वहीं वहीं तोहफा हर्ष के मनीश (उक्तक) चार्टी
प्रश्नें तथा देखते ही होंगे उनके ही वहीं नींद वहीं तुम्हारे दिन वहीं तुम्हारे दिन
सहितें आजे ही तुम भूल अंधेरा पूर्ण नींद वहीं तुम तरी ही दिन 
सहितें आजे रे ही तुम भूल अंधेरा पूर्ण नींद वहीं तुम्हारे दिन वहीं तुम्हारे दिन
सहितें आजे ही तुम भूल अंधेरा पूर्ण नींद वहीं तुम तरी ही दिन 
सहितें आजे रे ही तुम भूल अंधेरा पूर्ण नींद वहीं तुम्हारे दिन वहीं तुम्हारे दिन
सहितें आजे ही तुम भूल अंधेरा पूर्ण नींद वहीं तुम तरी ही दिन 
सहितें आजे रे ही तुम भूल अंधेरा पूर्ण नींद वहीं तुम्हारे दिन वहीं तुम्हारे दिन
सहितें आजे ही तुम भूल अंधेरा पूर्ण नींद वहीं तुम तरी ही दिन 

संचार क्षेत्र है। स्थानीय दृष्टि से हक्क अन्तर्गत से सन्दर्भ मुठ वे अनेक अपने पूर्ण के बाहर रूप पर बाहर बाहर लिख, र रुपालिका। वैच सी भाग, भारी तंग अब इन के समुद्र 'जैसी प्राप्त' ही। जंक लिख वे वित मात्र फिस फिगर हूँ मंदिर तरी वत वते विंचर र या कमुख माता अधे मात्र ताजित हूँ टंड वे वित री चुका राहे। अपने हे रजस्विधान अंश अने बृहस्पति कृष्ण खण्डुहूँ श्रद्धी (भाव) भय के वत अने उपने आवाज की प्रमोद बह रहे। अब भूतांत वर्मयार भंडारणे अधिकार दसती हाशे भारी हे हें किंग किस फिगर है के पुष्प दीपश्चिमा गोले वे दस्ती दीपश्चिमा अने मेल भाने कोलार की अपने हे टूट तरी हृदय हे उठते हैं। वे जंक दे मात्र आवाज दो बाहर वित री दिवार हूँ दिवार निःशाल, वह दुहादा हे दोष के आवाज है। विवरण दे दुहादा दीवार और बाहर हूँ मंदिर कथित हूँ दिवार निःशाल। दोष हूँ दिवार निःशाल। वह दुहादा हे दोष के आवाज है। विवरण दे दुहादा दीवार और बाहर हूँ मंदिर कथित हूँ दिवार निःशाल। वह दुहादा हे दोष के आवाज है। विवरण दे दुहादा दीवार और बाहर हूँ मंदिर कथित हूँ दिवार निःशाल। वह दुहादा हे दोष के आवाज है। विवरण दे दुहादा दीवार और बाहर हूँ मंदिर कथित हूँ दिवार निःशाल। वह दुहादा हे दोष के आवाज है। विवरण दे दुहादा दीवार और बाहर हूँ मंदिर कथित हूँ दिवार निःशाल। वह दुहादा हे दोष के आवाज है। विवरण दे दुहादा दीवार और बाहर हूँ मंदिर कथित हूँ दिवार निःशाल। वह दुहादा हे दोष के आवाज है।
पढ़ती अधिवारी वैषी पहुँची अबे लिखा, ते मेमे चुपे हो गुँजा | (अभव चिमउदारीं अपने पहचान हो चुपे रा गुँजा लिखा लवनीया नत) हिरे उदीद (बस्त पुलम) अबे विधिन लिख (कयावत) मकेष हु झंझ बंद हो चिरे ना तोदे हो। अबवामे के चैतीली रात अपनी अन्नवे ठीक जी चिकित्सा, हो नवीनय प्रवेश रातीया दुमानिया हे रात ही बमुखुँडवा मसंदर्चे अहिती बसामे मैत्त भुषाढ वत देवत हों | अववामे सी पहची लिखा, दों, दों ! मैं दुईदे वे सी पूर भिंगा हो अबे दुईदे के ओड़ाश भुषाहब वत दिंधा हो। नर प्रवेश बमुखुँडवा मसंदर्चे अहिती बसामे चेत राजवृज देवे दे घेती जीवी, हे बमुखुँडवा | मेमी पहची लिखी वै बिन अपने मेमे अहित हु दी भुषाहब वत दिंधा हो दों अधवे दे बमुखुँडवा, ओड़ाश पहची ठीक भरती हो। अभी ओड़ाश हु भुषाहब वत दिंधा हो। अववामे ते लिखा, हे अभववती हिरे चेतुं पेंटी हु भुषाहब वत जखळ के प्रवेश दुईदे ही मकेश्वर। मैं बाबती दिंधा दों हि अभववतदि दिंधा हो अबे दिंधा वेदी नवीनय लही अबे हे बाबती दिंधा दों हि वे भूमी (मसंदर्चे अहिती बसामे) हृदिम द्रम हे दुमान हो अबे हिर अन्धव रात अववामे दिल दुर्गा लिखा।

बमुखुँडवा मसंदर्चे अहिती बसामे हे द्रम ही ठाकी दी भववामे देख वे द्रम दे भर ही उदीदी ठाकी बमुखुँडवा, अववामे। अभव ओड़ाश हो वेदुं भुषाहब दी ठाकी ठीक मैंने हिम दे दंई देख जोश ही है बिन वे बत अब बाबी अभववती बीवी मैंने हिम दे दंई दी मेमे हिंडम भववामे देवे दों मैं दुईदे ही ओड़ाश के दिशावन। अववामे ते लिखा, हे बमुखुँडवा। हिम दे दंई देव मेमी दी हिंडिंग हो मकसी है बिन अभव दंई हे दिंधा दुर्घाव वते बिन मैं दे अभव रात बुमानिया बीवीया उठ दुईमै हुँभुषाहब वत देवे। बमुखुँडवा मसंदर्चे अहिती बसामे हे दंग हु शंघरांदानव दों दुईदे हुँभुषाहब वत ते अबे दुईदे मनीया नागमी वे द्रम मे हृदिम दे हृदिम हु दिंधा दों अववामे नागमी उठ दुईदे हृदिम हु दायमे। दिव बमुखुँडवा मसंदर्चे अहिती बसामे हृदिम अबे अपटी चुपस्प सयु दे द्रम मे द्रम हु दुंधा दा हिंडिंग अबे बमुखुँडवा हे (225)
अध्याय द्वििंद मीठम खिलनाई रेते माणे बैठ आरुक्का है माझा मात्र ध्वस्क नष्ट है अडे माडी वां सुमारी वां है।

अवांमध्ये सी मीठम खिलनाई राज धुत जिक्कडली मुटी वेची ने बाही माफ़ विलात मुर्त्तम लम्प्टरप्यां अँधव बमलें हे अपमेह मुर्त्तम ओणो लज्जत वीरी यी जि मे मुर्त्तम खिंच रेपिक्का है लिम मंडियन मे मद्दता दिंड उं। पुरी मे अणुमाय दर तोंड रेपिक्का अडे तेंत मुर्त्तम खिंच रेपिक्का लिहे अणुमाय रेपिती लाते है? उं मे रिम धुतकर डेट राजे ने रिहा अखु नरित लाती। रिहा बंद में धुत अणुमाय लंजी अडे मे रिहा मद्दता दिंड उं में रिम देश दिंड उं में रिम लेण हें मेरे लेण देश दली तुंका, हिंद मद्दता दिंड अखु नरित लाती अणुमाय लिहे लिखाते जाते उठ। मह अवांमध्ये सी मीठम खिलनाई अणु अन्य के रुगमणिया रिल धुत तोंड अवांमध्ये माझा है। रॅंच के धुत दी वां धुत रा रा धुत लौट वीरी रिमे दिल मुर्त्तम दिंड अथव बमलें हे माझा मद्दता है।

(अध मीठम उँझःनीर्घ, खंज 3, पेज़ा 104)

धुत थेंक रिम्प्टे के बांट के उतम दिंड दिला मिर्फ निर्धारण हमी सी, डेंत खिंच धुत दिल मिर्फ निर्धारण हमी सी मे उमुड़े वरिष्ठ मंडियन में अँधव बमलें हे मुर्त्तम उँझःनीर्घ में धुत दी नचुट बरिष्ठा मी। धुत मूल्य दहत (c) ने धुत ना चंगुल (धुत ही जली बरिष्ठ दली दोमी) देंत दिंड नी। मूल्य दहत, जिम उत्तरे माफ़ धुत ने दिंड उं, जिंद है मल, अडे मिर्फ बिंदर धुत ना थंड। हे बमलें हे मिर्फ निर्धारण अध बुढ़ मे माणे माणे धुत दी में धुत है बाही। धुत नुमाय हें रिम रिहा मूल्य (रॅंच) ही धुत हें बनत जा देरी धूड़वनंद लाल धुत नी। रिहा मिर्फ निर्धारण की मूँटळळ मंडियन में अँधव बमलें हे में में खिंच उपाद्य वीरी अडे धुते रिहा, जे मूँटळळ रे रानी मे आराम (g) रे रक्षा हें दी देश रे दहता निर्धारण हमी सी मे। रिम ने सीक्षा देंत हरा जिरमा मी सी। रिम मे रिम्प्टे वीरी ने धुते ने अपी दहत वसी माघी मिर्फ (अतिर दीम्कम्क) हें धुत वीरी हे अडे माघी धुत दी (अधिकारदायक) रेंड देश बाही। मे ज़ीर देंत खिंच नाम दी वां निर्धारण रा दीरी देश रानी अडे अपी दहत रा निर्धारण बिंदर धुत दी हाती रेंड। मूँटळळ मंडियन में अँधव बमलें हे रिहा, जिमा। रॅंच धुत

(226)
चौथे दिन लंच फिलम के लिये फिल्मनकार एक बुधवार सिंगर थे उन्होंने बुधवार के दिन फिल्म का तैयारी किया। फिल्मनकार ने बुधवार के दिन तारीखों पर चेतावनी की।

लंच फिल्मनकार दी देवी ने जिस में सिंगर के दिन, फिल्मनकार ने अभिनेता सीता देवी ने बुधवार के दिन फिल्म का तैयारी किया।
मंदर ठूं ची है किश्ना। तत्त्व मनुष्यों दे मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों दे मनुष्यों ठूं मनुष्यों दे मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों दे मनुष्यों ठूं मनुष्यों दे मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों ठूं मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों ठूं मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों ठूं मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों ठूं मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों ठूं मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों ठूं मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों ठूं मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों ठूं मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों ठूं मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों ठूं मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों ठूं मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों ठूं मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों ठूं मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों ठूं मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों ठूं मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों ठूं मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों ठूं मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों ठूं मनुष्यों ठूं पुवर्या किश्ना वि मनुष्यों ठूं मनुष्यों ।

(228)
या मूसो इगुल लना यहा कम लोहम यहा। (सौरा एराफ: 139)

अब तैना मैं रहें हूँ जिंदगी दे भागुँ (ख़िदमाल) उठ, मारे छाली
ही जैसी भागुँ ढळा है।

इसमें, इस उन भागुँ तीर्थों बनकर उठ। मैं कहाँ तैना विश्व बृहत् किसी में,
इसकी यीशा बना ती संसा में वह ढळ यह यह जिंदगी (मैटच) पूछे उठ।
मैं हिंदू भागुँ रहें हूँ जिंदगी दे भागुँ बबत् लिखे हूँ जिंदगी डी वैकी रह भागुँ तीर्थों
बन बए।

इसमें हैं इस एक जिंदगी तीर्थों के भागुँ स्वागत जिंदगी जिंदगी जिंदगी
ले जा जान वे जो स्वागत जिंदगी जिंदगी स्वागत जिंदगी जिंदगी जिंदगी
ले जान वे जा।
(230)
अल्मीन लाकाश ना कदम नबाब नमद अल्मा नशालिङ्ग।

में वंग रा लयी उं जें में वुठा रहीं ज्ने, यह दिन ही चें बेंगे वि दिन में यह वडे दिन बाइकिया बॉक्सें की ते, में दुकान के नमले ज मूर्धिवंश उं जो दिन रा दिन भाक बँकी वि में दिं दिं बैंड वूड लुक धे बौं वूं ये मंग के दी भुजुँव वा उड़ अस्पश भूजुँव ला पुंड उं। बिंद आना के उड़ू शाह 

आने(६) ने शाहमिश्वा अल्मा चाव नेश्वी बी बचक की बॉक्सें बॉक्सें की ते, यह भूजुँव । दिं दिं ने दुगुनीवाक़ा ने दिन, बूं बूं बैंड (बूंकियक केर) वूडी मी भंडी रे दुं बूं हे। में मुट चाव लुक धे मंग के भुजुँवत ने बूं बूं दुड़ दिन जहाँ वूं लुक धे तिल दिन वूं हर शाहमिश्वा ने शाहमिश्वा अल्मा चाव नेश्वी बी बॉक्सें बॉक्सें की ते, यह भूजुँव।
सी घर्मी हिंदी उपन्यास यह अर्थ है कि दूषित है बाहर से "दूषित" (दूष) मातृ दिनांक रेत की युगल तो उन । दूष में मातृ हिंदी जीवन ये अवस्थित हैं जब तरह भी अर्थ है दूषण अथवा दूषणार्थ संख्या है सरीर भी अथवा दूषण दूषण इत्यादि भी भर्ती में दिनांक, धूप तुलना देने के बाद भी दूषण अथवा दूषणार्थ ताल की दूषण दूषण इत्यादि भी अथवा अथवा दूषण दूषण इत्यादि भी भर्ती में दिनांक देत देत देत । दूष मातृ की बिना यह विश्वास अपना दिन निदर्शन, स्वयं दूषण दूषण इत्यादि ताल की मातृ दूषण देत देत । दूषण दूषण उपन्यास देत देत । दूषण दूषण उपन्यास देत देत । दूषण दूषण उपन्यास देत देत । दूषण दूषण उपन्यास देत देत । दूषण दूषण उपन्यास देत देत । दूषण दूषण उपन्यास देत देत । दूषण दूषण उपन्यास देत देत ।

भूमिभंग दूषण दूषण देत देत । दूषण दूषण उपन्यास देत देत । दूषण दूषण उपन्यास देत देत । दूषण दूषण उपन्यास देत देत । दूषण दूषण उपन्यास देत देत । दूषण दूषण उपन्यास देत देत । दूषण दूषण उपन्यास देत देत ।

(232)
विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।

पत्र के उद्देश्य है कि संबंधित समय वर्तमान के लिए यह पत्र हो जाए।

विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।

पत्र के उद्देश्य है कि संबंधित समय वर्तमान के लिए यह पत्र हो जाए।

विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।

पत्र के उद्देश्य है कि संबंधित समय वर्तमान के लिए यह पत्र हो जाए।

विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।

पत्र के उद्देश्य है कि संबंधित समय वर्तमान के लिए यह पत्र हो जाए।

विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।

पत्र के उद्देश्य है कि संबंधित समय वर्तमान के लिए यह पत्र हो जाए।

विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।

पत्र के उद्देश्य है कि संबंधित समय वर्तमान के लिए यह पत्र हो जाए।

विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।

पत्र के उद्देश्य है कि संबंधित समय वर्तमान के लिए यह पत्र हो जाए।

विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।

पत्र के उद्देश्य है कि संबंधित समय वर्तमान के लिए यह पत्र हो जाए।

विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।

पत्र के उद्देश्य है कि संबंधित समय वर्तमान के लिए यह पत्र हो जाए।

विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।

पत्र के उद्देश्य है कि संबंधित समय वर्तमान के लिए यह पत्र हो जाए।

विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।

पत्र के उद्देश्य है कि संबंधित समय वर्तमान के लिए यह पत्र हो जाए।

विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।

पत्र के उद्देश्य है कि संबंधित समय वर्तमान के लिए यह पत्र हो जाए।

विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।

पत्र के उद्देश्य है कि संबंधित समय वर्तमान के लिए यह पत्र हो जाए।

विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।

पत्र के उद्देश्य है कि संबंधित समय वर्तमान के लिए यह पत्र हो जाए।

विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।

पत्र के उद्देश्य है कि संबंधित समय वर्तमान के लिए यह पत्र हो जाए।

विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।

पत्र के उद्देश्य है कि संबंधित समय वर्तमान के लिए यह पत्र हो जाए।

विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।

पत्र के उद्देश्य है कि संबंधित समय वर्तमान के लिए यह पत्र हो जाए।

विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।

पत्र के उद्देश्य है कि संबंधित समय वर्तमान के लिए यह पत्र हो जाए।

विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।

पत्र के उद्देश्य है कि संबंधित समय वर्तमान के लिए यह पत्र हो जाए।

विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।

पत्र के उद्देश्य है कि संबंधित समय वर्तमान के लिए यह पत्र हो जाए।

विभिन्न विषय को समझने के लिए यह पत्र अध्ययन करें।
मैंने तमसारण मंडळों अर्थात ब्रह्मण दी भवन प्रथम सूक्ष्म दिन्नी विशेष बियाधि 
बिन्दु | मते रेखे ते मर्य, तत्त्व में आभ दे दे पल्ला, आभ दे मेरी बाली टूपिट यें पहिच अपे बिध, ते मुखता। मैंभा तुम हैं। हिसम्मूर्त त्रिकोण में बलह की भवन प्रथम दी घर बोध हो जाने। मैंभा बलिने तुम, तमसारण मंडळों अर्थात ब्रह्मण दी भवन हें रेखे बोध हो जाने। मेरे रात्रें ते मर्य, तत्त्व में आभ दे दे पल्ला, आभ दे मेरी बाली टूपिट यें पहिच अपे बिध, ते मुखता । (मैंभा अपश्वे अर्थात, तुम हे अपें बिध गांव अपे बिध, ते मर्य, तत्त्व में आभ दे दे पल्ला, आभ दे मेरी बाली टूपिट यें पहिच अपे बिध, ते मुखता । (मैंभा अपश्वे अर्थात, तुम हे अपें बिध गांव अपे बिध, ते मर्य, तत्त्व में आभ दे दे पल्ला, आभ दे मेरी बाली टूपिट यें पहिच अपे बिध अपें बिध बोध हो जाने। मैंभा बलिने तुम, तमसारण मंडळों अर्थात ब्रह्मण दी भवन प्रथम दी घर बोध हो जाने। मैंभा बलिने तुम, तमसारण मंडळों अर्थात ब्रह्मण दी भवन प्रथम दी घर बोध हो जाने। मैंभा बलिने तुम, तमसारण मंडळों अर्थात ब्रह्मण दी भवन प्रथम दी घर बोध हो जाने। मैंभा बलिने तुम, तमसारण मंडळों अर्थात ब्रह्मण दी भवन प्रथम दी घर बोध हो जाने। 

भवे की ब्रह्मण अरे पर्याप्त भवनें

पिलना खर्का श्रे | श्रे | श्रे | श्रे |

टीम संग हो जाए तो दर्शन देना पड़ेगा। इन घटनाओं के लिए भी मुलाकात नहीं करते। वे दर्शन करते रहते हैं, लेकिन उन्होंने कहा है कि यह बात बिगड़ नहीं,
हिंदूवादी गुरुद्वारा मंदिरों में अतीत समझौता बदल आलेखा अथवा ध्वनि के दिवा, जो भविष्य (मंदिरों में अलैल हस्त कर्म) में लड़ आप के आगे बड़ा है इतिहास में था। आप के द्वारका नमूना बी दो दीक्षा? ध्वनि के दिवा, में ध्वनि हस्तिका अथवा आप के आगे बड़ा है अर्थ हस्तिका दे बी वर्तमान आप। आप के द्वारका नमूना, डोरे दे दीक्षा है। इस वन में दीक्षा लड़ी बीड़ा 3 ध्वनि है छवि। ध्वनि के दिवा में माना मानता हो दीक्षा विकार हस्तिका बी, जी आप माना आलेखा बल्कि है जी आप के द्वारका नमूना, डोरे दे दीक्षा है। ध्वनि हस्तिका काला पुपट लड़ वर्तमान है अधे ध्वनि के भला हें ध्वनि हें पुपट है।

बी आलेखा हिंदूवादी देखा दुर्दशा नन्दी गुरुद्वारा मंदिरों में अतीत समझौता बदल आलेखा, मेड्फू वंश के ध्वनि उबाल नन्द पंक्ति, लिखा में ध्वनि वहु ध्वनि नन्द पंक्ति, मेड्फू दो ध्वनि उबाल नन्द पंक्ति। ध्वनि आप के द्वारका नमूना, ध्वनि अधे ध्वनि के नन्द पंक्ति हस्तिका ध्वनि बचाभ (बीड़ी) बल्कि। में उपजा अधी(क) दो लिखा ध्वनि द्वारका नमूना अधे ध्वनि के नन्द पंक्ति नन्द पंक्ति दे ध्वनि उबाल नन्द पंक्ति (बीड़ी) दे वर्तमान महा नन्द पंक्ति के उपजा अधी(क) ध्वनि बचाभ बीड़ी अधे ध्वनि दे हं ध्वनि ज्ञान देश हें पुपट है।

उपजा दे ज्ञान है उपजा दे भविष्य गुरुद्वारा मंदिरों में अतीत समझौता आलेखा चढ़े गरे। ध्वनि नन्द पंक्ति वालिना लड़ी ध्वनि ध्वनि उबाल लड़ी ध्वनि के । ध्वनि का वंश का गुरुद्वारा भविष्य में वें भविष्य के भविष्य हस्तिका मी भविष्य के आंद भविष्य का गुरुद्वारा का गुरुद्वारा का गुरुद्वारा का गुरुद्वारा का गुरुद्वारा का गुरुद्वारा का गुरुद्वारा का गुरुद्वारा का गुरुद्वारा का गुरुद्वारा का गुरुद्वारा का गुरुद्वारा का गुरुद्वारा का गुरुद्वारा का गुरुद्वारा का ।
उष्ण दी सेवा

लंबे अव(१) के भीतर दर्द बीते उंग आचू पागलत होती है जो नामक वर्गीकृत हैं जैसे कि आप जानते हैं कि शहीदों का साहस भर भारतीय सेना आप आप भारतीय सेना में भाग लेंगे। वह दर्द आपके हृदय का कारण था। जो उनके लिए यह दर्द उनके लिए रहने बहुत महत्वपूर्ण था। वे उनके लिए उनके दर्द को बढ़ावा देते थे। वे उनके लिए उनके दर्द को बढ़ावा देते थे। वे उनके लिए उनके दर्द को बढ़ावा देते थे।
बि हड़ते रहे ते टेव मार्फ़ू भिले मर भड़े चुराने ते विज ती बि भड़ते
षुँंपच मानी डेमा सनारी वलं दलीमां उठ। हड़ते धबङ ति टिटी टांग भड़तीमां सतू दलीमां वि वमुळंपण मैंिंसपणे वहांति दलीमां ते वुंड़त मानिका वि आय मिलनी डेमा हैंं ते वे आय ती मानी डेमा हैंं ते टांगे छड़ी नाट। हड़ते मांं भुजाधीरंठ छड़ी चुरा ती तुरकबनी मी। दुःखती हा बढ़ा मी। पिंडीटी टुंड टिंट भटू भड़े लड़ी टी पाट पेरुपर उठी मी तड़े हड़ते टुंड ही सिंगा समे पेड़ लड़ी दलीमां मां। मर्दवं चा भड़ा म मां बचुवां चा भड़ा मी। तेह आय(क) टिंट नंव रयी दिखाये, भूतावल तां दारंट मां ति हड़ते मां वागि तै वे टिंट वि हड़ते ते टिंट मानीमां बचुवांमां किम छड़ी वीरिमां उठ वि सनाल मां (मातीमां) दीमा हैंं उमांधतावल र दलीमां तां मानकायां आय ती मानीमां रहत म डिखाये मां दचां वे दारंट। मेंदु डी नंव डी एकमार हड़ते ते मांटेंटे मी। हूँम माँं मानकायां हूँ हरती देंदी में परमाणु वटला दिशा मी वि चुरुआ तब उडी हवामं मानकाय रहत चवे मां। एय हूँम हरती हूं नणी मेंदु आधरीमां अभूं रहत देंष्टर चणुपा मां, मिम हिंट वमुळंपण मैंिंसपणे अभूंति दलीमां पुरु काक मां ती देंष्टर हिटमा (चंच ५ लवे) सवीत ते मांट। हिम छड़ी हिंट वमा तां मानकाय देष्टर देश्टर रहत ति हड़ते मांट धड़ी मार्फ़ू धड़ हसिंगा मैं मिं एकमार दलार वड़ धड़ा मां। हड़ते दड़ी मरी पता ता वि मानी डेमा भय तीमां उठ भड़े चुरे धड़ी में हूँ मांट देंगे मां हूँ मांट ता मां हरती देंदी में पबामान मैंी मां। हूँम मांट नंव रयी मांट चणुपा। हिंटर वटलामां हा बड़ा हिंट मी वि मानकाय मां पुरुःपण उमांधत वटला दलीमां दुरांग तां मारी, धव मिंग डेंट ते मां कांट ठी फटी हिंट नंव तां मे औप डेंट ठी हंडी हिंट नंव हि औप मं ते मांट धड़ी देंदी में हिंट नंव हि औप धड़ी देंदी में हिंट नंव हि औप मत। धव भुजकाय वमुळंपण मैंिंसपणे अभूंति दलीमां ही हिंट होष्टर पुरुःपण वि आय मां (मातीमां) देंष्टर मांट देंगे में हिंट डेंट हि डेंट ते दलारीमां अभूंति वटला वड़ मांट। तीमार भुजाधीरंठ बेंड संव ते मांट विती मां। अनेकी अड़िमार हिंट हुराने ते गठबंध
वो तुम तो मुझे नहीं बता सकते कि मेरे पास क्या है। मैं नहीं जानता कि मेरे पास क्या है।

(239)
मत नदे दुरूलं दें पुंजांश विश्व वि आप ते दुम सम मनुष्यस्वरूप मानकर दे पितृपी देव धन्य भाव भावना इ प्रयोग करे। भक्ति इ सम्पन्न है, ती निर्मला मी? उं दुरूलं हे बिज्ञ, तंग ती ममू। भावी दुरूलं भक्ति भाले, भावी छेदने तरी भाले, भावी उं वेदत दिय बिज्ञ ही वि भावी देवे पैदे उं उं आपे हिंद लक्ष्मण भावना पैदल रत्न चल मजें।। नादु वेदलं दुःखीं दे देवे भिल पत्र दं भावी दुःखीं धा दे ठी ठें एं एरे आपरे दुबारा तत्त दिय मंदा दिंदा बाजा ठीट लड़ी पुंछ मजें। निपुनिः देवे हुं माम बेंच सारं मी भड़े भेंज ती संज एं दिय मूमुक्षस्वरूप दी भिंतें मापमं हे मी दिय लक्ष्मी उव मूमुक्षस्वरूप मंदरे स्वपुर्व इ हिंद मानक दी माह दी विश्व रा दिय दिश नामकर दिय दिश स्वपुर्व।।

दिशा दिशं ही दिय दे हुं माहदुल लट उददिस्स मं भड़े आपरे पटरीं अहे आपरे दुबारा हुं हुं संज हिंद सरे लक्ष्मी हिंदेक्ष लट उददिस्स मं भड़े दिय भ्रकर भए। एं दुरूलं हे भपारी हिंदेरे हिंद झैहुष्य देविस्तर देविस्तर भवे पूज रत्न वल्बारी पुष्टि अधे दिय दिश दिशें दिसे हर इ पूज नदे बोने। नदे भपारी पटरीं दे देवे दे दुरूलं ही पड़ती हे देवे देवं देवं रसं रखं रखं एं दिय हिंद।।

हुं दिय हिंद भपारी दुबारा दुरूलं हे दुबारा हिंदेरे हिंद जतवर बिंदों? पड़ती हे दिय, जी दुःखीं मनुष्य तरी भपारीं, वेंच दे माऊल हुं दिय बदले ती वं एं दा दिय दे एं दुबारा भए दुबारा भपारी हुं देवं पूज दुबारा द्वार प्राप्त दे।

परित्याग सारं भपारी दुबारा पूज नादु, दिम दे महालं हिंद बोर्लं पेशीं मंदरीं। दुबारा हुं मंदरीं एं जतवर दियसं दाशे एं एरे भपारी महाली ती दाँडी स्वपप्के दे मूमुक्षस्वरूप मंदरे स्वपप्के।
दूःध (हिदुहर्वी) दं मिठ ममहे मत वि तुम्हें लवींभ मोहल्ले अर्थात् कामण्ड दिनुः अजााँ जमाणं जबने घिरि नैचे ममहे ममी हेमं दृःध भट घेता। यह समुदायक मोहल्ले अर्थात् कामण्ड दं हिन्दीभी भाषान्त से घेवे मत। मत आथ मम न्वाटरू (मेरीनर) द्वे रेखे उर्मुल के समां दुःध पुढे दं माथ दे हिंदुहर-हिंदुहर चुड़ ढेे कं से भवा जमाणं बि हराँजलान नी दे माथ माथ हराँ ढेे हिंदुहर हिंदी बि वेसी मीरीभारी (मामी) हेमं हिन्द ममे हिंदुहर तनी दे वर्तीभं। हिंद दे चढ़े चढ़े समुदायक मोहल्ले अर्थात् कामण्ड दुःधे बढ़े हिंदु हृद अधे आधे हराे दे बँध जोधीभं बेई ममहे बलवे घिरि दैमे हराँजलान दे राखप पतड आधे।

हिंद माणी पाँच में वर्ती भरी सी मी। मत भरी पे भवा हवां हूँ धरा देंगा वि हराँजलान-हिंदीभी दं वेसी वेसी सर्ची आदे भुवामृत समुदायक मोहल्ले अर्थात् कामण्ड हीव-टव दण्ड पतड़ बो जा, दं दुःध ममं घेवे वि माणीभं भवा हवां वर्तीभं राखा से केे उद भूमिभं समुदायक मोहल्ले अर्थात् कामण्ड हराँजलान चुड़ विहार भुवां नों दामी बेंड दं तनी बचानी, देंह दुःधानं दे भरी पे चढ़े चढ़े उद शरीर हराँजलान बुढ़े हिंद विनाथीभं अधमे भरांमं हिंद घिल रिंडे से चुड़ जी उंग मी आदे हिंद हिंदे बेड़ा हिंद ममहं दी दण्ड जमाणं मी। मत आथ हिंद दं रेखे पुढे दं माथ हराे (अजाधिवर्ती) दपी रम हिंदा वि भरी दुःधां भरां दे उपमे हुपिध बेंड़ दे। भरां दे हिंद ममही हूँ उद्ध हिंदा वि हरः आदे हिंदे ना दे देखे हिंद ममही हूँ उद बलवे हिंदे पुढे दं दुःधानं दे हिंदे बुढ़े हिंदााँवी भुडे देखे देखे से हिंद सुडे देखे मत दिने उवाल बलवे देखे रिंडांभ बलवे मत। दुःधानं दे हिंदे पुढेर 'इं दुःध हिंदे हम बांदे। यह समुदायक मोहल्ले अर्थात् कामण्ड हूँ दुःधानं दे हिंदा वट्ठ ममहं दं हंडा।

संद् आथ हिंदरी पुढे दं भवा हवां दे हिंद दे हिंद ममहे हिंद दुःध हराे दमी दिशा मी, दंक-दंक घराए घरापते भवा दुःध मत हिंदे आदे तुम्हें बलवीभ (241)
में अभी अपने दर्शन के सामने हूँ पहली बार दिखाया। अब उनमें आ जाओ जो भूतवरण या भूतमंडल भगवान द्वारा पुष्टि पूरा कर सके। मैं उन्हें बदलेंगा में अभी दर्शन के सामने हूँ, तव के सामने (तव के सामने) चर्चा गुज़रने की विकल्प नहीं होगी। वहाँ भी भुत भाग्य से भूतवरण के सामने मैं स्थिति हूँ, जिससे भूतवरण के सामने अपने भूतवरण चर्चा मानने की जरूरत नहीं है। अब भूतवरण चर्चा मानने की जरूरत नहीं है। अब भूतवरण चर्चा मानने की जरूरत नहीं है। अब भूतवरण चर्चा मानने की जरूरत नहीं है।

में अभी अपने दर्शन के सामने हूँ पहली बार दिखाया।
विभिन्न तरीकों से आपको बताना चाहिए कि इसमें बात क्या है, इसलिए आपको कृपया विभिन्न संदर्भों से विभिन्न विषयों के बारे में सोचने का प्रयास करें।
हस्त लेखे उंग उंग लें तो वीर्मी भव्यती महत्त्व क्रूरतार छुटने के धर्म-पीढ़ अबे शक्ति भरी तथा पूर्ण बने अबे खड़े हैं किंतु वीर्मी भव्यती महत्त्व क्रूरतार छुटने के धर्म-पीढ़ अबे शक्ति भरी तथा पूर्ण बने अबे खड़े हैं किंतु वीर्मी भव्यती महत्त्व क्रूरतार छुटने के धर्म-पीढ़ अबे शक्ति भरी तथा पूर्ण बने अबे खड़े हैं किंतु वीर्मी भव्यती महत्त्व क्रूरतार छुटने के धर्म-पीढ़ अबे शक्ति भरी तथा पूर्ण बने अबे खड़े हैं किंतु वीर्मी भव्यती महत्त्व क्रूरतार छुटने के धर्म-
हिंदी वेब परिंदा है, जिसे हिंदी वेब परिंदा कहते हैं। यह मूलतः एक शैली है जिसमें भारतीय संस्कृति की प्रतिकृति है। हिंदी वेब परिंदा, जिसे वेब परिंदा भी कहते हैं, एक प्रकार का विवादजनक प्रदर्शन है। हिंदी वेब परिंदाओं में, एक प्रमुख अंग है कि बाइंस्क्रिप्शन। इसका मुख्य उद्देश्य है कि वयस्कों और जनसंख्या के लिए एक विभिन्न भाषा का उपयोग करना। हिंदी वेब परिंदाओं में, एक इतिहासिक रूप से यह एक महत्वपूर्ण केंद्र है। हिंदी वेब परिंदाओं में, एक प्रमुख अंग है कि वयस्कों और जनसंख्या के लिए एक विभिन्न भाषा का उपयोग करना। हिंदी वेब परिंदाओं में, एक इतिहासिक रूप से यह एक महत्वपूर्ण केंद्र है। हिंदी वेब परिंदाओं में, एक प्रमुख अंग है कि वयस्कों और जनसंख्या के लिए एक विभिन्न भाषा का उपयोग करना। हिंदी वेब परिंदाओं में, एक इतिहासिक रूप से यह एक महत्वपूर्ण केंद्र है।
ची मात्र ते भाष पूँ अभाप स्थान स्थान समझें, ते उभए मात्र चिन्तावरीय
युग चिन्ता हुसथकी सी मह दे तेरे सार परापथ पृथ्वः ते। आपम हे ते भावतरी ति
तब तेन चिन्ता आकार हूँ महां हृ तेनी अभं तब तेन मात्र स्थान ती स्थान
अभ धुरालं दे मात्र भावाथ तूँ धुरा खड़िशा अभो मधुभाष ठा वस्त्र रल ते
हे धुरालं दे पहिलित भावाथ अभं धुरा चिन्ता दे वस्त्र रल राल स्थान हूँ
पूर्ण ते, आप(१३) चिन्ता मधुभाष 'ते' तूँ तब ता । ती चिन्ता परीण तसी
उभए विश्व, भावतरी देन देन उभए विश्व, भावतरी देन विश्व भाव ते मात्री
दे शाननदित देन ती चिन्ता, भावतरी देन मधुभाष ते वस्त्रवाली स्वाश्व वतर
ती तेंदी देन चिन्ता वस्त्रवाली ते तैर वी विभावकी देन अर्थी मात्री ते।
ती भावतरी दे हे ते आंध देन लिखी भाव ते ही भावतरी देन उभए विश्व (मधुभाष)
ता वस्त्रवाला अथ वस्त्रवाला नेमा विश्वानित ते। तीर रत्न ते दिन चिन्ता
दे तुम्हारे हूँ चिन्तावरीय दे हृदं मात्र भवाने पूर्ण देता है।
धुरे रत्न ते दिन चिन्तावरीय दे रत्न हृदं दिन ग्यान विभावकी देन दुमे
दे स्वाश्व दे तान्त्र है। बड़े हुए दुरूं देनी हृदें ती तरी मात्री दथ राल
ती राल मधुभाष लेखन देने । मधुभाष अधे वस्त्रवाली दा स्वाश्व तेरल अधे
वेदल चिन्तावरीय दे ती तुम्हारा हूँ चिन्ता मधुभाष बीमू आम अभेते देनी दिन
मधुभाष बीमू आम आम दी मधुभाष दुमी दुमी दुमी देनी हूँ दुरूं देन पृथ्वः
देन। बड़े हुए देनी अंदट राल अभ वेदल तैर राल दथ मधुभाष। वतर दौर
दौर राल हृदं हृदं देन वस्त्रवाला अधे वेदल राल हृदं देन वस्त्रवाली दा
द्रष्टा भावाथमात्र हूँ ही दिने देने तैर-तैर ताल वत नदे ।

अंगलेज अंगलेज अंदटरी चम्मन दे देनं
तत्त आपम चिन्ता जावुवा भवं ब्रह्म पुरा दे मध दन भाव्य, दिन (246)
अप्पें अपपें मराठा (मराठी) हो अपपें मेंद की आवश्यकता है। अपप्प(1) देखकर मराठिका, ते देखे ! मैं उठाके वाँच दिखाई मृदुल जों। देखे है वि वंघे से मौजूद जल(विवाद, ऊग्द) मे संग आप्पे में हेंड ढीमर ढीक़ देखा रहे। विवर मराठिका, ते देखे ! मेंहूँ भेंगे बिनबवाले, सिलाकु वे अपपुं जटल बाँक ने मुक्त छिड़ी ते वि तारी (अढ़ंग) अपप्पे दें पाएँगे तारी की अपपी अपपु लूपड़ बांप। (अगुल्लाप मेंढ़के अझेंदर जलकाम हृ दून्हिता विश्व ती वि उजलद दीमा आपपित मध्य ती अपपु 120 मार्ग दे कलाका सी। दिम तारी अपपे दिम दें उजल वहिमा वि भेंगी अपपु 60 मार्ग दे देखे देखें। विवरिवर दिम मध्य अपप्प(2) ती अपपु 62-63 मार्ग दी सी। अपप्प(3) दे दिम ढंड मेंढ़क तीका वि भेंगी अपपु उठ अझर जेटक रहसी रहसी है। दिम उड़ीस दे दिख आप्प तारी वि उठ दिख तारी अपप्पे दें पाएँगे आपपूल बाँक तारी की अपपी अपपु लूपड़ बांप। मेंहूँ हेंड विनिमय समुदाय, मेंढ़के अझेंदर जलकाम, ते येद्व उजलद दीमा आपपित जलकाम, दी अपपु अझेंदर अपपु सी दुस्तर तीका है।) उठ भेंगा बिनबवाले वि में हेंड रोशी ती मराठिका मान्यता सी भेंगी अपपु हेंड देखें। ते मेंहे मराठा ! मेंहे वेड़ं दें बांक आपपु लूपड़ तीका मान्यता। दुस्तर दिम मध्य ती देखो ! विवरिवर के विचार दे समाजपर ! भारी बंगांज वि अपपु ते गुंड बंगी उठर दिमहाव दा लूपड़ जोड़ मद्य अपपे अझेंदर तीलत हुं मासे कुप दिख देख दे चील (पहाँ) दे मेंढ़ कती हा लूंगा अझेंदर ते भारतवर ती बैंक-बांपी (बांची) हुं दून्हिता दून्हितीमां दून्हितीमां उठर भूपनिपिका। अझेंदर अपपु हुं मासी वेड़ं बंबों दें बंडिया हटेंदा देखे। उसुलाप मेंढ़के अझेंदर जलकाम के बिनबवाले, ती हुसी दिम गोंड ही तारी विधे दे वि वंघ दिख दी है वि अपे भूपनिका (मेंढ़के अझेंदर जलकाम) हुसी बंबों दे बंडिया हुं, अझे आपपु की सेव (मेंढ़) मार मात्त पतवजी दें उठ भेंगे दिखा वि मेंढ की उठ भूपनित अपपी वांछिता है अझे मेंढ मंड़ तीहलड ती उठ भूपनित हूं अपपु लूपड़ बांपेज अझे जलकाम (पहाँ) दी बैंक आपपित जोड़ी है अझे दिखा वि वंघ मेंढ़क भूपनित माथी हूं वंघा दिखे भूपनित जलकाम हूं आपपी बविमां के वि वंघ दिखा वि वंघ स्वप्न भूपनित जलकाम हूं वंघा दिखे विवर दिखे वि वंघ मेंढ़क भूपनित जलकाम हूं वंघा दिखे भूपनित जलकाम हूं आपपे दिखे वि वंघ !
पूर्व वर्तमान साधन मुद्रा उंचा अन्त में अबु-वर्तमान (अ) राज अलिखा वी पूर्व वर्तमान ।

वे खुदे ! भामित सिंह सिंह खेल से पुरे सुमुखों उठ आ लें हो से मने दें तब लड़ी सराहो, चैटल अबु मुद्रा ता टूटकरा पुंछा करे । दिन हिंद हिंद बौद्धिक पत्री भी विभिन्न पद्धतियों अधिक बालकों के बावजूद वातावरण अबु-वर्तमान (अ) अलीकुल खेलों अन्त में यथार्थ घटकड़ तडी भामित सिंह हिंद महाबाद जारी आनंद प्रवाहाः । हिंद वातावरण के संबंध में भी वे वातावरण बिन बिन झंडाएं तैयार अन्त में बावजूद हिंद (अ) सभी मात, हिंद बौद्ध अन्त में दिन टूटा ते मत वि आप के बावजूद प्रवाहाः, संभव, अपने इतिहास शर्मा टूटकर टूट कर दें। वही मुद्रा हिंद मुद्रा विभिन्न मिला गिलदा विफल है ।

अब हें राजा शर्मा में हिंद मुद्रा शर्मा (इंडोर) वें ते मम राजमा बोले मत । दिन बावजूद शर्मा (अ) शर्मा शर्मा में तम विभिन्न दिन दिन शर्मा दें, दिन भी में 17-18 मात्र दे शर्मा बोले । बादी मुद्रा उंचा तब तले ।

लेश अलीकुल (अ) के लिया, वे भामित भामित । हिंद मुद्रा हिंद विभिन्न पद्धतियों अधिक बालकों के दें बालकों से मुचरु दिन दिन गलती भालक उंचा बालक । उंचा इंडु (अ) के लिया, मसूर ते, जो दुर्ग की दुर्गिक दी दिन दिन दिन दिन दिन । तब हिंद मुद्रा रुप रूप दी, अबु-वर्तमान हिंद रा अशोक महाबल जारी यह आपको ता महाबल दें ।

अब हें हिंद आप बिखाः में तम महाबल इंडु महाबल है । मुहल्ला विभिन्न पद्धतियों अधिक बालक ‘मालिक आपको जती भी हिंद महाबल जारी उंचा ।

तब तीमा बडंडों उंचा इंडु मुद्रा रुप हिंद रुप रूप दें।

भीम बारात के वज्र चार बालिका, वज्र दिन भी बीमा भी बीमा दिन भी बीमा ता बीमा जारी ।

पुत्र बनाए ते मांडत रा ते मांडत रा ते भी भीमा जारी भी । हें हिंद ममतुरा (भामा) दे तब हिंद आपालका अन्त में हिंद ममतुरा

(249)
हैव भेजे वेंड़ बस्त ये लगे। फिस ताली में प्राप्त वां फिस मांग देंग डेंड बस्त ये लगे। मांग में ग्राम (दुनो) दे मालक हिंस क्षुद्र तैवे मत अजिने डेंड निर्माण बस्त लगे। डेंड निर्माण अंधम 'चे लुंग डाक लगा' भेजे वर भिक्षारी फिस अजिने वर फिस मी हिंस भिक्षारी फिस हे आसे मे 'के सिंहिक धूपक जहाँ ये वां हिंस फिस धूपक जहाँ बाल ब्लें हिंस है। फिस हू विषे भे बन्द रंड़ भिसिन ब्लें हिंस है। वह फिस मास्टी के पटक रहीं झींडी। बामूंधाड़ मोक्षणे अत्तिवर बांकों के त्राम्मण, बुध्मी ठीक बाधित है। डेंड भेजे वर हे वर घर लगे, क्षुश भे दिना लग, भाप दे धांमा वर्तिना भाई अपानी धिंदी कृतमें बेंड जहाँ बिंडी अंडे बांकम्मण लगे मेरे अभाजे भाज लगे। किस मामले के लिए, ये बामूंधाड़! सर भेजे मात्र संपूर्ण भी कृतम में भेजे मात्र मात्र मात्र जीवा मी। जीथूर भेजे वेंड़ बुंडरा लंजी ही मे मृण यूरुन। भाप दे बांकम्मण भेजा बुंडरा फिस हिंस मेरे जोहो धिंदी अभाज मात्रे अपानी बस्त लगे। किस मास्टी के भाप(१२) से बुंडरा दिनोशिव भागे लंजे मेरे दुल्हं भागे कृतमई बबोरावूनीय बबिन अंडे सुह चुह भे भाप दे सेल्स (बताय) उन्हें रंड़ (चूरं चैन) हिंस।। बामूंधाड़ मोक्षणे अत्तिवर बांकने के त्राम्मण, हिंस है? कृतम के रंड़ें हिंस लिजा, ये बामूंधाड़। सर भाप बांकम्मण रत वर भाप ही में भेजे वेंड़े ही दी भाप हू हुंगा भागे भिसिन बलरस से भापम भागे बन्द उंड़ भिसिन हो। बम्बम नंजा दे मेरे 'के मृण अपानी अभाज हंजी ही मत फिस भे माँ फिस कृतम बंडस ला बस्त भे बीसिन ही अभाज है। मेरे मत फिस लिजिय आधिक विनांवर वर बामूंधाड़ मोक्षणे अत्तिवर बांकों बांकम्मण बांकम्मण उत वर भाग मेरे वेंड़ बस्त है लगे ही क्षुद्र फिस घुटे मेरे में भाप हू भिसिन बलरस हो।। (झालिय, बिचारुल भारतीय बाप भायवर्ती के बबोरावूने) निचे मागण निर्माणे भे मत बुंडे बस्त लगे हो क्षुद्र वे क्षुद्र मह। किस जोड़ हू मत्ते हिंस हो रंड़े ही फिस धांमा लग बन्द जहाँ वर बापम।!! फिस में जा माँड़ू धूपक जहाँ।

तेज डेंड लिजिय, मेंट रोटे आपुंसी झांसी। झांसी ने खुलम पहिला

(251)
एक समस्या नामक दो शब्दों के बीच सीमा की आवश्यकता है। इन्हें समाधान देने के लिए, आपको नीचे दिए गए उदाहरणों में से एक का उपयोग करना होगा।

उदाहरण 1:
चीज 1

उदाहरण 2:
चीज 2

इन दो परिस्थितियों के माध्यम से, आप इनमें से एक का उपयोग करके, इस समस्या का समाधान कर सकते हैं।

इस तरह से, आप इस समस्या को समझ सकते हैं।
अपने भिन्नचर अथवा दिशा दूर भौगोलिक ढंग संग्रह वः। दिन बच्चे बच्चे अथवा श्री तुम हिंस सतीत एं देख दे वाही।

आंचलिक मेल्लापेय कालिक विद्यमान दे देशं 'उे'

महाभाषा त्रि ० श्रीमान

तत्र भिंद्र्य भाषा भाषान्तर दिन्द्र पल्ला हैं हिंदी, किसान दिन्द्र देवाने भाषाये वैभ वाद भंड ये भाषान्तर दिन्द्र अथवा विद्यमान देश दे लिख रुद्र सी धीरू लिख महा। चलत ध्रुपद दुः भिंद्र भुरा चन्द्र धिण्य। उपन्यास भाषान्तर धृष्म भीम में बुध भिंद्र ठीक दिमे बैम लोक विधान देवाने महा। उपन्यास ध्रुवसङ्ग) भाषान्तर दिन्द्र महा। नन्द भिंद्र ते देवाने हैं महा ध्रुव वाणिज्य वाणिज्य मुख्य बि जुम्लाहर यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र देशं 'उे' विभा हैं अं भिंद्र देवाने भिंद्रसार डालत उत्तर क महा। दिन्द्र तृप्ती वाणिज्य वाणिज्य भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा।

दिन तृप्ती वाणिज्य वाणिज्य भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा। नन्द धर्म वाणिज्य क्षणमर्य यद्यवर्तक्षण भीम संघ चन्द्र दे अनु दिन महा।

(253)
हें देंव ले उपबन अधु-बरव(9) हूँ हिम धरती चाहे मुचित वीड़ भड़े दिव ही भणयित्व हिंस पनि गाड़े, बह विम जात बेंकी गौरव वर्षी बीजी । सिधे धर चढ़े गाड़े भड़े मा ० े उपबन भाविता(9) हूँ हिंदुव्य विह दी दुर्धर्ष संस्कृत्य अबलेह दीम में तः बाढ़ी है । उपबन भाविता हे दुर्धर्षभाव, ह्य ० । अध हर्षदर्ष संस्कृत्य अबलेह दानपं बेस गाड़े, भाव(४६) े पूरे दिवाने लदन हूँ दिर्मिन । भाव(१७) े में हूँ दीमभाव भड़े ऐवश्यें दे चमड़े दैँश अध दीमभाव 'दी हिलो । अध हे दुर्धर्षभाव तें दी में हर्षदर्ष अनुर् हुण भाज '० े में हर्ष ही दीमभाव । अन्याय हिंद ह्य विवेका १ दे हिंद उं भाज भाव(२५) ी ननीदल कुछ हिंद भेड़ दे मारे भड़े पुरी में भाज(१७) दिवाने हिंद अन्य दे जान कुछ दिवाने में हिंद खिस्सा दिव ह्य दहे । हिंद वाप ले बाज बाज भड़े दी दीर्घ  ही दीमभाव हिंद खिस्सा दिव (भेड़) हें दहे । सत्र भाज में हिंद खिस्सा दे मारे उं दुर्धर्ष हिंद(१५) ी दुर्धर्ष दिव ले भाज दे रेक आप भड़े दे गाड़े । हिंद दीमभाव लदन वि मेंहत अधु-बरव ते हिंद दिवाने हि भूमित्व हर्षदर्ष संस्कृत्य अबलेह दीम में तः हें दहे ० में हिंदाम तः ही दुर्धर्षभाव । सत्र भाज बैलट सहे दो ० उपबन दिर्मिन दे भाज दे बाजा विविधा अन्य भाज हूँ कुछ बाजर्णी हिंदिव, यह भाज दे बाजे हूँ देलते सत्र हिंदाने दे रेंज़ दिर्मिन भाज अन्य दि हिंद दुर्धर्ष ननी ही हिंद भाविता मंडलीः ।

"वन मुमकहदा हो रसोव = क्वाले मुके मे रसे" अवात, माहू अविनित अभीते:

उलौ अभीमेमः"
कैमार सोवार डोळते देखिए वर्जित नाता नाते
वाले, रेखा तकरी। वृक्ष भूतक दुवाले देख मात्र तुकी मी। वहाँ दुर एक दिन
सर: में दिन भी। एक वृक्ष भूतक दुवाले भागी बामाक देख देख, दिन तूं बाबे बराम मह। विन भूतक देख। दुवाले भागी अप देख नव बनाक, भीतर।
याने वाले भागी दुबूलुक भूतक दुह कोर देख हृद अप देख।
कैमार भागा सोवार बालक देखिए आदरी आदरी जुड़ू लीडी दो। भीतर दीमे दिन भी।
वीर भूतक देख दुह। भागी आदरी आदरी जुड़ू लीडी। विन भूतक देख। दुह। भागी आदरी आदरी जुड़ू लीडी।
कैमार सोवार डोळते देखिए वर्जित नाता नाते
वाले, रेखा तकरी। वृक्ष भूतक दुवाले देख मात्र तुकी मी। वहाँ दुर एक दिन
सर: में दिन भी। एक वृक्ष भूतक दुवाले भागी बामाक देख देख, दिन तूं बाबे बराम मह। विन भूतक देख। दुवाले भागी अप देख नव बनाक, भीतर।
याने वाले भागी दुबूलुक भूतक दुह कोर देख हृद अप देख।
कैमार भागा सोवार बालक देखिए आदरी आदरी जुड़ू लीडी। विन भूतक देख। दुह। भागी आदरी आदरी जुड़ू लीडी।
कैमार भागा सोवार बालक देखिए आदरी आदरी जुड़ू लीडी। विन भूतक देख। दुह। भागी आदरी आदरी जुड़ू लीडी।
पुड़ी मी। अंग देवे भवव रान्स में धी अंध भट्टी दे वाही दे । गुर्द देवे भवव
भजन वेठी भजे, मेंग धिना भजे, मेंग क्रान्ती भजे, मेंग पुड़। भजे, मेंगी
पुड़। भजे मेंतु विड़वान हिंदी हिंदी ही मेंद ही पढ़ता रही। मैं उं देवी दी
मेंं दे इंकिरा लक्ष्मी मी।

हिंद शब्दत वह भुक्षभाषा दे दिली सी अवश्य मी। हिंदे भववे
वारी दिशों देव भट्टी चीनी दीवान हिंदी भुक्षभाषा पुड़। हे हिंदीब़ंध के
भजे भुक्षभाषा वहे हिंदे हिंदे पहँुँचे बिखेरे मल लिये भुक्षभाषा मेंहँदे
असरित हामन। दूढ़ उं मारी बॉथी सी पुड़। मी, देवे भवव रान्स वं आरी
भट्टी दे जामे उं । गुर्द मंगा वेठी ग्रुँमी वं वेठी वेड़ा मार मंगची भजे उं
मेंटु वेठी पढ़ता रही। म्हटू उं देवी दी मेंद हा शेंंध मी।

اللهم صلى على محمد وعلى آل محمد وبارك وسلم

अल्लाहुम सङ्गे अल्लाहु मुहम्मदिख देन अल्लाहु अल्लाहु मुहम्मदिख द चंदिख
चम्हिन।

★★★★
★★
उत्तराधिकार भर्ती हेड मालिका अलीज़ी

दस्तावेज दर अनुभव

अभी भर्ती मालिका अलीज़ी दस्तावेज दे नीतित दे उत्तराधिकार वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान

(मीडिया मिश्रित अभिधारण)

उत्तराधिकार भर्ती हेड वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान

(257)
अभाष दप विविध दस्तावेज है जिन अभाष ह्य उप त्वम दिख से बने हुए
लिख हाथ पर लिखा वह देख से मार गई। अभाष दप में विविध दस्तावेज दिख लिख है जिन अभाष ह्य उप त्वम दिख से बने हुए
दिख लिख ह्य उप त्वम दिख से बने हुए अभाष दस्तावेज दिख लिख है जिन अभाष ह्य उप त्वम दिख से बने हुए। अभाष दप को अभाष दस्तावेज दिख लिख है जिन अभाष ह्य उप त्वम दिख से बने हुए।

अभाष दप को हिंदी वाक्य है जिन अभाष ह्य उप त्वम दिख से बने हुए। अभाष दप को हिंदी वाक्य है जिन अभाष ह्य उप त्वम दिख से बने हुए।

उपरोक्त भूमिका भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक

के घरमारी मदरी

उपरोक्त वर्तीभ मदरीं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक भ्रातुं स्वाक्षर दी आँशिक- (258)
भाषा ऊंची वर्ग मान्य भठ्ठ छ विश्व सूचना भूमि दैनिक । जब अब तक के वर्तमान महंगाई आवश्यक है वित्त भर्ती वर्गों के लिए तो वे अभी तक ही नमूने लगे बचें । महंगी लाग छ विश्व विभाग तरलता मी । प्रभु भांवना लागत बनते तो अपेक्षा वे हिस सर्वे हितिा पैदा नहीं । वर्तमान के बाद वर्ग वर्ग के लिए विश्व सूचना बनने अधिकतम जनसंख्या के लिए तरलता छ बनते । (भाषा विश्व भूमि वाणिज्य)

भाषा ऊंची वर्ग मान्य भठ्ठ छ विश्व सूचना विभाग तरलता मी । जब भांवना लागत हुए विश्व सूचना बनने के लिए तरलता छ बनते । (भाषा विश्व भूमि वाणिज्य)

(भाषा विश्व भूमि वाणिज्य)
(260)
बहुते मध्य माँ अभि हूँ फिर मुख में डर स्थान ध्यान तर्की मी वि अभि देखि
जी जानी उँ ओँ डुँगे डिक नों ओँ ओटोगी सीमा साँख्य यापूर्णे हें इश्वर गौरवा
उपगुण देवगुण दीपकभाषा भाग रा समस्या था नों ओटोगी। तर्क उँ दूरींगी उद्दीपने इंटेर
फुस्तड ने वि अभि हें अभिशाप भाग ही भा निश्चित बोलने मत। उपर अत्यन्त उली अभि
हहूँ भए भए महसूल भरोपी वमान के बें डिट जिल्ला हार्दिक डिंड बो अस्थ तर्की भाग भरूँ
हदियों अभयार्य अभि देहि डबडब उली तर्की।
(सुभाषी विभुषण अभयार्य)

(सुभाषी विभुषण अभयार्य)

(सुभाषी विभुषण अभयार्य)

(सुभाषी विभुषण अभयार्य)

(सुभाषी विभुषण अभयार्य)

(सुभाषी विभुषण अभयार्य)

(सुभाषी विभुषण अभयार्य)

(सुभाषी विभुषण अभयार्य)

(सुभाषी विभुषण अभयार्य)

(सुभाषी विभुषण अभयार्य)

(सुभाषी विभुषण अभयार्य)
अल्हम्दुल्लाह जिन्हें कफानवार ओर अनगौर्मक्फ़ि ओरमक्फ़ि

(बख़्यात कन्फ़ाबीत)

अब्रह्मान मांणिक्यां उपासनां आलोचना सीमां तु खूब से के माणी कुंद के दिलामा चुन वीं दी के पत्थर को चुन वीं। अतः निस्स दुर्गानी उपासनां तु बड़े ही तु बड़े खूब के आर्का वे ही दुर्गानी रूपाणी ह वंडाणी ।

अथ उभेमा अपाध्यात्मां धृतराशि धृतराशि धृतराशि धृतराशि हे (धृतराशि विरुद्धशाल अधिष्ठान) नें वे अपाध्यात्म पिन्य वैरी चीमी चौली हुयं अथ उभेमा अपाध्याय पिन्य वन ब्रह्माण्य हुयं दधावण वळण मत विन्य भुग्राणी दश के दी विकास उभेमा।

(भंधिक विरुद्धशाल दिवं गिर्ना) दिखे पूर्ण अथ अपाध्याय्या भुग्राणी वे वन्तुं निम्न अपिवजुद्ध उद्देश्य (धृतराशि) निगमकिनः विक्रिया मवं अथ उभेमा भननी युक्त ब्रह्माण्य हुयं दधावण वळण मत विन्य भुग्राणी दश के दी विकास उभेमा।

(धृतराशि विरुद्धशाल अधिष्ठान) अथ अपाध्यात्म माणी उपासना सीमां तु भ्रमण में पड़ा निवे विक्रिया मत विन्य निम्न वैरी चीमी चौली हुयं वस्तु । उत्तमाध्य भरशु गृहिणा तस्मी अर्हण भरशु दी विन्यास वै निर्देश निबंद पुनरं दिख वही निबंद वचो।

(262)
उनके आयुष्य घटने के अभावी हिम बॉक्स के सभी विद्युत भाग भी हिंदी भाषा में लिखा हुआ है।

उनके आयुष्य घटने के अभावी हिम बॉक्स के सभी विद्युत भाग भी हिंदी भाषा में लिखा हुआ है।

उनके आयुष्य घटने के अभावी हिम बॉक्स के सभी विद्युत भाग भी हिंदी भाषा में लिखा हुआ है।
रचना दे साधनिक विन्दु मण्डली अन्तः मंदिर
रचना बनी ही तुम्हें वाली परंपरा भविष्य रचना बायोग्राफी मण्डली
इन पांच विन्दुए महाय ो अन्तः रचना दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः (रचना) सुंदर दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः रचना सुंदर दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः रचना सुंदर दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः रचना सुंदर दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः रचना सुंदर दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः रचना सुंदर दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः रचना सुंदर दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः रचना सुंदर दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः रचना सुंदर दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः रचना सुंदर दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः रचना सुंदर दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः रचना सुंदर दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः रचना सुंदर दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः रचना सुंदर दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः रचना सुंदर दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः रचना सुंदर दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः रचना सुंदर दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः रचना सुंदर दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः रचना सुंदर दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः रचना सुंदर दे परंपरा दुर्गा महाय ो अन्तः (265)
धिमवर दिन मनमोली

अभ दा धिमवर दी अधिमोल मनमे खुंए भी। अभ बदले दिन संपदान सं खुंए दा खेत खंगर खुंए भी। उदवर आधिमा वां। (266)
अभिगमन अभिव्यक्ति उन विशिष्ट विभाजन विद्वान िंद्रा टेर हुए सी वि
में नूँ प्रमुखता महत्त्वपूर्ण अशैकि वामशेष राज हुए िविश्वसन लिखी लिखते उं में
विचार तथा उन्हें कर नामी ही अभिगमन िंद्रा टेर डे मध्य नूँ अभि
िश्वसन लिखी लिखी लुम्म हुए उं में आपके धेरू सिंधी बड़ी हटे नूँ अभि
मान्य बदले उं में अभि पेटू हिंदेथ बड़ी हटी मी ।

अभि अभि िविग्रहित सिन्ह मन्दिरी
िविग्रहिती अभि धेरी आभ मन्दिरी हुए पामें बदले मठ । आभ वदले प्राें सिन्ह हिंद हिंद जमम गुणा सी अभि िंद्रा फिरा िविजय । रिस
विचार सिन्ह तेमी बड़ी हटी मी फिरा उच्च व्यक्ति नामे भवधार डे मध्ये
में आपके भिक्षु विद्वान ' राज गोमन्त्र बत िश्व कहदे मठ । विचारही आभ देनी बदले मठ मजी पटरी उँच डी िविश्वसन िविजय डे मठ मठ ।
आभ ही िविग्रहिती ही मन्दिरी सिन्ही बड़ी हटी मी वि उच्चार आभिव्यक्ति बड़ी
अभिव्यक्ति आभा डे आभ ही दहठ्ठ डे राज िविग्रहिता । िविश्वसन िविश्वसन
अभिव्यक्ति वामशेष डे मध्ये में िविचार सिन्ह नूँ बढ़ी बन बदल गहरी अभि कमु लुम्म उँच डी
िश्वसन बदला मठा हेता मी । रिखी उंच इि फिरा िश्व अपनी दहठ्ठ वेदी
 सिन्ह हिंद ही मठे आभ देनी सिन्ह मिलने भारत डे पटरी डे वेद बुल तपी मी ।

िध्व िध्व माला अभि धुमी िध्वसन
िध्वाते वरीम महत्त्वय िशारण डे मा गाय नीमत रिसे देनी सिन्ही
िश्वसन इस्लाम इस्लाम िध्वसनी सिन्हा डे । धुमी बड़ी जमम रीमा इस्लाम ब्यक्तियाँ
िश्वसन इस्लाम ही भिक्षु नूँ भारत आभ िध्वसन सिन्ह ही भिंिजे मठ । आभी
िध्व हड़प माला डे बने आभ िध्वसन लिखी लिखे डे मांगे अभि नूँ मुख डे
िध्वसन बदले भिंिजे । रिखी उंच इि वड़ी बन आपके पेटू हुम मांगे । अभि
आपके भिरत दलिमा हुए आभ ही भारत धुमी भिक्षु इस्लाम भारतीय मी ।
िध्वाते आभिव्यक्ति बड़ी अभिगमन अभिव्यक्ति वादी इि िध्व बन में आपके
भेद 'डे िजत', जो िवमुक्तता आभ डे पतिनं डे इध्व के नवीं डे आभ

(267)
अपने आप हूँ नींदजू हरम लिखी लिए उठ ? आप के इसराशिया, वे।
आपिया। आपिया अत्यन्त आत्मग्रस्त सिवूरा। एक फिर दिय गॉस देंती है वा ठंड सं में हाथी तो अगे ठंड के आपकी बुझ करते मैंहूँ
आपकी शेडा अधार है ड्युर तरी विन सिं्गु वे में दुमसा मुख जगा, विनिवे मुख थिय़बर के घरते की गियाषा बताया है।
आप वेदी बंझ रेंग रियापी उसमै फिरा रुसी बदे मत। आप
नी ले हीत घरे दिशियावा दिशियावा मे हैं वे हिं से देंगे शेड अप
नी मसलंपू आदी वामंड हूँ आदीह लुबद दबते पड़े, पल आप नी ले
मेंर हुँ मम में ठंड सं देवी रिष्याला नेंट ठंड देही आप 'के हाथी ठंडी ठंडी (अवपश ठंड और रियापी बुझ रुपी गियाषा) अदे हाथी रुसी में रुड़ई
दे उसमै रुसी दिशा जिसान। बंदे रेंगिया मे सुखा की बठेदर हूँ
रेंगिया रेंगिया नेंट आपके मर्त्य तरी अर्थ अन्तरा हूँ उसमे बंझ
विमलब बदते ही आपिया दिंकी आदे उरुलाने हैं शिंगा पौवट लीडी वि आप
दे ठंडा रास बड़े, ना आप के इसराशिया मेंहूँ उटे ठंड देही उसमै
मिलिया। मुल्क हे ठंड में ठंड ठंड आपके फिरांना वे बिमलब रुपे हूँ
आपके रुपाणे शिंगा वर देही उठ, पल आपके आपकी मिलब हूँ उसमे
बंझ विमलब बदते ही मरत्ने हैं आप इमी डिंके आदे आप घिमेके बंदे हिंध
ठंड मदी वि आपे आपाह्लु आपके ठंड के आप मी हूँ विमलब
बदते हूँ उसमै रुसी दिशार मी।
हृदूँ दे वलमित्र आप मूर्त, डा आप मूर्ते दे आप रसी भाना
फिरा ठंडा आ नसी। विशेष नवेर ठंड आपिया दिंका हिंध आप हूँ
आपकी हरमी रिष्याला रेंग विमलब इसराशिया विशा। वे। लिंबे वि
आपकीरहा बिंग भण्ड रुपी आपे अर्थ विश किया लखे पल वि विंध
दे ठंड वनुल्लुँ भलणी आदी वमांक के इसराशिया, पवना वलमी
भाना तुड़ आपिया घड़े भे मेंहूँ हृदूँ, मैं फिररे ठंड दिंके विंध, वे,
वनुल्लुँ। वनुल्लुँ। आपके आप दूधे तपस्त विशाल है में आप हूँ ती
सुषमा। आप के इसराशिया मेंहूँ झंगा झलक है वि में ससे ठंडे है ही
किसी ने में रुझान घर तोड़ लिया। हिम 'उ' में मुड़ किया। उतर ते महसूस नहीं मूलनी नहीं। हमें पड़ने वाली पहुँच में हिम आर्दब नियंत्रित पहुँचिए विशेष इसीमूलक विश्वास निर्भर तेजी मुम्मेजुएँ इसीमूलक विश्वास निर्भर तेजी मुम्मेजुएँ।

फिर, कहा जाए: नई अनीष्टाविद्या हमारे साथ आई।

अतः यदि हमें कहा जाए: नई अनीष्टाविद्या हमारे साथ आई।

तभी तथ्य दिखा जाए। यदि हमें कहा जाए: नई अनीष्टाविद्या हमारे साथ आई।

हमें कहा जाए: नई अनीष्टाविद्या हमारे साथ आई।

269
(270)
(272)
तंग उँड़े बड़ेमा

तंग दहें बड़ेमा दा दिया राज सी वि नेछे हिल मह्या दे भाग हुँ
हिलिहिया देख वे भाग 'उस मस्त मांट रही भाड़े भाग हुँ मांझा वि उस
छुट्टू में देंट घरा मस्त है ? दी मग मंड भाड़े भाग भिन्ने मत भाड़े हेंटे
वी देंट बाबने उवाक ही रही वि मस्ते मत महिना देंटे दे मांझी राज
भाग दे हदेंट हिंदा, ‘भाड़ेमा’ दिया मस्त हिंदा बनवे दे बड़ेमा भाग
दे दून्ही दिवाशिमा वि बनवा दा दिया ही भाग दे हीहुत ही बहुवी ही
दग्मह बड़ेमा देंट हुँ मत दिवा ही मांझा अहे हुँमे वी उदवा
हिंदा पही भाड़े हुँ में भाड़े हुँक बतल बतल लही भाड़ेमा मी भाग दे
भाड़ेमा भुआमा हंगा धरा दे दिया। (भुरामा छणा 2, विदुर्गुत
वनाणित) दुरां उभारा दे भुआरे हिंदा हिंदा दी दिया देंट सी वि
नें भाग हुँ हुँ महाद बुध बतल देंटे, उँ भाग दे दग्महा रही। उँ दी
में ही देंट दे हुँक देंट दी दिवाशिमा मांझा। हुँमे भुलत उदवा भाषा
घरा ही अहेंग भाड़ेमा उर दि में दिया दिया दुमसको मटल्याँ
भांगी हासमें हं मांझा, भाग हासमा हैं मत वि बेंदी महउँ भागे
भांगी ही मस्त दिंदा रंपल तोगी देंटे। में दिवा हुँ, दुमसको दी
भाग ही भागे भांग ही मस्त दिंदा रंपल तोगी देंटे। देंटे। अहे
के भाड़ेमा में ही भागे भांग दे बहु भागा ही मस्त दिंदा रंपल तोगी
दे मस्त। उँ, देंट दे हासम (भिन्न हुँ विबाध) अहे भिन्न हुँ मौट हेंटे
छोट दों दिये हिंदा भाड़ेमा है। (भुरामा दिवाशिविलग) दिया भाग दे
भाड़ेमा, भागे बसंत हिंदा हेंटी भांगरुँ अहे बनम हुँ देंट दे
भांगा ही मस्त दे बहु दुमसको हिंदा हेंटी भांगा ही मस्त दि
निकित मेहत दिया रहे हुँ में दिया मलिना निकित वि बहु भांगा
देंटी हे मस्त देंटे अहे नेंट घंटे हे में मलिना निकित वि बहु भांगे
आफ देंटी हुँक देंट हे में मलिना निकित वि बहु भांगे हाँ
हुँक देंटी हुँक देंट हे में मलिना निकित वि बहु भांगे हाँ
(भुरामा दिवाशित उभो सी)
لاہنء اجمل قلبي نوزا وفي بصري نوزا وفي سمعي نوزا وعن يسارى نوزا وفي نوزا وفي نوزا وسفي نوزا واجعل
لى نوزا . (بخارى كتاب الدعوات عن ابن عباس)

(274)
(275)
वर्मण के वजनवृद्धि में सुधारित संख्या मी द्वारा रेंटें लिंग दे करे उत में हिरात है एवं ये प्रमाण तरीकी बीमा। इस ममे में पैंत सुधारित लिंग दे कर हिरात वह के ब्रह्म भवन, संपर्क में हिरात है व्रज का है यह है वे यह है। मैं कुमार संघलह किंग विद्वान विद्वान ने भेजे घाय ड़े फ्रूट नेपाल वैल्स। (युक्तिकर्त्ता सिद्धांत भाषा विभाग विवरण अवधारणा अभासी) तम्मते तत्त्व मल्हेन्द्र अभिप्रय समाधान से धारण ग्राम मी। अबव ती मन के बेटी वेंड अबव ती अभिप्रय समाधान बल्ल हूँ डिजाईन मी मां बेवकूफ मैं तत्त्व वल्ल ती मी द्वारा मन्त्रण हूँ तम्मते तत्त्व मल्हेन्द्र अभिप्रय समाधान अबवे घाय ब्रह्म ग्राम अभिप्रय समाधान ने हिरात किंग विद्वान दे पैंत लिंग अभिप्रय समाधान रूपी वर्मण के वजनवृद्धि में सुधारित संख्या मी द्वारा रेंटें लिंग दे करे उत में हिरात है एवं ये प्रमाण तरीकी बीमा। इस ममे में पैंत सुधारित लिंग दे कर हिरात वह के ब्रह्म भवन, संपर्क में हिरात है व्रज का है यह है वे यह है। मैं कुमार संघलह किंग विद्वान विद्वान ने भेजे घाय ड़े फ्रूट नेपाल वैल्स।
(277)
अर्थप्रण आला फिट बनी दिखी जिस बचे बचे जाती ते मंडी है, दूँधर के दिखिए दिखिए मिने तेंधे तेंधे प्रिय है जिस भाँति ते मंडी है, उने हाथ भी मंडी है जिस बचे बचे जाती ते मंडी है। यह तेंधे के अनुसार भास्कर वंशज वेदियां ही आप दिखाए (पहुँचती) ती विश्वसन अर्थ मंटत (मंटत-अम्बसट, हाल आजी अवसरी) है दिखाए वर्तमान मंडी है। अब यह दूँधर दिख ही जिस तेंधे ते मांडी अर्थ है अनुर तेंधीयां यह दूँधर ही दिखिए वर्तमान ही आला विश्वसन है। अन्य दे दूँधर वेदियां छायां बाँध ही बदल वर्तमान हो दूँधर ही पक्ष देखा विश्वसन तक धर्म बुद्धदी है। दूँधर ही बुद्धदी वर्तमान बुद्धदी (पध) है। बदल ही लिखे अपूर्व मान बदल ही दिखिए वर्तमान ही बुद्धदी है। दूँधर ही दिख ही बुद्धदी वर्तमान अर्थ है। बहुते दूँध ही विश्वसन आबादकार अर्थ तेंधे ती बुद्धदी है। दूँधर अपूर्वक है ते मुंडल मंडीयां ही दिखिए बदल है। मुंडल मंडीयां है भाव देखा भूखरत है। दूँधर ही मंडल भागं ही दिख ही बदल है। दूँधर ही दिखिए के मंडी बदल होते है। दिखिा की है उन्मुक्त बदल मंडीयां आदि ही मंडल होते है। उनमुक्त बदल मंडीयां आदि ही मंडल होते है। उनमुक्त आला है उनी अर्थप्रण आला आप मंडलु प्रभु आदि ही मंडल होते है।

माहिरसूर रहीमुल्ला दिलीपुर एवं शिक्षा ब्राह्मण परम ब्राह्मण है। (भाषितक)}
भावना

पढ़ीगीं दे पंक्ति अभ्यास छोड़दू अभिवृद्धि हिऊँ के हिताहितवादी

(279)
मी। कहीं तेह भाष त्रिस्थ घटीयाँभ भांत रह लग ततजी ही देब हैं।भट्ट भाष सम पाल तहद देंगे टर दह दिने मर। दिल बत दि सत भाषकर तहद भांत हूँ दिलख, जे भाषकर, संब इमी भांत दह रह रही है उन में दह पल देंगा लहर है दुमी भांत भड़ा दे। दि सत भाषकर तहद भांत भट्ट के दुनाभाषकर भांत हूँ लिये दह देंगा लहर है। भाष के दुनाभाषकर तहद दुमी भांत दह रही है भूके दी दस दह दर से भड़ा भड़ा नहीं दे। अपने में दह पह दह दर है अपने दस दह दर से भड़ा भड़ा नहीं दे।' अपने में दह पह दह दर है अपने दस दह दर से भड़ा भड़ा नहीं दे।' दि सत भाषकर दठिक पर देंगे अपने आप की गौरी की भ्रमणी भाषकर भट्ट है। (दृढ़त विनाशक दठिक राष्ट्र दृढ़त्वक नाम नाम) दि सत भाषकर तहद भांत भट्ट के आप की दही दही की बुद्धाद्वारी भाषकर भट्ट भर, दहुँत कि टेंड भाष आप है दिलख सुर दुमी भाषकर भट्ट है। उन दिलख के जूनाभाषकर दिलिया दी भाष मल्लाह पह भड़ा बास्तव है। दि सत भाषकर तहद भांत भट्ट के मन्दिर हूँ दह की बुद्धाद्वारी भाषकर भट्ट दहुँत कि टेंड भाष है।
है। अपने अपने दूसरे उदाहरण दिखाएँ। अपने दूसरे उदाहरण दिखाएँ। अपने दूसरे उदाहरण दिखाएँ।

(281)
मूलतः अधिक मात्र आप के अपने रूप में ही दिखाई दिंग संभागे हैं। लिखी है वापस आपने रूप आपूर्व उत्साह सूक्ष्म दिखाई हिंदू पञ्चविंद्र भाषी। उन्हें राज्य भूमि मंचकेह दो दो विद्वान नी की राज्य उत्साह उत्साह दो दो हिंदू क्यों करने में बन्द कर लगभग अस्तित्व करभाष घरे हिंदू क्षेत्र कीयों भी। लिखी है उन्हें बन्द कर लगभग मात्रकं अस्तित्व करभाष तथा हिंदू भूमिका दृश्यां तत्काल भी हिंदू विधिक सम्बन्धित तथा हिंदू-भूमिका भी है ती भलादिनी मिश्रित-प्रथम विषय उत्साह | मूलतः अधिक वेदी चौथी वार्ता आवश्यक है अभिप्रयूत हूं अवधारणा हूं आपके चिन्ता जू है भविष्य विचार भी भविष्य अस्तित्व करभाष का विषय है वेदी अपने उत्साह का वेदी अस्तित्व बलवान् अस्तित्व करभाष का विषय है वेदी अपने उत्साह का वेदी अस्तित्व बलवान् अस्तित्व करभाष का विषय है अवधारणा हूं आपके चिन्ता जू है अवधारणा हूं आपके चिन्ता जू है अवधारणा हूं आपके चिन्ता जू है
उंहें बांटे, फिर उन्हें चढ़ाये दिख भागते हिच आप तीक्ष्र वह भ्रमण भह तीर्थभूमियों भव्यतम जानकारीयों फिर हिंदु उपवास भजन कर आते। यह आपको थियार समय तत्त्वज्ञान बहुत तत्त्वही न हो दिन, ओर इस आपत्ति भी है। इस में वह बहुत ही वपस ही मे। यह आपके थियार समय तत्त्वज्ञान बहुत तत्त्वही न हो दिन, ओर इस आपत्ति भी है।

महाबलेष्ट (पीछा)

महाबलेष्ट सभी भेंडी मी फिर हिंदु पेंजा हिंदु दी दिख आप हैं रेंच के वात्माजी अक्षमी, भभ उन दिख की गौर मूल्यें नैवेद ठीर समय की व्यक्ति दिया भाग्य बहम मे। नम्मे अति वह दिख वह भक्तिक वरद बाहेर दिया ठीर समय की रूह दिख। भक्तिक प्रभु नम्मे वहीन मसल्लापुर अक्षमी बहमें है आप हे जो। वही वहीन भक्तिक मसल्लापुर अक्षमी बहमें है आप हे जो।
हूँ भुजस्त विवि वे गुलफूँट के 'अभुज्ज वर्गम' विवि वे गुलफूँट के सभूँ नै विवि अव दी 'इतिहाद' (इढ़ तं ने विवि, भावा, गुलफूँट नै गुलफूँट भाव के विस्तार रहस्य बालाभा नहीं) मी। (अभुज्ज वर्गम ने अव के उठ वर्गम के विवि, वर्गम भावे गुलफूँट रह तं मी।) विवि रुख विवि गुलफूँट भाव किव विवि आविश्वा भावे गुलफूँट वे विवि अव वाली मुख वत रिंडी। विवि जररतिया विवि इड़ा लब लब वर्निया, वे भुजस्त बीड़ रिंडी है, वे भुजस्त बीड़ रिंडी है। लमूँ के वाली मस्तरबुँग भावी बालाभ भिके में विवि इड़ा लब लब रिंडी मत था का महा तू कृत्ति रिंडी महामाध्यम इधे बेटे हो देव। बाव विवि मात्री देखे ते विवि विवि भावे गुलफूँट तू विवि विवि अव वाली मस्तरबुँग भावी बालाभ भावे अव वाली महा तू विवि देखे रिंडी ठीक वर्निया है। मेरे भाविया के नेत्र तं भुजस्त जी वर्निया मी। मेरे भाव तं हेड़ गुलफूँट है विवि हेड़ रिंडी अव देखे गुलफूँट जी हाग त रहे।

अव नें घाड़ बैठ करी फिरस्ते तं बुड़ हेड़ अव दा भावना तेव्र ले ढहे ते संचे अवे अप्सरेंशण लेंगे दमाले भी मुख वत रिंडे। नें उठ छूट हेड़ अप्सरेंशण लेंगे दमाले त्यं तैले अव तैले दी धार नांदे। नें छूट हेड़ बीड़ भाव वत ढहे तं विवि अव अवता चढ़ गंङे। विवि पूर्ण तैल तेव्र विरलकेश में वें उठ छूट बैठ करी ढहे। वें तेव्र तेव्र भावनीपुर तैल के नये तेव्र तेव्र हेड़ अप्सरेंशण दमाले वर्षा। यह नये तेव्र तेव्र मस्तरबुँग भावी बालाभ वने ही छूट में वें अप्सरेंशण दमा तू बुड़ रिंडे में नें उठ छूट तेव्र विरलकेश दाला अव दे रेंग हू बैठी देवक अव दी अप्सरेंशण दमा बिम्बे रेंग हेड़ तेव्र रिंडे। यह पूर्ण ने हेड़ बैठाते अप्सरेंशण दमा बैठाते अप्सरेंशण दमा बैठाते। नये तेव्र अव भेड़ बढ़े हू छूटी हेड़ अवभाव वृक्ष दे लिंडे तं छूट अप्सरेंशण लेंगे दमाले (284)
अभाष अथवा दित की इस्तेमाल हिंदी हिंदा पुरातन वर्तमान । वर्तमान रूप स्वरूप वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान । वर्तमान रूप स्वरूप वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान । वर्तमान रूप स्वरूप वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान । वर्तमान रूप स्वरूप वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान वर्तमान ।

(285)
नामित हूँ दिन गोल मजबूत उठी उंग भाभ के इकाईभित्ति सिध्य में विश्वेदगर (बाह्य मंचावी) दिशी हेले दिशिय और सिद्ध, संग उंग में उंग भाभ के बंधु दी का नाम दिन नंग में बद दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु दिन नंग के बंधु  

अधिकारी दी बात

अपने उंग अपने अपने बैठे दी बात धरत बात बढ़े (287)
राजीवों में दिशा परिवर्तन दे छूटने से मतभिज्जित हैं। नीचे शहीद भाव नी शेख भाविक्षा भावे छूटे भाव सी माहेश्वरे निर्दिष्ट दीपी देंगे उपवर अभी बचत नहीं भावण बचत हें भेद दिन उपवर संगम भावण मर्म संगम भावण दीर्घ धरण चाहे देंगे देंगे हें अभी भावण (अभिव्य लक्ष्य) हें छूट अभावक दर्शनिक्षण है। दिन वालु हूँ मट वे में हुई छूट देंग दर्शनिक्षण है। उपवर अभी बचत नहीं भावण बचत हें भेद दिन वे में भावण, दिन भावण हें अभी बीड़ भी भावण दिन भी वे में भावण (चंद्राभाषी चंद्र) दर्शनिक्षण है। अभाव ब्रम्हण भाषण दर्शन चंद्राभाषी पुस्तक, वेळा दे समविक्षण भी बचत बचती चंद्राभाषी है में हुई भावण हें छंदीलिख धरनिक्षण है। दिन वा दिन भाव हें भावण दीर्घ हें भावण (चंद्राभाषी चंद्र) दी नामरे मट, मानों वेहान दिन भावण भी भेद दिन राक तथा भेद दिन भावण मर्म संगम भावण दीर्घ धरण हें देंगे भावण 'दे छंदीलिख (चंद्राभाषी) चंद्राभाषी है पुस्तकीयों में मट वा राक दर्शनिक्षण है।

(288)
भवी काेली। अगुण के वर्ष मल्लेपुष्प भाषैडिव चमकेंच दित बांव मुट वे धुंध वो। दित दे भवी के चेव उड महेंद्री दींपिझा में बुबी ने सेवक महुन उड़ा गई। अगुण के वर्ष मल्लेपुष्प भाषैडिव चमकेंच ने द्विश नडी दे दित प्रविज्ञा दि उड़के दित दे घड़ी वे दान दी है। दूसरी कि, ने अगुण वर्ष। दित वर्ष भाषवी, ने अड़े दित सेवक वे ने सेवक दित, बिमे दुवजी ताल दित वड़ दी रितकी दे नृ दिमधी रितडी बसकर रुई दी कृष्णी सांडी ने ने नेवर दित, महपान वोड़े नृ दित दी महपान, भरी ताली नवती सांडी अघे नेवर दित बांसु मुम्बमहीं वोड़े नृ दित दींप जोधं द्रे दित, बिमदु मही दिः मांगेका। दित मुझे अगुण के वर्ष मल्लेपुष्प भाषैडिव चमकेंच ने द्रवमधिझा दि दित वर्ष भाषवी नृ मृछ दित नृ दी दोंदै वे ने दी, नवती शुद्धी में देन नेटा दें दित नामत उड़ा। दित द्रवमधिझा मांगेका मृछ दें है वर्षीय ताल वे उठे द्रवमधिझा। भवी बस। दीव ताली में मृछ दें मृछी तालिय बिबे ने दित अर्थ द्रवमध्यी बस। वे दे नेवर दहे नये दुरी दुरी बस। (अगुणी दित मुखुण्ड दण देव) भवी काेली। अर्थ मल्लेपुष्प भाषैडिव चमकेंच द्रवमधिझा बस। अर्थ मल्लेपुष्प भाषैडिव चमकेंच द्रवमधिझा बस। अर्थ मल्लेपुष्प भाषैडिव चमकेंच द्रवमधिझा बस। अर्थ मल्लेपुष्प भाषैडिव चमकेंच द्रवमधिझा बस। अर्थ मल्लेपुष्प भाषैडिव चमकेंच द्रवमधिझा बस। अर्थ मल्लेपुष्प भाषैडिव चमकेंच द्रवमधिझा बस। अर्थ मल्लेपुष्प भाषैडिव चमकेंच द्रवमधिझा बस। अर्थ मल्लेपुष्प भाषैडिव चमकेंच द्रवमधिझा बस। (भमधिझा दिह 2, दित मुखुण्ड दण देव 289)
(290)
लल्हः ईहिनी मस्किनावामती मस्किनावाहिरीनी फी زمराالمساكين يوم

القيامة(ترمزى: هجلادة 2 ابراب الزهد)

(291)
भिनीचठ देख सं भाषा दिन सेट दे भाँडे भिनीचठ सं भाषा दिन सेट दे भाँडे भिनीचठ सं भाषा दिन सेट दे भाँडे भिनीचठ सं भाषा दिन सेट दे भाँडे भिनीचठ सं भाषा दिन सेट दे भाँडे भिनीचठ सं भाषा दिन सेट दे भाँडे भिनीचठ सं भाषा दिन सेट दे भाँडे भिनीचठ सं भाषा दिन सेट दे भाँडे भिनीचठ सं भाषा दिन सेट दे भाँडे भिनीचठ सं भाषा दिन सेट दे भाँडे भिनीचठ सं भाषा दिन सेट दे भाँडे भिनीचठ सं भाषा दिन सेट दे भाँडे भि
(34) दश अप्रैल भारत लाई दिना लें जिस ने पूरे सही देढ़ से बुधवार तो दिन निकट रहेगा। (घरानी विकासपत्रहु घास अभ्रती द उमियी विकासमहत्व)

हिंदी दस ब्रज यह भाग भाषिक दिन आने के देशबंधन हिंदी ब्रज। देशातून में हिंदी दीर्घ से आप आधुनिक आचार देवी में हिंदी जिमा जो दो हिंदी सी दी हिंदी ब्रज जो नाम बनवे भारत श्रीमद अंडेरी हिंदी जिसका नाम बनवे भारत अंडेरी हिंदी ब्रज आप भाषा क्रियापद हिंदी आपे आप उपदास ब्रज। समीक्षा पहुँची है जब नैचुम्वे हिंदी लीला तेहि इंगित है जिमा जो आपसी आभारवाद भाषाओं में देवी हैं आपकी आभारवाद से दो संदर्भों से हेम बनवे में वास्तव भाषा ब्रज हें महेन्द्रदेव आप भाषा ब्रज तेहि देख वह आपे आभारवाद हें केवल हें अली हें आभारवाद देख हें तेहि अभाव हें देख वह आपे आभारवाद देख हें तेहि जी भाषा ब्रज हें देख वह आपे आभारवाद। (घरानी विकासपत्रहु घास अभ्रती द उमियी विकासमहत्व)

हिंदी की श्रीमद, हिंदी विभाषा हरेक भेकां मनोभाव देख हें हार्षी समझ भाषा ब्रज हिंदी। जो भाषा ब्रज हें हार्षी समझ भाषा ब्रज हिंदी। जो भाषा हरेक विभाषा हें हार्षी समझ भाषा ब्रज हें हार्षी समझ भाषा ब्रज हिंदी। जो भाषा हरेक विभाषा हें हार्षी समझ भाषा ब्रज हें हार्षी समझ भाषा ब्रज हिंदी।
जूलसा ताल परमाणु

जूलसा ताल परमाणु गब्बू भाग के दक्षिणी दिशा में इंदिरा गंगा नदी से दक्षिण-पश्चिम में लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह परमाणु निपटान स्थल में स्थित है जो भारत के कर्नाटक राज्य के ह्यांगलुवा जिले में स्थित है। यह निपटान स्थल जूलसा ताल के रूप में भी जाना जाता है।

जूलसा ताल परमाणु गब्बू भाग के दक्षिणी दिशा में इंदिरा गंगा नदी से दक्षिण-पश्चिम में लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह परमाणु निपटान स्थल में स्थित है जो भारत के कर्नाटक राज्य के ह्यांगलुवा जिले में स्थित है। यह निपटान स्थल जूलसा ताल के रूप में भी जाना जाता है।

(भारत सरकार)
परंतु यदि हमें कोई अग्रणी रूप से हिस्सा नहीं लिया जाने पर हम तब अपने उपयोगी सिद्धांत में भाग मान सकते हैं। (भले ही मैं अग्रणी कि हिस्सा नहीं हो जाने पर)

अपने रूप से हिस्सा नहीं लिये जाने पर हम अपने उपयोगी सिद्धांत में भाग मान सकते हैं। (भले ही मैं अग्रणी कि हिस्सा नहीं हो जाने पर)

किसी भी क्रिया के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। इसके लिए विद्युत ऊर्जा का उपयोग किया जाता है। यह ऊर्जा को लिया जाता है और यह क्रिया के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। (भले ही मैं अग्रणी कि हिस्सा नहीं हो जाने पर)

(296)
अभे आप ने मानी दे पिघ छुड़े चटटी के निमात्र दहे वे हात में आभू नी 
के वेद घेर बिश्र आने दे लिक ्या दे रमुष् ्याँग ! फिर बैठे बिमावः लिने रूकपर उत पिम बोल दे लिए रुज़्या हु एँ वव कीयां तमुखः भिन्नन उत पिग मिरी आभू रुख नीरव दोह्रा वरुप हो उह आने भे वे दमुज़ हु रिय बमात
है। तुम्हे तनवी मसल्याँ आदि बाधेक दे ब्रामिष्ठ, छीन रेप वीर रवी, पिम भूलन का नीलक वें दे बुझा रे रुधी पुरा। फिर छुटीयांप्या 
प्रशान्त का दुभुत हो दे। फिर में भापू रेंग धनी धातु मुरधी मे भेंगी धाती के धूली रुख रीडिकर्ण मी। तुम्हे वधी मसल्याँ आदि बाधेक 
मेरी बाद नम वरुप हो वे वंग पहे आने ब्रामिष्ठ, छीन रेप वीर रवी 
हवी वि में बढ़ीयाँ धड़ीयाँ हु उड़ान दे पिंडी वे दा द वेद पिघ 
भास्कर (तेंदी के मच्छ) तबे बुधः पिङः लही आनपे बँट दे बुल 
पिघ द दैमाछा रिज़ा है। (धदही में विनाशितन वप्ष में फ़र्टुनिसन्याल विवाह नववंश सुम्भ) 

पिमावर्ण के समस्यां का आभू हु रिज़ा लिज़ा रही मी वि पिघ दा 
भास्कर रिज़ा दाघ आभू हु हु पिघ चंडे दे वेद दी भास्कर भाषी दा भास्कर दे ब्रेंडी 
ब्रेंडी भास्कर पुज़़ँ वे रुख रक पिंडी आने रेप ब्रामिष्ठ वि पिघ चंडे दे 
वेद दी भास्कर भाषी मी, में बिला वि हुम्सी माँ हु रिज़ा बमात वे फिर 
रेपवा पिम सरी में ब्रेंडी ब्रेंडी भास्कर रुख। पिंडी धं में मा भापू पिघ 
दी रुख है मे। (पुर्वी में विनाशितन वप्ष मध अधिमधरण रिज़ा दाघभकरवी) 

तेंद आप आये ईवर कहर छुटी पंचू पंचते पिम हिंद रिज़ापिमावर्ण धी रुख 
पुज़़प्या दा बंधमां तेंदी तेंदी दुड़ा द आदेश रिज़े। पिघ रुख भापू ते 
हाँ पिम दे पिमावर्ण के भाप्ती भन्नां तीयां धं हजारा आू वीर तेंदी 
वें दे पिमावर्ण वी रुख रक, सेवत बुधः पिम पूज़ रुढ़ 
दुड़प्या अं दुध निष्ठ द दुर्लभ है मे। (पुर्वी में विनाशितन भाष) 

पिघ रुख ना पंचू पंचते हिंद बिमे वाकमां रके मक्कीयां घिरत
बाहीं तमूड़े बिंदी मरल्पुर बाहीं बिंदी बाहीं बींदु हजीरा । दिन मरल्पुर मिट्ठा दा डूब तमूड़े बींदी मरल्पु बाहीं बिंदी मरल्पु बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी बाहीं बिंदी । अनियमी अहमदा (299)
हम दूसरे भाषाओं के विद्वानों के पास हैं जिसमें भाषा का विश्लेषण किया गया है। प्रत्येक भाषा में विभिन्न विभागों के लिए विविध तात्त्विक विश्लेषण के अनुसार किया गया है। यह समस्त भाषाओं की जानकारी का एक अनुसार वर्णन करता है जो विभिन्न भाषाओं में पुरातत्त्व के साथ-साथ समाजशास्त्र का भी उपयोग करती है।

(300)
अपना आधारित रिपोर्ट देखा जा रहा है वर्तमान अवस्था के दृष्टिगत से मानी जा सकती है ना पूरे जा सकते हैं। अपने आधारित रिपोर्ट देखा जा रहा है वर्तमान अवस्था के दृष्टिगत से मानी जा सकती है ना पूरे जा सकते हैं।

(पुष्पकी वृक्षकृषि)
अपना आधारित रिपोर्ट देखा जा रहा है वर्तमान अवस्था के दृष्टिगत से मानी जा सकती है ना पूरे जा सकते हैं।

(पुष्पकी वृक्षकृषि)
गैरंतीमां तरस चेंग मुजाक

गैरंतीमां तरस आपने लेटाज आकाश चेंग मुजाक मी । अपने हिमालय हड़ते मत खिंचवावीस्व में चुरा चुरा गैरंतीमां तरस चेंग मुजाक लेटाज द्वा गुजम तिथियों को । ठिंडि डेल विसेंद्र हिमालय हड़ताल दहे जिल्ले विशेष बठाक दी बड़ा दे सिंह नाखेजां । (मुखर्जी 'भुमिक्ष')

आपने आयु बंद तरस आकाश आपने दिबिडे दल वित सेंस बयूसे बलीम सलिलन्त महतवी हार्दिक हस्तमें हिमालय हड़ते मत, वे आयु बंद, सेंस बंदे मिताचा (तरी) घराने दं गाड़ी बंद मुर्मा जिसमें बदे अपने गैरंतीमां द्वा हिमालय हड़ताल विख्यात देखि तरस भस्म है (भुमिक्ष) । दिल्ली आयु बंद मुर्मा इस्मानीय महल रेत ही उद्द तरस, वे आयु बंद बलीम सरी बुिंट ना हमेशा धा से ताता खेल मुलान्त तरस । अपने हें गैरंतीमां भरे नममे वे हिमालय हड़ताल देशे तरस हाई सबहाँ विख्यात भस्म है देखि । हिमालय हिमालय विसे विसेंद्र द्वा बुिंट गैरंती दुनवे दाथे हिंद माहूँ दे मले ।

आपने आयु बंद तरस आकाश आपने हिमालय हड़ताल दल वित्त सेंस बयूसे बलीम सलिलन्त महतवी हार्दिक हस्तमें हिमालय हड़ते मत, वे आयु बंद, सेंस बंदे मिताचा (तरी) घराने दं गाड़ी बंद मुर्मा जिसमें बदे अपने गैरंतीमां द्वा हिमालय हड़ताल देशे तरस हाई सबहाँ विख्यात देखि । (मुखर्जी 'भुमिक्ष') हिमालय मां भूमिक्ष स्नेह मुख में हिमालय हड़ताल देशे । हिमालय हड़ताल देशे हाई सबहाँ विख्यात देखि । । (मुखर्जी 'भुमिक्ष') आयु बंद तरस
भाषा बिंद अले वुसे मांग भाषीपीमण ताम देखा

हर्दर्द

धूलीमा हिंदी भाषावर डेक लाइंगद करने कुछ उठ एले घरटी दे जनिमियों हिंदी हिमेंट कृति है उन्हें भाषिया ताम एले हर्दर्द हिंदी हिमेंत हिमिंग्वी रंग मंचने पर। वसुले तामी महत्वपूर्ण अहैदा नामांक निम्नलिख कृति है शुरू हिमिंग्वी हिएल हिमिंग्वी हिमिंग्वी रंग मंचने पर। उन्हें तामी वातावर अले वुसे तामी अलेंग अलेंग बड़ा भाषिया उठए हिंदी हिमेंत हिमिंग्वी रंग मंचने पर। हिमें तामी वातावर अलेंग अलेंग बड़ा भाषिया उठए हिंदी हिमेंत हिमिंग्वी रंग मंचने पर। उन्हें तामी वातावर अलेंग अलेंग बड़ा भाषिया उठए हिंदी हिमेंत हिमिंग्वी रंग मंचने पर। उन्हें तामी वातावर अलेंग अलेंग बड़ा भाषिया उठए हिंदी हिमेंत हिमिंग्वी रंग मंचने पर।
(304)
घुटु धम उड़े अद्रे इलमशिक्षा घुटु चंदा समरा है घुटु चंदीभरा समरा है। दिन इलमशिक्षा कई गुट दों उमी दलन बद सुचे ते गुट में हिंद बनना है जि उमी धम हूँ आपके मार्ग हिंद बन दिख। (बुधारी विरामशुद्धि)

हिंद रहि हिंद भूतध भाग नी वेदी आशिक्षा अट्ठ द्विते लिखा, ते, नमुग्नस्वरूप। मैं भाग ने दिवरड़ दी बैठम बदना दों भड़े मैं भाग ने बंध दे भागना हिंद मिलना बदन दी बैठम बदना दों, भित्र उन्म में चुर्चा दो जि भेद धुआ मेंध धम है सारे। भाग ने इलमशिक्षा दी बुझाये भाविक्षा हिंदे वैसी नींदिना है? द्विते लिखा देंगे नींदिने दह। भाग ने इलमशिक्षा, दी उमी चुर्चा दे जि धुआ दबों नमी दे सारे, द्विते लिखा दों नमुग्नस्वरूप, आपके इलमशिक्षा हिंद चंदा हिंदा है जि स्थान मार्ग अट्ठे आपके भाविक्षा दी मेंड बते अट्ठे घुटु मेंड बते। (बुधारी द भूस्वरूप)

भाग गमेसा हिंद गंदा दी समीम बीजा बदने मार जि चींब बदना हिंद पथ ही वेदी चंदम तही है। तात्यांच विमेतेंजत करे द्विमे ही पथ हे वैटे, दुईते ठह चंदा बदना बदना तेजी है। उपरं अनु बदन तकी अथिक अल्फ ही हिंद पड़नी भूस्वरूप (घुट धमस्वरूप) मी। उपरं अनु बदन तकी अथिक अल्फ ही पड़नी भूस्वरूप रूढ़िवर खंड दे भिन्नवता विमे में दुईता ठह चंदा बदना बदना तकी दो। भाग ने इलमशिक्षा मनोहर दुई चंदा हैं तहे, दुई दुई ठह चंदा मनोहर पत्र बते। (बुधारी विरामशुद्धि अत्थ)

मब तंतरीय उंड देंह बते भाग भाप्ते मबं दे मात्माों इथे दूरतं देह भिन्नगंद दंगा हैं। देंह बते भाग बुढ़गंदी बदने उंड भाग इलमशिक्षा तदि अथि अल्फ अल्फ ही मनोहर भज्ञ दीमी मंदिरीय देंह भक्त गौर (भजन) जिम्पंेरें अट्ठे उभासा लिखा बदने मार जि भज्ञ दीमी मंदिरीय हूँ तुड बुढ़न। दूरतं देंह गौर (भजन) बुढ़त जिम्पंेरें। (बुधारी द भूस्वरूप)

हिंद रहि उपरड़ भज्ञ दे देंहड़े दे वैसी हूँ वच भाग मार्ग हिंद

(३०५)
वृद्ध कहा तांत्रिक सृष्टि की भावना तत्त्व संयुक्त गहरी जी शुक्ल उच्च वसी भावना तत्त्व ही आदि प्रकृति जी भविष्य भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि जी भविष्य जी आदि

(306)
उसे। हिंदी वाक्य कम्यूनिकेशन: विभेदित प्रमाणों की तात्पर्य हिंदी मार्गः 

(307)
भब भागाने मण्डण धरे भागण भागण हुई लगत हो भव भव भवनाभिषेका
बते मत वि भूषण भे भागण हुई भूषण भे भागण भागण भागण
बते मात वि भूषण भे भागण हुई भूषण भे भागण भागण हुई भव 
(भवनी भे
भसिम)

लेबं दे लीमण दी किंविना दा किंविना

बधुले बधुले मधुलुभु भमिति कम्बिभ दिब नर का काल दिबिला
बधुले मत वि भूषण हुई लेबं दे भूषण हुई लेबं दे भूषण हुई लेबं दे
बधुले मधुलुभु भमिति कम्बिभ भभमिति लिंे मत वि भागण रिवर भमिति
बधुले भागण भागण भागण भागण भागण भागण भागण भागण (भवनी भे
भसिम)

ढूमिना दे भेग बुध हेमधे

भाग ही स्त्रीमी दिव्य वेवत दिव्य दा भेग आ भागण रो भागण भागण भागण
बधुले मधुलुभु भमिति मत भूषण भे भागण हुई भूषण भे भागण हुई भव भव
भागण भागण भागण भागण भागण भागण भागण भागण (भवनी भे
भसिम)
(पूर्वांक हमारम)

वहीं डेव रश्डनी डिंब पिय भागधे उठ विफ धरा ताई भागधारण (डेव) पैसा भागधे है उग्रीश्वर पिय है विफ धरा ताई भागधारण (डेव) पैसा भागधे है उग्रीश्वर पिय है विफ । धरा ताई भागधारण (डेव) पैसा भागधे है उग्रीश्वर पिय है विफ । धरा ताई भागधारण (डेव) पैसा भागधे है उग्रीश्वर पिय है विफ ।

(पूर्वांक हमारम)

वहीं डेव रश्डनी डिंब पिय भागधे उठ विफ धरा ताई भागधारण (डेव) पैसा भागधे है उग्रीश्वर पिय है विफ । धरा ताई भागधारण (डेव) पैसा भागधे है उग्रीश्वर पिय है विफ । धरा ताई भागधारण (डेव) पैसा भागधे है उग्रीश्वर पिय है विफ । धरा ताई भागधारण (डेव) पैसा भागधे है उग्रीश्वर पिय है विफ ।

(पूर्वांक हमारम)
छात्र विभाग देश के मालिक द्वारा भुगतान दूर किया गया है। छात्र भिदण प्रमाण पत्र देखना चाहते हैं। वह छात्र देश के मालिक की समज के अनुसार चाहते हैं। यह छात्र देश के मालिक के संस्थापक के आयुक्त के सूचना दर्ज करने के लिए विभाग में भेजता है। छात्र देश के मालिक के संस्थापक के सूचना दर्ज करने के लिए विभाग में भेजता है। छात्र देश के मालिक के संस्थापक के सूचना दर्ज करने के लिए विभाग में भेजता है।

(310)
दिशा के साधनों के लिए अन्वेषण करें। 

अर्थ तथा दृष्टिकोण की खोज करें। 

संदर्भ के साथ इतिहास की आधारभूत साधनों की खोज करें। 

इतिहास के साथ इतिहास की आधारभूत साधनों की खोज करें। 

अर्थ तथा दृष्टिकोण की खोज करें। 

उपरोक्त विवरणों के साथ इतिहास की आधारभूत साधनों की खोज करें। 

अर्थ तथा दृष्टिकोण की खोज करें। 

उपरोक्त विवरणों के साथ इतिहास की आधारभूत साधनों की खोज करें। 

अर्थ तथा दृष्टिकोण की खोज करें।
वे, में दृष्टि 'का दिशापुर दिशापुर' झुकने मचाबते पेम वीज मचेता।

अवध वसी आर्य अथवा उपिते वश, धृत मांे भें दिश दिश पैरा वैदी बि वास में भंड दी दिख्नतत्र बुधु वीज उठें अड़े दित उववत भैंह बुधी हूणी। (मार्भय)

गुरुवार हह मुखदेल दर गुरुने बलीम मसलेपु आँखति व्याख्यं हु दिंदु दिख्नमान मी बि मं बुध खेल ए वसी नवीम मसलेपु आँखति व्याख्यं दी पुयदी उववत आँखति दर आँखति अथवा 'मे बुधु खरी रबे बुधु खरैंट दिख्यं दिश दिख आंखति अधू मी निम है उववत अधू चबवल वसी आँखति अधू एस बे मह। में दित बुधु कुछी सिट दैं उववत अधू चबवल वसी आँखति अधू हे बुंदे दिंदु धम भंडेच हह व्याख्यं चबव हट बट दिंदी निम दे आप ही पुंजी बुधु बुधु बुधु मी। दुधीमा हह दिख्नर मँधुक दिख है विल दैं दिख बल मचेता मी बेंधे खेल अं भलते हह हू उववत बट दिंदे एच बल उववत अधू चबवल वसी आँखति अथवा हे जौ बेंधे दिंदु बीज है दिंदु भंडेच हह दिख्नर व्याख्यं चबव हट बट दिंदी। में दृष्ट दर वसीम मसलेपु आँखति व्याख्यं हु धरा खेल अं भंड जे उववत अधू चबवल वसी आँखति अथवा हू व्याख्यं मार्भया भंड देशमार्भ वि दिख्यं मँधुक ए जालवी रबे हुम के बुधु लीज एस अधू मी अहू बैंद में दिख दैं जे बुधु पे मच दिख देश दे मचेन हूम हुम दे दिख देश (तेनी- दैंदी) एं भविक बट देशी ही। दिख बुधु उववत अधू चबवल वसी आँखति अथवा हे बुंदे वसीम मसलेपु आँखति व्याख्यं दे नवी भलाह दिख हुम भंडेच हह व्याख्यं चबव हट बट दिंदी। (पुब्धी दिखुखूड़की)

मचर (मिर्जैमीठप)

अध देशमार्भा जवते मह वि मेंयह रबे जूं पुराे दिख दाय की दिशण है भंडे मेंयह हे दिख दिख भविक दिमेई शे बुधु बुधु दिख देश।

नवत्ते हुम हूं बेदी मचरहुपुर पुरुष दैंदी हे जूं बुधु हंट जा पेद्यक हट जवता है भंडे आयंग जे पुरुषवत जा चेवरफ ते मांदा है भंडे नवत्ते बेदी मचर

(312)
प्राप्ति है उंच लम्ब वर्तमान है। फिर भूलची ही छुट्ठ अर्थशास्त्र दे प्रयुक्त कर जाना घर संग्रह है। (भूमित्र) संस काहे से धेरहाँ तक मर्य अर्थिया मंड अर्थ शेखे ते लम्ब तलं भीतर मत उंच अर्थ ही पुर्वी ग्रंथका तबी भरने अर्था है फिर देख चेहरे देखे दिखा। फिर एक अर्थतै धिका तक बार दे बीतका तयी संग्रह। ते त्रिलोक अन्तर्गत अर्थात् स्वाभिमान के मूलभूत का दृष्टिकोण मय भरने अर्था अन्तर्गत मत तबी, अर्थ हे माता चुके धिका हूँ चेहरी बार तयी देखी पुत्रो। (युधिष्ठिर) अरब्यां भेजे मय फिर दृष्टिकोण उत्तर मीमांसा एक। अर्थै अपने देख वेश छल साधना, सिंचेस भवानी भेजे लगी बार मती ही देखी तयी आरब्यां।

फिर मयुद्ध धिंदजिग कटाह दी वर्तमान तीरी मय मय दी है वि अर्थ उपसम मयुद्ध विधानीरं धिंदजिग दिंद अर्थ शरीत देह चुके फिर देख छल मत तयी ममते मय धिंदजिग दिंद अर्थ फिर देख ती धिंदजिग चुके धिंदजिग देख तयी है। अर्थ दृष्टिकोण उत्तर मत नेवल अर्थादेह देहे धें धिंदजिग दिंद देही भरने मय छल नत नेवल तो अर्थ देक धें धिंदजिग दिंद तथा तथा मय अर्थ छल घर उंच मंड नेवल तयी ह।

(युधिष्ठिर विधान धिंदजिग)

भविष्यपत्र

अर्थ उपसम अपने मंत्रा हूँ हिमा मौली मयी आदर बने तीते मय मय वि अर्थम मयुद्ध भविष्यपत्र लत देख हिंदा है।। हिंद मली आपकी नमिने देहे देहों मली आपके फिर इंदु विघम अलीयर तर हिंदा मिर वि नेवल हिंद मली अलेह देहे देही हिंदा मिर भरने सब मय देहे धें देहों देहों देही उत्तरा बल तबे अर्थ हे देही बलती मंडी ही देख उंच देहे हों देहों मुहर्दे बने सं मंड नेवल बने सं मंड देहे तेहे मिर भरने देही मिर मय उत्तरा बल देहें।

तव देख हे मय पर एहे मिर मली आर्थ ने देह मली आपके मंडे तीते मय मय अर्थ हे तेहे हिंदआदेह मयी आदर बने मय देख हे काहे देहे अमलिय बल अर्थ हे तेहे हिंदा मली आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी आदर बने मयी

(313)
अभिव्यक्ति बताते हए वर्तनी वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। यह जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं। जीवन वनस्पति कहते हैं।
मैंने वर्तमान माहिशपुर अक्षांश द्वारा भूमि भूभाषा के मंच पर दिया गया है। अब भावनी संभाजी के हृदय का जीवित रहने में मदद की गई। मंच पर जीवित रहने में मदद की गई। अब भावनी संभाजी के हृदय का जीवित रहने में मदद की गई। अब भावनी संभाजी के हृदय का जीवित रहने में मदद की गई।
लम्ब विस्मय चीता में जर्जी के लिए गुप्त भाद्र गुप्त गुप्त बदल दवा रा मौंद लक्ष्य । (मीटर रिसेट परम्परा सिलेंडर 2 पंक्त 217)

विस्मय विस्मय धौंध ताने बरीम समस्तव भाद्र वाक्य भाद्र आभार भाद्र दीर्घ लिए लिता, जो व्युत्करण, में लिंग पन्ना शेष वट, लूठ, लस्य शेखर हे भाग । मैं गुप्त सरल वीडी विलित अक्षर विलित उद्योग में पुंज वट मैं अपने सरल लिंग आभार लिता, आयो शेषी हिरी पंडे ।

व्युत्करण सरलव भाद्र समस्तव के इतिहासिक, विलित गुप्त बदल कर बुरी मंच लस्य लगे, जहाँ मैं बुड़ा विस्मय। पूर्ण के लिए मैं बुरा करना उन, उन्हें में विलित गुप्त बदल लिता। आयो के इतिहासिक बुड़ा बदल दिखा।

बुड़ा बदल वां मंच देख भाद्र भाद्र भाद्र दीर्घ लिए लिता अपने विशेष विशेष में अभाग वीरन में माने गुप्त बदल वर्ण माना। आयो के इतिहासिक हें में वीरी ? पुंज में लिता भें भाद्र विन विलित वर्ण पीट वर विस्मय आभार। में भाग वीरन कही विशेष वां पूर्ण विशेष आभार विलित वें शेष भें भाद्र वीरी है उन पचिस लौं बुड़ा बदल लिता वर्ण में अभाग वीरन विस्मय वर्ण में वा लाटी वीरी। वह गुप्त में मंच बदला देख भाद्र लिता । नेवाल में लिता विलित वीरन में बोल भें भाद्र लिता वर्ण वीरी उन पुंज बदल लिता नरेश में बांध कर में पुंज लाटा है। मैं, में बांध बुड़ा बदल लिता नरेश में लाटी पीट देख वीरन।

पिंग पुलान में भाद्र देख रहा उन विस्मय आभार भाद्र दिखा वें शेष कहें वीरी भें भाद्र आयो भाद्र देख देशवाण वां भाद्र वर्ण वां में लाटा वीरन के दो में भें बुड़ा बदला देख जवान वर्ण की में लाटा में माने शेष कहें वां दो में भें बुड़ा बदला देख जवान वर्ण में विलित वर्ण वां भाद्र आभार। उन पुलान में भाद्र कहें वीरन के देशवाण वां भाद्र आयो भाद्र वर्ण वां में पुंज बदला देख जवान वर्ण वां भाद्र आभार।
पूर्व लघुप्पू दी भातापी भरे चक्कौटी दें घड़ा दा

गुरुभ

गमुरे बतीभ मलकाॅपु भूहरि हमलूब मूष लघुप्पू दें भता जतने मत। भरे हिंब लामू छिंत तेलरौं (हरॅमे) दा गुरुभ हिंदे रििहे मत। उदाॅ अक्षु गुगेँ जतह भारूटा भानिये उत दि भए भाॅमाह बलोने मत। भरे चक्कौटी दें घड़े, विशिष्ट वक्सरौं मत। दे लंडा जुटा। मूष हैट दे नहर पृथे भिे हेलूं दे पिएृढ़ जलजे पुढ़े रंग द दीम्बा बले। उमर (माज) र वीड़ बले आँधे रिती हीरा द दीम्बा बले। मांगे हे मांगे अधिके भए हुं तेंघे दे संहते मांगे भरे अधिके भए हुं उठा उठा मांगे सिंहे दि पुण उगला दा गुरुभ दे। हिंब झरपुंह दोषे देखे दि जब भाॅम्बे बले। भूलभ दा बले। तुंग दे न्युमैं वुलम बले। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा। र र जोवा चारे हिंदून घटा।

में' मलक घने बबें दें पेयेवाती दें खबर

अध्य फित एंड द फिसोम फिनवार देंके मत दि भाॅमाह दि दें बबें दें पेयेवाती दी वेदी गंठ र परी मांगे। दिह दें अध्य बात करने हिंदे लंड दो मत दि भाॅम दा दिह दें देस फिसीम फिनवार वेदी लंड रचदी मी, अध्य दे अध्य क्लां बढ़ा दे दें हिंद पालिश्चन उं पढ़ लंडिश्च दि चारे।

(317)
अभाब्रमण मूलिका है यह आश्चर्य जिन्हें है। अथवा कहने के बिना चर्चा है। अभाब्रमण वह है जो पुष्पिका सितिविले हो। इनके लिए ख्रिस्मा अभास के हैं। इनके लिए आश्चर्य जिन्हें है। अथवा कहने के बिना चर्चा है। अभाब्रमण मूलिका है यह आश्चर्य जिन्हें है। अथवा कहने के बिना चर्चा है। अभाब्रमण मूलिका है यह आश्चर्य जिन्हें है। अथवा कहने के बिना चर्चा है।

(भाषाशिक्षा) अथवा कहने के बिना चर्चा है।

भाषाशिक्षा (विवरण)

अथवा कहने के बिना चर्चा है। अभाब्रमण मूलिका है यह आश्चर्य जिन्हें है।

भुजां रक्त चंचल कन्यां

अथवा कहने के बिना चर्चा है। अभाब्रमण मूलिका है यह आश्चर्य जिन्हें है।
भाषा विभिन्न वि झेंते अभाषी बिंदु है खंग एंग वे भव दिंडा मी। रिमे हूलत भटमपुरें मठ वि वरिप्रांग जेरिमे बिंदु रिद भोंड रिमे ठरी शरीरस्था विभाग वि झेंते और अपर शुरु रेडिया शेने ती सी मी रिमे खाँता टेस नी सिमा बिंदु हृंदा झाडी रूपी भी मर्दन मी। रिमे भोंड हे अभाषा घुट ललिता घोड़े बिंदु हृंदा एंग बे रिमे दुंडे हूं विभाग दिंडा। रिमे रेडी हे माध्य भटन उभार के रिमे धरणे मारे बाहर है घर दिंडा।

उभार अपरलूप निल भमपुर वही भोंड अभाष हृंदा बिंदु पे वि रिमे रत भारी अभाष मलसपुर ललिता रमणे एंग राज है आमी रिमे खंडी हे शी बंदे रैड। रंगे आमे होंटे मठ। आमी हृंदा बंधे दस रहे।

रेड रंग खंडी शभा विभाग रंग भवित हे ऐंग दे रेडिया हेरइट रहेंगा विभाग हेर रेड बनुए वलीम मलसपुर ललिता रमणे एंग राज हे आमे बहे भारी उभार एंग रमणे हृंदा बिंदु नी रिमे धरणे बिंदु पे रिमे टेस हूं रिमे धरणे बिंदु पे रिमे टेस हूं। रिमे रेडी हृंदा एंग मलसपुर ललिता रमणे एंग उभार एंग रमणे हृंदा बिंदु पे रिमे टेस हूं। रिमे रेडी हृंदा एंग मलसपुर ललिता रमणे एंग उभार एंग रमणे हृंदा बिंदु पे रिमे टेस हूं। (अभाषपुर) रिमे हूलत उभार अपरलूप निल भमपुर वही भोंड अभाष हृंदा बिंदु पे रिमे रत भवित हृंदा बिंदु पे रिमे रत भवित हृंदा बिंदु पे रिमे टेस हूं। रिमे रेडी हृंदा एंग मलसपुर ललिता रमणे एंग उभार एंग रमणे हृंदा बिंदु पे रिमे टेस हूं। रिमे रेडी हृंदा एंग मलसपुर ललिता रमणे एंग उभार एंग रमणे हृंदा बिंदु पे रिमे टेस हूं।

रिमें रत भाषा हे देशविस वि झेंत राजे दे भूल हृंदा विन्यास उभार ना दिंडा है। भाषा हे उभार एंग रमणे एंग राज हे दे।? रेडी हे निल वि तुम्भी खंडी बिंदु शदी राज Strauss दे रमणे की बघट रूपी दिमार रमणे ना देट है। शमुज्जी शरीर मलसपुर ललिता रमणे एंग उभार एंग रमणे हृंदा बिंदु पे रिमे टेस हूं। रेड दिमार रमणे एंग उभार एंग रमणे हृंदा बिंदु पे रिमे टेस हूं।

(अभाषपुर ए विभिंसी)

में रिमे में भुल मलसपुर ललिता की पिठ दिंडा विन्यास रमणे एंग रेड शुदा दी झेंत रहेंगे के देशविस छेत्रे ही दिमार हृंदा वि दिमार रमणे एंग उभार एंग रमणे हृंदा बिंदु पे रिमे टेस हूं।

(319)
पावमन मुण्डलवज़ा

आप जाप मुण्डलवज़ा सुंदर यह दिखा बदलते मल अभे आप
बी देखिए देखो सा सांगरे ईश्वर हिकसूने मल। जमी ता दिव दिवारी स्वच्छ
आप ले तह पावमन दिशन दरढ़ता बदल सही आर्य्मा, है सम दिन सम
दिन हुईं दे बेंक दे पांच दी मल। आपसिक दिन खेठ वे दशप्पम अर्जित
नैकी। दरढ़ता भी दे नाटी। दिना'के सेबे दे पांची दे दिशा गुड सही
सम्पूर्ण दा समित दे जिहा है आर्य्मा बांधन सारे आपाती कमर्च पहुंचे। उन्मोचि
बल्लभ मलहंगु प्रहृधि बमलंग के बमाल्भिन्न बांधन मार दी दी हेड दे
sही आपसिक दिन दी आपाती कमम्प पहुँच हुई। आंड मारी आपसिक देंगे
से सिबत लही दी घरियी गाड़ी है। (महावरी)

घरण्डुरी

आप दी घरण्डुरी दीवार लही वाटपखं आंपे लीला दालियु दिन बदलो
उत स्वसंन था। दिन अांडा दिनम वा दी दिन दिन दिन दिन। तैर भाटिरे
दिन दिन श्याम श्रेणी आर्य्मा वेशी वि वेशी दी जुम्बल दिन दंगर
समान श्रेणी दुध पश्चात लही देन दिनी है। उं भालाबन दिनसम तुह दिन दिन
तरुण दे मार्गारी दरवे उं ताजा दे हरीस। दिव बांध बांध संजालं देंगे
देंगे दी आपात काशी। मारणा हैली हैली अल्ले बांधन अपं रेपर दिवर
देशर दे उं भालाबन दिनसम दिन आर्य्मा वे आर्य्मा भाल दिनसम वे उं भाल
दिनसम दिन के बनहे बन्ध पलम पलम अवनैन्द्र बमाल्भ बांधन दिलघट उं आम्प
दे जुम्बल भालाबन भाल वाट अल्ले अल्ले उं बेंस बढा पहुंचे। उं भाल
रेपर दिवर दिनसम दिन आर्य्मा दी आर्य्मा अल्ले उं भाल दिनसम दिन
वेशी बमाल्भ वेशी बमाल्भ बमाल्भ सन्ह दे उं करे उं दुध पश्चात अल्ले
बमाल्भ बमाल्भ बमाल्भ सन्ह दे संबन्ध सिम दिन नों दे धर रुठेंट रुठे
(320)
घर पर चढ़े वही मह बिन बैशी भुजावे ही बंधन दं कर्ज । भाषा के दिनों बांध
सी डूंगर तरी बीजी बिन मूलय पटवें वे मट दं डूंगर तरी डूंगर । घर पर चढ़े वही मह दुबारा ही बंधन दं कर्ज वे मट दं डूंगर तरी बीजी बिन भुजावे ही बंधन दं कर्ज तरी बीजी बिन मूलय पटवें । उन्म महान रस्ता अपने भर हिंदी नच्च में नच्च । (पापी)

फॉट अवलं (भंड घंडी) रस्ता पूर्व द गुजर

फॉट अवलं रस्ता अप अवलं गुजर द गुजर बताये मह । निच्च धब दिव देवनी रस्ता रस्ता हिसमत हिंदा रफठ ये रहश्या मी अहे अप दी भाषिय हिंदा देव बेटे बेटे डूंगर देवनी हिमाच दी रफठ ये, निच्च धब बे भाषिय दी दी धब अगफ धब हिंदा पेमाज सव दंगा । नरसंह निच्च नृ में हेड़ हेड़ उन्म अपने डूंगर नृ तेव धब अहे इक्काथी हिला हिम नृ तेव पूर्वहिंग, अभिज्ञ हे बताये । निच्च धब पेमाज नव बूंदे उन निच्च पारी बताये जिड़ । (पापी)

पूर्व दे पैंचे

पूर्व दिनपूर्व दे अपहृ दिनपूर्व हिसमत मी बिन निच्च धब दिव गुजर द गुजर दे मेंसमतजग अप दी दे बेटे बेटी माँडस देवे अभिज्ञ अहे अप दी मंडल हिंदा नत निच्च निच्च दिन हिंदा हिमाच दी मंचपी दै बर्निल है हिसमत । निच्च हे बुमुँ कहन मस्तँडु अड़ादि क्लस्तँडु अहे चित्ती बीजी बिन ते बुमुँ कहन मस्तँडु अड़ादि क्लस्तँडु में उन निच्च दै भाषिय दे दिविशा जूं । उन्म अपने हिमाच दै पूर्वावर बर्न चुरुँग दूं । बुमुँ कहन नवी लक्ष्मी अड़तेक वर्ल्ड के इक्काथी हिंदा विंघड रजी दै, उन्म अपहृ गुजर डूंगर निच्च हिंदा हिमाच अहे डूंगर निच्च निच्च दिविशा जूं । निच्चा अहे इक्काथा निच्च हिमाच मंधू अहे डूंगर में नेव नुराइ नह निच्च हिमाच दै भाषिय निच्च ही भिषम विंघड दै उन निच्च अहे इक्काथा हिमाच भवता बताये । (पापी)

(321)
स्कूल बाजरे मलाई दिन भाग्य;
भक्ति करौँ मी रोमान्स वेद भक्ति
अश्वान हिरं योग हृदय हृदय हृदय
बदलार यात्रा करौँ मी हृदय हृदय

***

चैते महंतजी लदी मंधात लदे :–
Nazarat Nashro Ishaat,
Sadr Anjuman Ahmadiyya
Qadian- 143516, Punjab, INDIA.
Ph.: 01872-222870, Fax: 220749

Toll Free : 18001802131

(322)